₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जून 2015

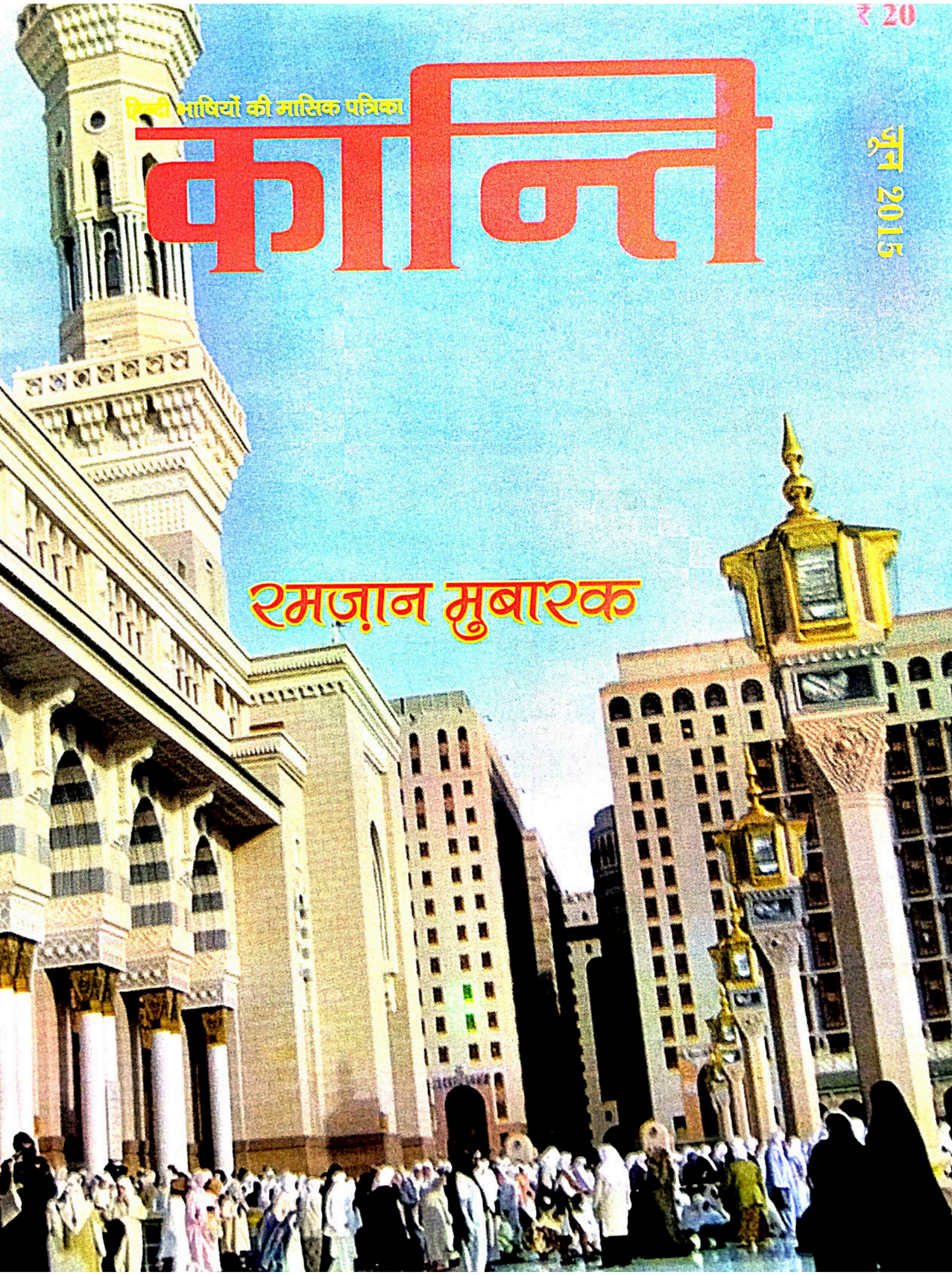

रमज़ान मुबारक

مولانا سیّد ابوالاعلیٰ مودودیؒ کی شہرہ آفاق تفسیر

تفہیم القرآن حصہ دوم کا ہندی اڈیشن

तफ़हीमुल-क़ुरआन [2]

अल-आराफ़ - बनी-इसराईल

हिन्दी तर्जमा : नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

ख़ुदा के बन्दों को ख़ुदा और उसकी किताब कुरआन मजीद से जोड़नेवाली, नए और असरदार अन्दाज़ में, हर आम और ख़ास तबके के बीच समान रूप से लोकप्रिय और पसन्दीदा उर्दू तफ़्सीर तफहीमुल- कुरआन हिस्सा-2 का हिन्दी ज़बान में आसान और दिल को छू लेनेवाला तर्जमा।

पृष्ठ : 768 हदिया : 500.00

MMI PUBLISHERS
D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025 • Phone: 26981652, 26984347, Fax: 26987858 • Fax: 26947858 • E-mail:mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 24 अंक 12 जून 2015

जब तुममें से किसी का रोज़ा हो, तो न तो अश्लील बात ज़ुबान पर लाये और न शोर मचाये। और अगर कोई उसे गाली दे या लड़े तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं।

–हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

अम्न की शबनम

अश्क[1] लेते ही नहीं आंखों में आ जाने का नाम
ईद है क्योंकि ख़ुशी के जाम छलकाने का नाम

जोशे-मस्ती[2] के भी आलम में है लाज़िम[3] एहतियात
ये नहीं तहज़ीब के हद से निकल जाने का नाम

ऐसा हंगामा कि दुनिया हाथ कानों पर धरे
क्या यही है रंग पर महफ़िल के आ जाने का नाम

ये अगर वह्शत[4] से दहशत[5] पर उतर आये तो फिर
शह्र में बदनाम हो जाएगा दीवाने का नाम

भाईचारे का, मुहब्बत का है इक त्योहार ईद
आदमी को आदमी के पास पहुंचाने का नाम

जिनकी जानों ने सहीं पाबन्दियां रमज़ान की
ईद है उन रोज़ेदारों[6] पर बहार[7] आने का नाम

कोई ऊंचा है न नीचा सब बराबर के शरीक[8]
है नमाज़े-ईद[9] भी ये बात समझाने का नाम

हम ख़ुदा से रोज़ करते हैं वफ़ादारी का अह्द[10]
ये नमाज़ें क्या ? वचन देने, क़सम खाने का नाम

अम्न[11] की शबनम[12] से ही खिलते हैं त्योहारों के फूल
अब न ले कोई चमन[13] में आग बरसाने का नाम

हम अगर तड़पेंगे तुम भी बे-मज़ा हो जाओगे
कौन लेगा मातमी माहौल में गाने का नाम

ईद का ये फ़ैज़[14] है या फिर सियासत[15] का करम[16]
"अपना" रक्खा जा रहा है आज "बेगाने" का नाम

ईद के बारे में सुन लें आबिदो-ज़ाहिद[17] 'हफ़ीज़'
ये नहीं है पारसाई[18] पर भी इतराने का नाम

■ **हफ़ीज़ मेरठी**

1. आंसू 2. मस्ती के जोश में 3. अनिवार्य, ज़रूरी 4. दीवानापन 5. आतंक 6. रोज़ा रखने वालों 7. वसंत 8. साझीदार 9. ईद की नमाज़ 10. प्रतिज्ञा 11. शांति 12. ओस 13. बाग़, वाटिका, फुलवारी 14. देन 15. राजनीति 16. मेहरबानी, कृपा 17. इबादतगुज़ार और परहेज़गार, तपस्वी और संयमी 18. संयम, परहेज़गारी।



कहां क्या है ?

अम्न की शबनम (कविता)	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
रमज़ान एवं आत्मिक विकास (संपादकीय)		7
विकास में बाधक है जातिवाद (आपके पत्र)		9
एकेश्वरवाद की नैतिक धारणा (आस्था)	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	13
मरणोपरांत जीवन : एक विवेचन	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	19
शान्ति-सलामती का महीना रमज़ान (विशेष आयाजन)	–सपादन प्रभाग	26-27
रमज़ान के रोज़े की मर्यादाएं (विशष आयाजन)	–अबू हामिद मुहम्मद ग़ज़ाली	29
रमज़ान की महत्ता (विशेष आयोजन)	–अबरार अहमद	31
बरी होते क़ातिल, सिसकता लोकतंत्र ! (अभिमत)	–विभूति नारायण राय	35
आदमी पर निशाना (कविता)	–डॉ॰ अमर सिंह	38
भक्ति बनाम व्यापार	–चंपा नुनिया	39
अनुचित बयानबाज़ियों से आहत मुसलमान (फेसबुक उवाच)	मुहम्मद अहमद	41
डर, शायद (कविताएं)	–विष्णु सक्सेना	42
अनुवांशिक रोग है थैलेसीमिया (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ॰ अनुराग कुमार श्रीवास्तव	43
मक्कार, पोते की ज़रूरत, ऊंचाई (लघुकथाएं)		45
अब्दुर्रशीद अहमदी (कहानी)	–इक़बाल अंसारी	47
वह प्रतिमान बनाएगा (कविता)	–डॉ॰ मेहता नागेन्द्र सिंह	49
बालवीथी		50



(74) ये लोग अल्लाह की क़सम खा-खाकर कहते हैं कि हमने वह बात नहीं कही, हालांकि उन्होंने अवश्य ही वह कुफ़्र (अधर्म) की बात कही है।[83] उन्होंने इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र किया और उन्होंने वह कुछ करने का इरादा किया है जिसे कर न सके।[84] यह उनका सारा क्रोध इसी बात पर है ना कि अल्लाह और उसके रसूल ने अपनी मेहरबानी से उनको धनी कर दिया है।[85] अब अगर ये अपने इस रवैये से बाज़ आ जाएं तो इन्हीं के लिए बेहतर है, और अगर ये बाज़ न आए तो अल्लाह उनको बड़ी दर्दनाक सज़ा देगा। दुनिया में भी और आख़िरत में भी, और धरती में कोई नहीं जो उनका समर्थक और सहायक हो।

–क़ुरआन, 9 : 74

83. वह क्या बात थी जिसकी ओर यहां संकेत किया गया है, उसके बारे में कोई निश्चित जानकारी हम तक नहीं पहुंची है। अलबत्ता रिवायतों में बहुत-सी ऐसी कुफ़्र भरी बातों का उल्लेख हुआ है जो उस समय मुनाफ़िक़ों ने की थीं, जैसे एक मुनाफ़िक़ के बारे में रिवायत किया जाता है कि उसने अपने नातेदारों में से एक मुसलमान नवजवान के साथ बातें करते हुए कहा कि "अगर सच में वह सब कुछ सत्य है जो यह व्यक्ति (अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रस्तुत करता है तो हम सब गधों से भी बुरे हैं।" एक और रिवायत में है कि तबूक के सफ़र में एक जगह नबी (सल्ल०) की ऊंटनी गुम हो गयी। मुसलमान उसको खोजते फिर रहे थे। इस पर मुनाफ़िक़ों के एक गिरोह ने अपनी सभा में बैठकर ख़ूब मज़ाक़ उड़ाया और आपस में कहा कि "ये हज़रत आसमान की ख़बरें तो ख़ूब सुनाते हैं, पर उनको अपनी ऊंटनी की कुछ ख़बर नहीं कि वह इस समय कहां है।"

84. यह संकेत है उन षड्यंत्रों की ओर जो मुनाफ़िक़ों ने तबूक की लड़ाई के समय में रचे थे। इनमें से पहले षड्यंत्र की घटना का वर्णन हदीस के आलिमों ने इस तरह किया है कि तबूक से वापसी पर जब मुसलमानों की सेना एक ऐसे स्थान के निकट पहुंची जहां से पहाड़ों के बीच से रास्ता गुज़रता था, तो कुछ मुनाफ़िक़ों ने आपस में तय किया कि रात के समय किसी घाटी में से गुज़रते हुए नबी (सल्ल०) को खड्ड में फेंक देंगे। प्यारे नबी (सल्ल०) को इसका पता चल गया। आपने तमाम सेना वालों को आदेश दिया कि घाटी के रास्ते से निकल जाएं और आप स्वयं केवल अम्मार बिन यासिर (रज़ि०) और हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि०) को लेकर घाटी के अन्दर से होकर चले। रास्ते में यकायक मालूम हुआ कि दस-बारह मुनाफ़िक़ ढाठे बांधे हुए पीछे-पीछे आ रहे हैं। यह देखकर हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) उनकी ओर लपके, ताकि उनके ऊंटों को मार-मारकर उनके मुंह फेर दें। मगर वे दूर ही से हज़रत हुज़ैफ़ा को आते देखकर डर गये और इस डर से कि कहीं हम पहचान न लिए जाएं, तुरन्त भाग निकले।

दूसरा षड्यंत्र, जिसका इस संबंध में उल्लेख हुआ है, यह है कि मुनाफ़िक़ों को रूमियों के मुक़ाबले से नबी (सल्ल०) और आपके वफ़ादार साथियों के सकुशल बचकर वापस आ जाने की आशा न थी, इसलिए उन्होंने आपस में तय कर लिया था कि ज्यों ही उधर कोई दुर्घटना घटित हो,

(शेष पृष्ठ 11 पर)

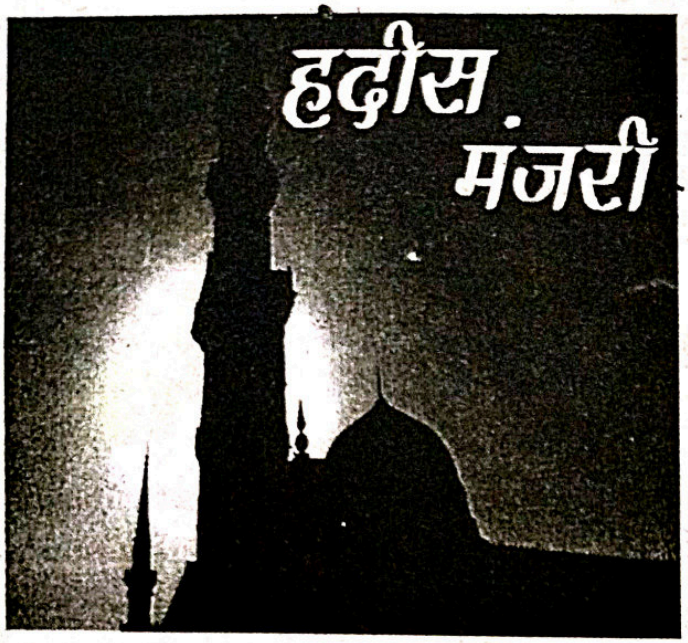

स्मरण की मजलिसों का माहात्म्य

इन मजलिसों से जुड़ा रहना वांछनीय है और अकारण उनसे विलग होने का निषेध

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''निश्चय ही अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे भी हैं जो रास्तों में चलते-फिरते रहते हैं और ज़िक्र करने वालों को तलाश करते हैं और जब वे ऐसे लोगों को पा लेते हैं जो गौरव के स्वामी प्रतापवान अल्लाह का ज़िक्र कर रहे होते हैं, तो वे पुकारते हैं : अपने उद्देश्य की ओर आओ । तो वे उन्हें अपने पंख से निकटवर्ती आकाश तक ढक लेते हैं । फिर उनका रब उनसे पूछता है– हालांकि वह सब कुछ जानता है–मेरे बन्दे क्या कहते हैं ?'' आपने कहा : ''फ़रिश्ते कहते हैं : वे तेरा महिमागान करते हैं और तेरी बड़ाई करते हैं और तेरी प्रतिष्ठा का वर्णन करते हैं । वह (अल्लाह) कहता है : क्या उन्होंने मुझे देखा है ? वे कहते हैं : नहीं, अल्लाह की क़सम, उन्होंने तुझे नहीं देखा । वह कहता है : यदि वे मुझे देख लें, तो उनकी क्या हालत हो ?'' आपने कहा : ''फ़रिश्ते कहते हैं : यदि वे तुझे देख लेते, तो और भी बढ़-चढ़कर तेरी इबादत करते, और भी बढ़-चढ़कर तेरी प्रतिष्ठा का वर्णन करते, और भी अधिक तेरा महिमागान करते । वह (अल्लाह) कहता है : वे मांगते क्या हैं ?'' आपने कहा : ''फ़रिश्ते कहते हैं : वे तुझसे जन्नत मांगते हैं ।'' आपने कहा : ''वह कहता है : क्या उन्होंने जन्नत देखी है ?'' आपने कहा : ''वे (फ़रिश्ते) कहते हैं : नहीं अल्लाह की क़सम, ऐ हमारे रब, उन्होंने उसे नहीं देखा ।'' आपने कहा : ''अल्लाह कहता है : यदि वे उसे देख लें, तो उनकी क्या हालत हो ?'' आपने कहा : ''वे कहते हैं : यदि वे जन्नत को देख लें, तो वे उसके और ज़्यादा लालायित हो उठें, और उसके लिए उनकी चाह और बढ़ जाए और उसमें उनकी उत्कंठा और बढ़ जाए । अल्लाह ने कहा : वे किस चीज़ से बचने की पनाह मांगते थे ? कहा : वे दोज़ख़ से बचने की पनाह मांगते हैं ।'' आपने कहा : ''अल्लाह कहता है : क्या उन्होंने दोज़ख़ को देखा है ? कहा : वे कहते हैं : नहीं, अल्लाह की क़सम उन्होंने उसे नहीं देखा । अल्लाह कहता है : यदि वे उसे देख लें, तो उनकी क्या हालत हो ?'' आपने कहा : ''वे कहते हैं : यदि वे उसे देख लें, तो और अधिक उससे दूर भागें, और उससे और अधिक डरने लगें ।'' आपने कहा : ''अल्लाह कहता है : मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैंने उन्हें क्षमा कर दिया । आपने कहा : ''फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता कहता है : उनमें फलां व्यक्ति भी है जो उनमें से नहीं है वह तो किसी ज़रूरत से वहां आया था । अल्लाह कहता है : वे ऐसी मजलिस वाले हैं जिनकी मजलिस में बैठने वाला भी बदनसीब नहीं रह सकता है ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

रमज़ान एवं आत्मिक विकास

संसार की समस्त धार्मिक एवं दर्शनप्रधान व्यवस्थाओं से इस्लामी दृष्टिकोण भिन्न है । वह कहता है कि मानवता को ईश्वर ने पृथ्वी पर अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है । कुछ अधिकार, कर्तव्य और उत्तरदायित्व उसे सौंपे हैं और उनके पालन के लिए एक श्रेष्ठ और उपयोगी प्रकार का शरीर उसे दिया है कि वह अपने अधिकारों के उपभोग और अपने से संबद्ध सेवा कार्यों के करने में उसका उपयोग करे । प्रतिनिधि होने के रूप में मनुष्य अपने संपूर्ण कार्यकलाप के विषय में ईश्वर के सम्मुख उत्तरदायी है । उसका कर्तव्य यह है कि संसार में जो अधिकार और साधन उसे दिये गये हैं, ईश्वरीय इच्छा के अनुसार् उनका उपयोग करे । जो योग्यताएं और शक्तियां उसे दी गयी हैं उनका अधिक से अधिक उपयोग ईश्वर की प्रसन्नता के लिए करे । दूसरे मनुष्यों के साथ उसे जिन विभिन्न संबंधों से संबद्ध किया गया है, उनमें वह प्रकार चुने जो ईश्वर को प्रिय है और तात्पर्य यह है कि अपनी समस्त चेष्टाओं और प्रयत्नों के लिए उस मार्ग का अवलम्ब करे जिससे सांसारिक व्यवस्था उतनी सुन्दर हो, जितनी कि ईश्वर देखना चाहता है । इस सेवा कार्य को मनुष्य जितनी अधिक सावधानी, उत्तरदायित्व, कर्तव्यपरायणता, अनुवर्तन और आदेशपालन की भावना के साथ करेगा वह ईश्वर से उतना ही अधिक समीप होगा और ईश्वर का सामीप्य ही इस्लाम की दृष्टि में आत्मिक विकास है । इसके विपरीत वह जितना आलसी, कामचोर और कर्तव्य विमुख होगा या जितना उद्दंड, विद्रोही, आदेश का उल्लंघन करने वाला होगा, उतना ही ईश्वर से वह दूर रहेगा और ईश्वर से दूरी ही का नाम आत्मिक अवनति है । इस्लामी दृष्टिकोण से धर्मपरायण गृहस्थ और साधारण गृहस्थ दोनों की कार्यपरिधि एक ही है । एक ही कार्य क्षेत्र है, जहां दोनों कार्य करेंगे । घर की चारदीवारी से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के चौराहे तक जीवन के जितने भी विषय हैं, उनका सब उत्तरदायित्व धर्मपरायण व्यक्ति भी गृहस्थ के समान, अपितु उससे कुछ बढ़कर ही लेगा । हां, जो वस्तु उनके मार्ग एक-दूसरे से पृथक कर देगी वह ईश्वर के साथ उनके संबंध का प्रकार है । धर्मपरायण व्यक्ति जो कुछ करेगा, इस दृष्टि से करेगा कि वह ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी है, उसका प्रयोजन ईश्वर को प्रसन्न करना है और उस विधान के अनुसार करेगा, जो ईश्वर ने उसके लिए निश्चित कर दिया है, इसके विपरीत साधारण गृहस्थ जो कुछ करेगा, उत्तरदायित्वहीन प्रकार से ईश्वर की ओर मुंह मोड़कर और अपने मनमाने ढंग से करेगा ।

यही अन्तर व्यक्ति के संपूर्ण भौतिक जीवन को पूर्णतया आध्यात्मिक जीवन बना देता है और साधारण गृहस्थ के समस्त जीवन को आध्यात्मिकता के प्रकाश से रहित कर देता है । इस्लाम सांसारिक जीवन की मध्यधारा में मनुष्य के आत्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त करता है । इस मार्ग का प्रथम चरण विश्वास है अर्थात मनुष्य के मन एवं मस्तिष्क में इस विचार का बस जाना कि ईश्वर ही उसका स्वामी, शासक और उपास्य है, ईश्वर की प्रसन्नता ही उसके समस्त प्रयत्नों का लक्ष्य है तथा ईश्वरीय आज्ञा ही उसके जीवन के लिए विधि है । यह विचार जितना दृढ़ और अविचल होगा उतनी ही अधिक इस्लामी मनोवृत्ति बनेगी और उतनी ही अधिक निष्ठा और अविचलता के साथ मनुष्य मानवीय उन्नति के मार्ग पर चल सकेगा । इस मार्ग का दूसरी मंज़िल अनुवर्तन है अर्थात मनुष्य का जान-बूझकर अपनी स्वच्छन्दता का परित्याग कर देना और व्यवहारतः उस ईश्वर

के अनुवर्तन का अवलम्बन कर लेना जिसे वह सिद्धांतत: अपना प्रभु मान चुका है । कुरआन की भाषा में इसी अनुवर्तन का नाम 'इस्लाम' है । तीसरी अवस्था तक़वा की है जिसे हम साधारण भाषा में ईशपरायणता और उत्तरदायित्व संबंधी अनुभूति कह सकते हैं । तक़वा यह है कि मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष में यह समझते हुए कार्य करे कि उसे अपने चिंतन, वचन और कर्म का लेखा-जोखा ईश्वर को देना है, वह प्रत्येक वे कार्य न करे जिनका निषेध ईश्वर ने किया है । उस प्रत्येक सेवा के लिए सन्नद्ध हो जाए ईश्वर ने जिसके विषय में आज्ञा दी है । अंतिम और सर्वोच्च स्थान परिष्कृत आचरण का है । परिष्कृत आचरण का अर्थ है कि मानव की इच्छा ईश्वरीय इच्छा के साथ संयुक्त हो जाए । जो कुछ ईश्वर को अभीष्ट है मनुष्य को स्वयं भी वही अभीष्ट हो, जो ईश्वर को अप्रिय है मानव के अपने हृदय को भी वह अप्रिय हो । ईश्वर जिन अवगुणों को अपने संसार में नहीं देखना चाहता, मानव उनसे स्वयं ही न बचे अपितु संसार से उन्हें मिटा देने के लिए अपनी समस्त शक्तियों और साधनों का उपयोग करे और ईश्वर जिन सद्गुणों से संसार को विभूषित देखना चाहता है मानव केवल अपने ही जीवन को उनसे अलंकृत करने पर संतोष न कर ले अपितु अपनी जान लड़ाकर समस्त संसार में उनके प्रचार और स्थापना का प्रयत्न करे । इस स्थान पर पहुंचकर मानव को अपने ईश्वर का अधिकतम सामीप्य प्राप्त होता है और इसीलिए यह मानव की आत्मा के विकास की पराकाष्ठा है । रमज़ान का पवित्र मास आत्मिक विकास का बड़ा अवसर प्रदान करता है, जिसका लाभ सभी रोज़ेदारों को उठाना चाहिए ।

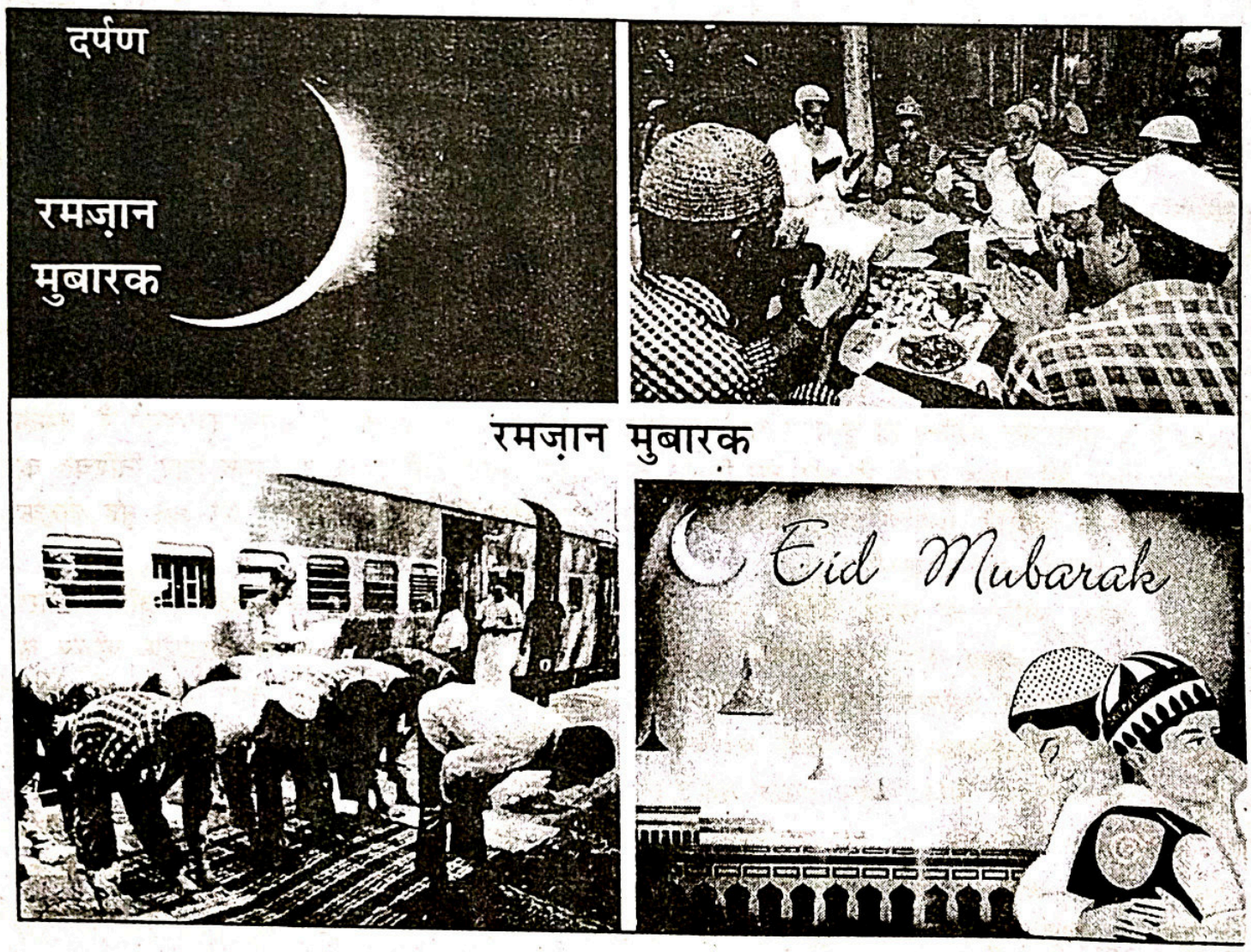

विकास में बाधक है जातिवाद

देश को स्वतंत्र हुए 6 दशक से अधिक व्यतीत हो जाने तथा शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के बावजूद जनसामान्य में अभी तक लोकतांत्रिक चेतना का विकास नहीं हो पाया तथा हम संकीर्ण जातिवादी मानसिकता से ग्रस्त हैं। अपनी जाति-बिरादरी के हित तथा विकास हेतु प्रयास करना बुरी बात नहीं है, मगर जब हमारी जातिवादी सोच राष्ट्रहित, लोकहित तथा समाजहित के मार्ग में रोड़ा साबित होने लगती है तो स्थिति विकट तथा चिंताजनक हो जाती है। दुर्भाग्यवश आज हमारे देश में जातिवाद दूषित, कलुषित तथा संकीर्ण रूप में विद्यमान है तथा यह हमारे राष्ट्रीय सामाजिक विकास में बाधक है।

प्राचीनकाल में स्वदेश में गुण कर्मानुसार जातियों का निर्धारण हुआ करता था। उदाहरणस्वरूप एक पिता के चार पुत्र हैं जिनका स्वभाव-संस्कार, आचार-विचार तथा गुण कर्म अलग-अलग हैं। एक विद्यानुरागी तथा अध्ययनशील है तो वह ब्राह्मण कहलाने लगा। दूसरे में सामाजिक नेतृत्व तथा शासन करने का गुण है तो वह क्षत्रिय हो गया। तीसरे पुत्र की कारोबार में दिलचस्पी है तो वह वैश्य हो गया तथा सेवा भावयुक्त होने के कारण चौथा पुत्र शूद्र की श्रेणी में गिना जाने लगा।

जिसने दो वेदों का अध्ययन किया, वह द्विवेदी हो गया। इसी प्रकार तीन वेदों का ज्ञाता त्रिवेदी (तिवारी तथा चतुर्वेदों में पारंगत व्यक्ति चतुर्वेदी (चौबे) कहलाने लगा। आजकल जातिसूचक शब्द गुणद्योतक नहीं, रूढ़ तथा वंश परंपरागत हो गये हैं। वेदों के अध्ययन-अनुशीलन की बात दरकिनार जितने कभी वेद की शक्ल तक नहीं देखी, वह भी अपने नामांत पर द्विवेदी और चतुर्वेदी सिर्फ़ इसलिए लिखता चला आ रहा है कि उसके पिता व दादा परदादा अपने नाम के साथ इन जातिसूचक शब्दों का प्रयोग सालों से करते आ रहे हैं। हिन्दू समाज में कुछ जातियां व्यावसायिक हैं जैसे नाई, बढ़ई, लोहार, तम्बोली, चूड़िहार, नोनिया, दर्ज़ी, चमार, तेली, धोबी धरिकार, माली, कुंजड़ा वगैरह।

यदि लोहार या चमार का पुत्र पढ़-लिखकर विद्यालय में अध्यापक हो गया तो गुण कर्म के अनुसार वह ब्राह्मण माना जाएगा मगर वह नामांत में विश्वकर्मा जैसे वंश परंपरागत जातिसूचक शब्द का ही प्रयोग करता है। यदि आजकल बेरोज़गारी के युग में जीविकोपार्जन के उद्देश्य से किसी ब्राह्मण पुत्र ने किराना अथवा जनरल स्टोर की दुकान खोल ली तो उसकी गणना गुण कर्म की दृष्टि से बनिया में की जानी चाहिए मगर वह अपने नाम के साथ दूबे, तिवारी, शुक्ल, पाठक, मिश्र या उपाध्याय जैसे ब्राह्मणसूचक शब्दों का प्रयोग करता है।

कुछ जातिसूचक शब्द स्थानसंकेतक होते हैं जैसे कन्नौजिया (कन्नौज) तथा माथुर (मथुरा)। जातियों के निर्धारण की वास्तविक स्थिति को जाने-समझे बिना हम जातिप्रथा से आज तक उसी प्रकार चिपके हुए हैं जिस प्रकार बन्दरिया अपने मृत शिशु के शव को अज्ञानता तथा मोहवश कई रोज़ तक पेट से चिपकाये फिरती है। जातिवाद को समाप्त तथा जाति बंधन को शिथिल करने के बजाय अनेक जातीय ठेकेदार अपनी नेतागीरी चमकाने तथा वर्चस्व वृद्धि के मक़सद से तरह-तरह के जातीय संगठन की स्थापना करने से बाज़ नहीं आ रहे हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक अन्य प्रदेशों की बात तो नहीं जानता। यू०पी० में जौनपुर, ग़ाज़ीपुर, आज़मगढ़, वाराणसी, इलाहाबाद, सोनभद्र, मिर्ज़ापुर तथा संत रविदासनगर (भदोही) जैसे पूर्वांचल के तमाम छोटे-बड़े जनपदों में अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा, वैश्य एकता परिषद, ब्राह्मणसभा, चित्रगुप्त सभा, अखिल भारतीय कायस्थ कल्याण समिति, दलित मंच, मौर्य कुशवाहा मंच तथा चाण्क्य महासभा जैसे तमाम जातीय संगठन मौजूद हैं जिनसे संबंधित जातियों का कितना हित साधन तथा विकास हुआ तथा हो रहा है, यह स्वयं स्पष्ट है। महीने दो महीने में एक बार मीटिंगबाज़ी तथा स्थानीय समाचार पत्रों में समाचार छपवाने के अलावा इन जातिवादी संगठनों के पास अन्य कोई काम शेष नहीं दिखता।

वर्तमान राजनीतिक परिवेश भी इतना विषाक्त तथा खुदगर्जियाना हो गया है कि लोकतांत्रिक तथा समाजवादी मूल्यों की धज्जियां उड़ाकर जातिवाद को आक्सीजन दिया जा रहा है तथा राजनीतिक दल अपना जातीय वोट बैंक बनाये रखने की ग़रज़ से एड़ी-चोटी का सारा ज़ोर लगाने से बाज़ नहीं आते । जातीय आधार पर निर्वाचन क्षेत्र में उम्मीदवार खड़े किये जाते हैं । मंत्रिमंडल का गठन जातीय आधार पर किया जाता है । आवश्यकता तथा औचित्य न रहते हुए भी आर्थिक आधार के स्थान पर नौकरियों में आरक्षण का जातीय आधार अभी तक क़ायम रखा गया है । आम मर्कज़ी पार्लीमानी तथा रियासती अवेम्बलियाना इन्तिख़ाबात में तमाम मतदाता क़ाबिलियत किरदार, अख़्लाक़ तथा लियाक़त के बजाय जातीय आधार पर उम्मीदवारों के पक्ष में मतदान करते हैं भले वह भ्रष्ट तथा श्वेतवसनापराधी हो तथा चुनाव जीत जाने के पश्चात वह लोकतंत्र विरोधी आचरण कर देश का बंटाधार तथा मटियामेट कर डाले ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि दीवानी तथा कलेक्ट्रेट बार एसोसिएशन, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन एवं प्राथमिक, माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय शिक्षक संघ जैसे संगठन तथा सामाजिक संस्थाएं जातिवाद को समाप्त करने तथा जनसाधारण में लोकतांत्रिक चेतना के विकास की दिशा में अग्रसर हों । जातिवाद विकास में बाधक है जिसे समाप्त करने हेतु सशक्त रचनात्मक प्रयास की आवश्यकता है ।

विद्या प्रकाश
अचला घाट मार्ग, सिपाह,
जौनपुर (उ०प्र०)

अच्छे दिनों के आने का ख़्वाब तो अब टूट गया

महंगाई का मंज़र है चारों तरफ़ बाज़ार में ।
क्या लूं ? क्या न लूं ? इस पर पहले विचार कर लूं तो चलूं ।।
रेल का बढ़ गया किराया, बस के किराये में भी है वृद्धि ।
यात्रा पर जाऊं या न जाऊं इसका विचार ज़रा कर लूं तो चलूं ।।
अच्छे दिनों के आने का ख़्वाब तो अब टूट गया ।
बुरे दिनों से लड़ने की तैयारी ज़रा कर लूं तो चलूं ।।
क्या सही है ? क्या ग़लत ? कुछ समझ में नहीं आता ।
किसे दोस्त कहूं ? किसे दुश्मन इसका ज़रा निर्णय कर लूं तो चलूं ।।
सब तरफ़ घोटाले रिश्वत, अनुचित मुनाफ़ाख़ोरी, भ्रष्टाचार की माया ।
लोग कि घर जा रहे हैं ? इसका विचार ज़रा कर लूं तो चलूं ।।
नारी की सुरक्षा का प्रश्न सबसे बड़ी चिंता का विषय है आजकल ।
कौन रक्षक है ? कौन भक्षक ? इसका निर्णय ज़रा पहले कर लूं तो चलूं ।।

डॉ० हीरालाल जायसवाल 'हीरा'
गोंदिया (महाराष्ट्र)

क़लम की ताक़त

आधुनिक युग में क़लम से रिश्ता टूट-सा गया है । हर कोई मोबाइल, कंप्यूटर पर टाइपिंग करना चाहता है । कुछ लिखने का मन करे या किसी को कोई मैसेज भेजना हो । फ़ौरन ही मोबाइल पर हाथ चला जाता है ।

लेकिन जो क़लम में बात है वह मोबाइल, कंप्यूटर से नहीं आ सकती । लिखने से स्मरण शक्ति तेज़ होती है । एकाग्रता बढ़ती है ।

एक ज़माने में राइटिंग सुधारने के लिए स्याही वाले क़लम आते थे । किसी की राइटिंग गन्दी हो, अध्यापक उन्हें स्याही वाले क़लम से लिखने की ही सलाह देते थे । आज स्याही वाला क़लम कहीं खो से गये हैं ।

क़लम की अहमियत उनसे पूछो जो लिखना नहीं जानते, उनके हाथ में क़लम आते ही, वे सबसे पहले अपना नाम लिखने की कोशिश करते हैं । जैसे ख़ुद से ही कह रहे हों । अगर हम भी पढ़े-लिखे होते तो अपना नाम रोशन कर देते या उनसे पूछो जो बहुत पढ़े-लिखे या किसी ऊंचे ओहदे पर होते हैं । कैसे उनके एक साइन से इधर के काम उधर हो जाते हैं । किसी का काम आसान हो जाता है, कोई दुआ देने को मजबूर हो जाता है ।

जब किसी छोटे बच्चे को लिखना सिखाते हैं, तो उन्हें क़लम के रूप में चॉक और पेंसिल दी जाती है । कैसे बच्चा स्लेट या कॉपी पर अपने मन की बात, अपनी कल्पना को उकेरने की कोशिश करता है । वह सिखता है । जब ये

चीज़ें हम से दूर होती जाएंगी तो बच्चा तो अपने मन की कल्पना उकेरने में अक्षम ही रहेगा ।

बुढ़ापे का सहारा भी क़लम है । जब कोई बुज़ुर्ग अपनी सारी ज़िम्मेदारी पूरी करके रिटायर हो जाते हैं, तो ख़ाली वक़्त में अपने अनुभव, अपने सुख-दुख, अपनी कोई भी बात लिख सकते हैं ।

एक क़लम के ज़रिये पूरी दुनिया को बदला जा सकता है । ऊंचे को नीचा व नीचे को ऊंचा बनाया जा सकता है । इस क़लम के ज़रिये किसी को ज़िन्दगी दी जा सकती है, तो किसी की ज़िन्दगी ली भी जा सकती है । किसी को रुलाया तो, किसी को हंसाया भी जा सकता है ।

लिखना ख़ूबसूरत है । हम लिखने से बुरी आदतों से भी बच सकते हैं । दिमाग़ की धार तेज़ करनी हो या ज़िन्दगी को पन्नो पर उतारना हो ।

कहीं से कोई ख़त आया है, जो कि अब पुरानी बात हो चुकी है । लोग उसे बार-बार पढ़ते थे । ये ख़त आंखों को ख़ुशी और ग़म में नम कर देते थे । अब भी पुराने ख़ज़ानों में ये ख़त मौजूद होंगे और उन्हें पढ़कर वैसा ही एहसास होता है ।

लिखना हमें सीख देता है । कभी नहीं रुकने की, चलते रहने की, ज़िन्दगी को लफ़्ज़ों की तरह एक सीध, सफ़ाई की और ज़िन्दगी को मोतियों में पिरोने की जैसे एक लड़ी में जीने की, अनुशासन की और एकता की ।

कौसर ख़ान
जयपुर (राज०)

धन्यवाद

'कान्ति' का अप्रैल 2015 अंक पढ़ा । सभी रचनाएं पठनीय एवं संग्रहणीय हैं । एक अच्छी पत्रिका निरंतर निकालने के लिए धन्यवाद ।

अभिजीत राणे
समूह संपादक, वास्ट मीडिया नेटवर्क
गोरेगांव, मुंबई

विकृतियों का समाधान

'समाज कल्याण' के माध्यम से आप द्वारा संपादित मासिक पत्रिका 'कान्ति' के बारे में जानकारी प्राप्त हुई । समाज व जनमानस में घुस पड़ी अनेक समस्याओं और विकृतियों का समाधान इस पत्रिका के माध्यम से हो रहा होगा ऐसा विश्वास है । यदि 'कान्ति' का अंक अवलोकनार्थ प्रेषित किया जा सके तो महती कृपा होगी । साथ ही प्रकाशनार्थ रचनाएं प्रेषित करने में भी सुविधा रहेगी । आशा है आप मेरे अनुरोध पर विचार करते हुए 'कान्ति' का अंक अवश्य प्रेषित करेंगे ।

सम्पत लाल शर्मा 'सागर'
गिलूण्ड, राजसमन्द (राज०)

अच्छा अंक

'कान्ति' मासिक का अप्रैल अंक पढ़ा । पूर्व की भांति सभी रचनाएं उच्च कोटि की लगीं । गोपाल दास नीरज की रचना 'जीवन नहीं मरा करता है', रविदत्त की 'इसलिए घड़ी ने घोंसला नहीं बनाया', हंसकर भी तो तू रोया है रोहित यादव, आदि कई अच्छी रचनाएं हैं । मासूम अंसारी की कहानी 'तपोवन' भी बढ़िया है । स्वास्थ्य चर्चा में डॉ० अनुराग श्रीवास्तव का लेख; ''उपयोगी हैं, फलों एवं सब्ज़ियों के झिलके' जानकारी भरा है ।

यशपाल जैन आदर्श
राजापार्क, जयपुर (राज०)

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

इधर मदीना में अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) के सर पर शाही ताज रख दिया जाए ।

85. नबी (सल्ल०) की हिजरत से पहले मदीना अरब के क़स्बों में से एक साधारण क़स्बा था और औस व ख़ज़रज के क़बीले धन या पद की दृष्टि से कोई ऊंचा स्थान न रखते थे । मगर जब नबी (सल्ल०) वहां तशरीफ़ ले गये और अंसार ने आपका साथ देकर अपने आपको ख़तरों में डाल दिया तो आठ-नौ साल के भीतर-भीतर ही यही औसत दर्ज़े का क़स्बा पूरे अरब की राजधानी बन गया । वहीं औस व ख़ज़रज के किसान राज्य के कर्ता-धर्ता बन गये और हर ओर से विजयों, युद्ध में प्राप्त मालों (ग़नीमतों) और व्यापार की बरकतें उस केन्द्रीय नगर पर वर्षा की तरह बरसने लगीं । अल्लाह, इसी पर उन्हें शर्म दिला रहा है कि हमारे नबी पर तुम्हारा यह क्रोध क्या इसी 'ग़लती' के बदले में है कि उसकी बदौलत ये नेमतें तुम्हें प्रदान की गयीं ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक दृष्टि में

• दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की मशहूर रिहाइशी पाठशाला • 98 वर्षों की सेवाएं • बहुत से विभाग • शिक्षा के पड़ाव : नर्सरी से मैट्रिक तक • हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक • हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट • पत्राचार शिक्षा 2015-2016 के सत्र के लिए आई०ए०, बी०ए०, एम०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी • कंप्यूटर की भी शिक्षा • किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 16000/- रुपये प्रति वर्ष • कुल वार्षिक ख़र्च 24 लाख से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • 75 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

• जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए • ज़कात • सदक़े • अतिया • पैदावार की ज़कात • क़ुरबानी की खाल • एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च • अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

• याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप ख़ुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम अंतिम पड़ाव पर है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

CORE BANKIN GA/C NO.: 300402010010581. Mobile : 9955655960, 09801213022

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन

एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

एकेश्वरवाद की मौलिक धारणा

■ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारना मात्र तर्क और बुद्धि का विषय नहीं है, बल्कि यह इन्सान के दिल की आवाज़ है, मन की मांग है, अंत:करण की पुकार है । ईश्वर में विश्वास मानव-प्रकृति को अभीष्ट है । इस विश्वास और आस्था का मानव-व्यक्तित्व से गहरा संबंध है । यह संबंध फूल और उसकी सुन्दरता, अग्नि और ज्वाला, जल और प्रवाह जैसा है । संपूर्ण जगत ईश्वरीय प्रभाव के अन्तर्गत क्रियाशील है । स्वयं मानव-शरीर की आंतरिक क्रियाएं स्वचालित रूप से ईश्वरीय विधान के अनुसार कार्य संपन्न कर रही हैं । श्वास, क्रिया, पाचन क्रिया, रुधिर-संचार आदि समस्त कार्य संचालित हैं । इसी प्रकार मनुष्य की आत्मा भी ईश-आज्ञापालन चाहती है । यही वह बिन्दु है जो धर्म और ईश्वरवाद की आधारशिला है ।

वास्तविकता यह है कि ईश्वर जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई है, जिसे अस्वीकार करने से जीवन की सार्थकता समाप्त हो जाती है । ईश्वर के प्रति अपनी धारणा को विशुद्ध बनाना हमारा कर्तव्य है । हमारे चेतना पट पर दुनिया कुछ इस प्रकार छाई रहती है कि हम स्वयं अपनी आत्मा की ओर ध्यान नहीं दे पाते, ईश्वर और उसके अस्तित्व पर चिंतन नहीं करते । उसको जानने की लालसा तो पायी जाती है, परन्तु गंभीरता से नहीं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति कहीं न कहीं टिका है और उसी में मगन है । ईश्वर के समीप होने तथा उसे जानने के लिए उत्कृष्ट इच्छा तथा साहसिक प्रयास ज़रूरी हैं ।

संसार में मनुष्य अपने चारों ओर विभिन्न प्रकार की लीलाएं घटित होते देखता है । स्वयं उसका अपना अस्तित्व भी किसी चमत्कार से कम नहीं है । संसार की सभी चीज़ें एक व्यवस्था में बंधी दिखायी देती हैं । प्रात: सूर्य का उदय होना और सायंकाल को ओझल हो जाना । रात में आकाश का तारों से सुशोभित होना । महकते फूल, हरी-भरी वनस्पति, पशु-पक्षी, नदी-नाले, झरने, पर्वतमालाएं जिधर निगाह जाती है अद्‌भुत नज़ारा देखने को मिलता है । किसी महान कारीगर की कारीगरी दिखायी देती है । यह सारी सृष्टि उद्देश्यपूर्ण है, उपयोगिता प्रदान करने वाली है । इन्सान को जिन-जिन चीज़ों की आवश्यकता है, वे सभी यहां मौजूद हैं । आवश्यकता पूर्ति के साथ सौंदर्यबोध का भी पूरा ख़्याल रखा गया है ।

हम यह भी देखते हैं कि ब्रह्माण्ड की समस्त वस्तुओं और सारी शक्तियों में परस्पर समन्वय तथा सहयोग पाया जाता है, जिसे किसी संयोग का परिणाम नहीं कहा जा सकता । इस जगत और मनुष्य का अस्तित्व सदा से नहीं है अर्थात इसकी रचना छुपी है । क्या किसी रचना की कल्पना रचनाकार के बग़ैर संभव है ? यह प्रश्न कुरआन में है–

"क्या ईश्वर के बारे में कोई संदेह है जो आकाश समूह और धरती का रचयिता है ।" (कुरआन, 14:10)

जब धरती और आकाश के अस्तित्व में हमें संदेह नहीं तो उनके सृष्टिकर्ता के विषय में हम क्यों संदेह में पड़े हुए हैं । स्वयं मनुष्य का अपना अस्तित्व किसी महान रचनाकार की चमत्कारिक रचना की गवाही के लिए पर्याप्त है । अखिल जगत की अन्य चीज़ें भी गवाही दे रही हैं ।

इतना ही नहीं कि ईश्वर इस संपूर्ण जगत का रचनाकार है, बल्कि इसका संचालन एवं प्रबंधन भी उसी के द्वारा संपन्न हो रहा है । करोड़ों वर्षों से उसी लगे-बंधे ढंग से यहां गतिविधियां चल रही हैं । सूर्य का प्रकाश वही है, ऊर्जा वही है, धरती के विभिन्न भागों पर किरणें पहुंचना वही है, चन्द्रमा का चक्र नहीं बदला, जल प्रबंधन वही है, पेड़-पौधों के उगने का नियम भी अपरिवर्तित है, अर्थात निर्माण के साथ-साथ प्रबंधन एवं संचालन उसी का है ।

वही अकेला

और यह समस्त कार्य वह 'अकेले' ही कर रहा है । इसका प्रमाण वह अति उत्तम समन्वय है जो प्रकृति में पाया जाता है । समुद्र के पानी का बादलों के रूप में उठना, इन बादलों का हवाओं द्वारा धरती के विभिन्न भागों तक पहुंचना, फिर वहां वर्षा होना और इसी प्रकार दूसरी अनेक प्रक्रियाएं जिस समन्वित ढंग से संपन्न हो रही हैं वह ईश्वर

के एक होने पर दलील हैं । किसी कालेज के कई प्रधानाचार्य, किसी फैक्ट्री के कई मुख्य प्रबंधक यदि संभव नहीं हैं, तो इस सृष्टि के कई ईश्वर कैसे संभव हैं ? ईश्वर के अस्तित्व में संदेह करना अथवा उसके अधिकारों में किसी दूसरे/दूसरों को साझी ठहराना न तो तर्कसंगत है और न ही न्यायसंगत ।

एक प्रश्न

यहां यह प्रश्न किया जा सकता है कि यदि ईश्वर है तो अपने होने की सूचना क्यों नहीं देता ? इसके उत्तर में हम कहेंगे कि उसने सदैव सूचना दी, अपने संदेशवाहकों के द्वारा । मानव इतिहास में ईशदूतों की लंबी श्रृंखला है । उन सब की मूल शिक्षाएं समान रही हैं । सबने एक ईश्वर की उपासना, दासता और आज्ञापालन की ओर लोगों को बुलाया, जीवनयापन का वह मार्ग सुझाया जो ईशप्रदत्त था, जिस पर चलकर वह इस लोक और परलोक में सुख-शांति और आनन्द प्राप्त कर सकते थे । हर युग, हर क्षेत्र, हर समुदाय में ये महापुरुष आते रहे । जब मनुष्य ने सभ्यता के वैश्विक युग में प्रवेश किया तो ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को विश्वव्यापी संदेश के साथ भेजा गया । यह संदेश दो रूपों में उपलब्ध है ।

एक ईशवाणी जो पवित्र क़ुरआन में पूर्ण रूप से सुरक्षित है, दूसरे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथन, आचरण, आदेश-निर्देश जिन्हें 'हदीस' कहा जाता है । इस्लामी धारणा के अनुसार ईश्वर के सभी संदेशवाहकों में आस्था ज़रूरी है, हां वर्तमान व्यवहार के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का अनुसरण करना चाहिए, क्योंकि यह ईश्वरीय विधान का अंतिम 'संस्करण' है ।

ईशदूतों की शिक्षा सार

ईशदूतों, पैग़म्बरों की विशुद्ध शिक्षा वास्तव में ईश्वरवाद ही नहीं एकेश्वरवाद पर आधारित है । उनकी शिक्षा का सार यही है कि हमारा और इस सृष्टि का रचयिता अल्लाह है इसलिए पूज्य केवल वही है । वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है । इस सृष्टि की हर चीज़ उस पर आश्रित है, वह किसी पर आश्रित नहीं है । वह समस्त कमज़ोरियों से परे है । वह सर्वशक्ति संपन्न है, इसलिए इस विशाल जगत का निर्माण, पोषण और प्रबंधन उसके लिए थका देने वाला कार्य नहीं है । वह किसी की संतान नहीं है, न उसकी कोई संतान है इसलिए वह निष्पक्ष निर्णय लेने में सक्षम है । दुनिया की हर चीज़ उसका आज्ञापालन कर रही है । ग्रह, तारे, सूर्य, चन्द्रमा, हवाएं, पशु-पक्षी, वनस्पति सब उसी के क़ानून में जकड़े हुए हैं । मनुष्य को विचार एवं कर्म की स्वतंत्रता परीक्षा के उद्देश्य से अवश्य दी गयी है फिर भी उसकी भौतिक क्रियाएं, उसकी इन्द्रियां उन्हीं नियमों के अंतर्गत क्रियाशील हैं । सत्ता, प्रभुसत्ता, शासन उसी का है । जीवन-मरण उसी के हाथ है, भाग्य विधाता वही है । मनुष्य के अच्छे-बुरे कर्मों पर पुरस्कार या दंड देने का वही अधिकारी है । ईश्वरत्व के इन समस्त गुणों में उसका कोई साझी नहीं, इसीलिए मनुष्य को उसके प्रति समर्पित होना चाहिए, उपासना उसी की करें, मदद उसी से मांगे, कृतज्ञता उसी के प्रति दर्शाए । वर्तमान जीवन की सुख-शांति और पारलौकिक जीवन की सफलता के लिए ईश्वर द्वारा भेजे गये नियमों व सिद्धांतों का ईमानदारी से पालन करना चाहिए ।

मानव-जीवन पर एकेश्वरवाद का प्रभाव

एकेश्वरवाद मानव-जीवन पर दूरगामी प्रभाव डालता है–

1. एक ईश्वर में आस्था रखने वाले व्यक्ति का दृष्टिकोण अतिव्यापक हो जाता है । वह एक ऐसी सत्ता को पूज्य प्रभु मानता है, जो धरती और आकाश को बनाने वाली और पोषण करने वाली है । इस ईमान के बाद जगत की कोई चीज़ भी उसे 'पराई' नहीं लगती । उसकी हमदर्दी, प्रेमभाव और सेवाभाव संकुचित नहीं रहता ।

2. एक ईश्वर को पाकर वह आत्म-सम्मान के शिखर पर पहुंच जाता है । वह उसी के आगे हाथ फैलाता है और उसी से प्रार्थना करता है ।

3. उसे धैर्य और साहस प्राप्त होता है । कोई संकट उसे सन्मार्ग से विचलित नहीं कर सकता । वीरता, निडरता तथा त्याग की भावना से वह परिपूर्ण होता है । अहंकार और घमंड उसमें नहीं होता । लोभ-लालच ईर्ष्या, घृणा, ऊंच-नीच, छूत-छात के भेदभाव समाप्त हो जाते हैं क्योंकि अब सभी मनुष्य एक ही 'कुटुम्ब' के हैं ।

4. ऐसा व्यक्ति जो ईश्वर में विश्वास रखता है और उसके भेजे हुए आदेशों को स्वीकार करता है और उन शुभ सूचनाओं और चेतावनियों से अनभिज्ञ नहीं होता जो ईश्वर ने अपने रसूलों के द्वारा प्रसारित की हैं, वही इस योग्य होता है कि अपने दायित्व को पूर्ण रूप से निभा सके । ऐसा

व्यक्ति अपने शरीर और आत्मा दोनों पर ईश्वर का अधिकार स्वीकार करता है, फिर यह असंभव है कि वह अपने आंतरिक या बाह्य जीवन को अपवित्र रखे ।

5. वास्तविक एकेश्वरवाद यह है कि मनुष्य स्वेच्छापूर्वक अपने आपको ईश्वर के आगे अर्पण कर दे । अपनी इच्छाओं को ईश्वर की पसन्द के अनुरूप ढाले । जातीय एवं राष्ट्रीय भावना उसकी दृष्टि को संकुचित न कर सके । एकेश्वरवादी व्यक्ति की केवल उपासना एवं वन्दना ही ईश्वर के लिए नहीं होती, बल्कि उसका संपूर्ण जीवन उसी को समर्पित होता है । कुरआन में है–

"कह दो मेरी उपासना, मेरी कुरबानी, मेरा जीना और मरना अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का पालनहार है ।"

(कुरआन, 6:162)

क़ुरआन एवं अन्य धर्मग्रंथों की शिक्षा

पवित्र कुरआन विशुद्ध एकेश्वरवाद की शिक्षा देता है । एक तिहाई से अधिक शिक्षाएं इसी विषय को समर्पित हैं । अन्य प्रमुख धर्मग्रंथों–वेद तथा बाइबल की मूल एवं विशुद्ध शिक्षाएं एकेश्वरवाद ही की घोषणा करती हैं । तीनों ग्रंथों के कुछ चयनित अंश नमूने के रूप में प्रस्तुत है–

पवित्र क़ुरआन

● पवित्र क़ुरआन का एक छोटा–चार वाक्यों पर आधारित-अध्याय ईश्वर के बारे में अति सुन्दर शिक्षा देता है–

"कहो, वह अल्लाह है, यकता । अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं । न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान । और कोई उसका समकक्ष नहीं है ।" (कुरआन, 112:1-4)

● ईश्वर और उसके गुणों का वर्णन इस प्रकार है–

"अल्लाह, वह जीवंत शाश्वत सत्ता, जो संपूर्ण जगत को संभाले हुए है उसके अतिरिक्त कोई पूज्य प्रभु नहीं है । वह न सोता है और न उसे ऊंघ लगती है । धरती और आकाशों में जो कुछ है उसी का है । कौन है जो उसके सामने उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके ? जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है उसे भी वह जानता है, और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह ख़ुद ही उनको देना चाहे । उसका राज्य आसमानों और ज़मीन पर छाया हुआ है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देने वाला कार्य नहीं है, बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है ।"

(कुरआन, 2:255)

● एक और स्थान पर ईश्वर और उसके गुणों की चर्चा प्रभावशाली ढंग से की गयी है–

"वह अल्लाह ही है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला, अत्यंत कृपाशील और दयावान । वह अल्लाह ही है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं । वह सर्वशासक, अत्यंत गुणवान, सलामती देने वाला, शरणदाता, प्रभुत्वशाली, प्रभावशाली, अत्यंत महान ! ईश्वर की महिमा के प्रतिकूल है वह सब शिर्क जो यह लोग कर रहे हैं । वह अल्लाह है–योजनाकार, अस्तित्व प्रदान करने वाला, रूपकार, उसके सुन्दर नाम हैं । जो कुछ भी आकाशों और धरती में है उसी का गुणगान करती है और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है ।" (कुरआन, 59:22-24)

● समस्त मानवजाति को संबोधन–

"ऐ लोगो ! बन्दगी करो अपने रब की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम बच सको ।" (कुरआन : 2:21)

● पीड़ित की पुकार वही सुनता है–

"वह कौन है जो विकल की दुआ सुनता है जबकि वह उसे पुकारे और वह संकट मोचक है ।"

(कुरआन, 27:62)

● मन की शांति कहां है?–

"जान लो ! केवल अल्लाह के स्मरण से ही मन को शांति प्राप्त होती है ।" (कुरआन, 13:28)

● ईश्वर की निशानियां उपलब्ध हैं–

"वह अल्लाह ही तो है जो हवाओं को भेजता है फिर वे बादल उठाती हैं फिर हम उसे एक निर्जीव भू-भाग की ओर ले चलते हैं और उससे धरती को उसके मुर्दा हो जाने के पश्चात ज़िन्दा कर देते हैं ।" (कुरआन, 35:9)

अर्थात वर्षा से सूखी भूमि में वनस्पति उग आती है और अनेक कीड़े-मकोड़े पैदा हो जाते हैं ।

"निस्संदेह अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ता है जानदार को बेजान से निकालता है ।" (कुरआन, 6:95)

"निश्चय ही रात और दिन के उलट-फेर में और हर उस चीज़ में जो अल्लाह (ईश्वर) ने आकाशों और धरती में पैदा की है, डर रखने वालों के लिए निशानियां हैं ।"

(कुरआन, 10:6)

"तुम ईश्वर को कैसे नहीं मानते जबकि तुम निर्जीव थे उसने तुम्हें जीवन प्रदान किया, फिर वही तुम्हें मृत्यु देगा फिर वही तुम्हें (पुनः) जीवित करेगा फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।" (कुरआन, 2:28)

अर्थात जब तुम ईश्वरीय चमत्कार इतने निकट से देख रहे हो कि स्वयं तुम्हारा अपना जीवन भी उसी की कृपा और सामर्थ्य का जीता जागता प्रमाण है, तो फिर उस ईश्वर से तुम्हारी विमुखता का कारण इसके सिवा और क्या हो सकता है कि तुम्हें न सत्य-असत्य की चिंता है और न किसी के उपकार के प्रति तुम संवेदनशील हो।

"और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम कृतज्ञता थोड़ी ही दिखाते हो।"

(कुरआन, 23:78)

● एक प्रश्न जिसमें उसका उत्तर भी मौजूद है–

"क्या अनेक रब अच्छे हैं या अकेला अल्लाह जो प्रभुत्वशाली है ?" (कुरआन, 12:39)

वेद अत्यंत प्राचीन ग्रंथ माने जाते हैं, उनमें एकेश्वरवाद की शिक्षा मौजूद है। कुछ महत्वपूर्ण श्लोक प्रस्तुत हैं–

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा। –ऋग्वेद, 6/36/4

इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड का राजा एक ही है।

एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः। –अथर्वेद, 2/2/1

एक ईश्वर ही स्तुति एवं नमस्कार करने योग्य है।

नत्वावां2 अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो वा जानिष्यते। –यजुर्वेद, 27/36

(हे ईश्वर!) तेरे जैसा अन्य कोई न तो द्युलोक में पाया जाता है और न पृथ्वी के पदार्थों में है। न तेरे जैसा कोई पैदा हुआ और न होगा।

महद् यज्ञं भवनस्यं मध्ये तपसि कलान्तं सलिलस्य पृष्टे।

तस्मिन् श्रयन्ते ये के च देवा, वृक्षस्य स्कंध परित इव शाखा। –अथर्वेद, 10/7/38

सारे विश्व में एक बड़ी पूज्य शक्ति वर्तमान है। जिसका ज्ञान अनन्त है। जो इस संपूर्ण प्रकृति की अधिष्ठाता है। जितनी भी दिव्य शक्तियां हैं वे सभी उस पर आश्रित हैं जैसे वृक्ष के तने के आश्रय से उसकी शाखाएं रहती हैं।

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किच जगत्यां जगत्। –यजुर्वेद, 40/1

इस चराचर जगत में जो कुछ भी गति है, वह सब उस सर्वशक्ति संपन्न परमेश्वर से आच्छादित है।

इन्द्रं मित्र वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥

–ऋग्वेद, 1/164/46

विद्वान लोग उसी एक सत्ता को अनेक नामों से पुकारते हैं उसे अग्नि, यम, मातारिश्वा कहते हैं, उस ज्ञान स्वरूप को इन्द्र, मित्र, वरुण कहते हैं और वह दिव्य, सम्यग्ज्ञानवान् उत्कृष्ट पालनशक्तिमान और गौरववान है।"

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते॥
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।
स सर्वस्मै विपश्यति यच्च प्राणिति यच्च न॥
तमिदं निगतं सरः स एष एक-एक वृदेक एवं।
सर्व अस्मिन् देवा एक वृत्तो भवन्ति।

–अथर्वेद, 13/4/16-21

वह ईश्वर न दूसरा है न तीसरा और न चौथा कहा जा सकता है। वह पांचवां, छठा और सातवां भी नहीं कहा जा सकता है। वह आठवां, नवां और दसवां भी नहीं कहा जा सकता है। (अर्थात ईश्वर एक है, ऐसा नहीं है कि ईश्वरों का छोटा या बड़ा कोई दल हो) वह उन सबको अलग-अलग देखता है जो सांस लेते या नहीं लेते। ये सारे बल उसी के हैं। बल से परिपूर्ण सम्पूर्ण संसार उसी के आश्रित है। वह एक है, अद्वितीय वर्तमान है और निश्चय ही वह एक ही है।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्र तद ब्रह्म ता आप स प्रजापतिः।

–यजुर्वेद, 31/1

वह परमात्मा ही अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आपः और प्रजापति आदि नामों को धारण करता है।

य एक इद् हव्यश्चर्षणीता मिन्द्रं त गीभीर्रभ्यनों आभि यः पत्यते वृष्णय वृष्णयावान्स त्यः सत्वा पुरुमायाः महस्वान्। –ऋग्वेद, 6/22/1

जो ईश्वर संपूर्ण मानव संसार का एक ही उपास्य है उसी का इन वाणियों द्वारा भली-भांति अर्चन करो। वही सुख की वर्षा करने वाला, सर्वशक्तिमान, सत्यस्वरूप, सर्वज्ञ और समस्त शक्तियों का अधिपति है।

अत्यमेक इत्थ पुरूरु चष्टे विविश्पति तस्य ब्रन्तान्यनु वश्चरामसि। –ऋग्वेद, 8/25/16

वह एक ही ईश्वर सारी प्रजा का स्वामी है । वह सब का कुशल निरीक्षक है । हम अपने कल्याण के लिए उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं ।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य वर्णन्तमसः परस्तात् ।
तवेव विदित्वत्ति मृत्युमेतिनान्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय ॥

–यजुर्वेद, 2/4/18

मैं उस महान प्रभु को जानता हूं जो अंधकार से परे है और ज्योतिस्वरूप है । उसे जानकर ही मनुष्य मृत्यु को पार करता है और कोई मार्ग मुक्ति का नहीं है ।

बाइबल की गवाही

बाइबल बहुत-सी प्राचीन धर्म-पुस्तकों का संग्रह है । इन-पुस्तकों की प्रमाणिकता विभिन्न पहलुओं से संदिग्ध है, फिर भी एक ईश्वर की धारणा की पुष्टि के लिए आज भी इनमें बहुत कुछ सामग्री पायी जाती है ।

कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं :

मैं ही प्रथम हूं और मैं ही अंतिम हूं और मेरे सिवा कोई ईश्वर नहीं। (Isaiah, 46:6)

तुझको किसी दूसरे पूज्य की उपासना नहीं करनी होगी, इसलिए कि प्रभुवर जिसका नाम स्वाभिमानी है वह स्वाभिमानी ईश्वर है भी । (Exodus, 34:4)

सुन हे इसराईल की संतान ! प्रभुवर हमारा ईश्वर एक ही प्रभुवर है । तू अपने संपूर्ण हृदय और संपूर्ण प्राण और संपूर्ण शक्ति से प्रभुवर अपने ईश्वर से प्रेम कर । और ये बातें जिनका आदेश आज मैं तुझे देता हूं तेरे हृदय पर अंकित रहें । और तू इनको अपनी संतान को हृदयंगम कराना और घर बैठे और राह चलते और लेटे और उठते समय इनकी चर्चा किया करना । (Deuteronomy 6:4-7)

मेरे साथ कोई प्रभु नहीं । मैं ही मारता और मैं ही जिलाता हूं । मैं ही आहत करता और मैं ही चंगा करता हूं । और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ाये ।

(Deuteronomy. 32:39)

तू महान है और अद्‌भुत कार्यकर्ता है, तू ही अकेला ईश्वर है ! (Psalm, 86:10)

तू ही अकेला सब राज्यों का ईश्वर है । तूने ही आकाशों और धरती को पैदा किया । (Isaiah, 37:16)

इंजील में है : ईसा ने उत्तर दिया कि सर्वप्रथम यह है कि इसराईल सुन । प्रभुवर हमारा ईश्वर एक ही प्रभुवर है । और तू प्रभुवर अपने ईश्वर से अपने संपूर्ण हृदय और अपने संपूर्ण प्राणों और अपनी संपूर्ण बुद्धि और अपनी संपूर्ण शक्ति से प्रेम कर । (Mark, 12:29)

और सदैव का जीवन (Life eternal) यह है कि वे तुझ अकेले और सच्चे ईश्वर को और ईसा मसीह को जिसे तूने भेजा है जानें । (John, 17:3)

ईश्वर एक है और ईश्वर और मानव के बीच में मध्यस्थ भी एक ईसा मसीह है जो मनुष्य है ।

(Timothy, 2:5)

निष्कर्ष

तर्क, बुद्धि और धार्मिक पुस्तकों की गवाही से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि एक ईश्वर की अवधारणा मानव जीवन की आधारशिला है जिसके अभाव में उसका जीवन एक कटीपतंग, एक टूटे हुए पत्ते के समान है कि हवा के झोंके उसे कहां ले जाकर पटकते हैं । हमें केवल ईश्वर के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करना है, बल्कि इसके साथ ही उसे अपने जीवन में सम्मिलित भी करना है । वर्तमान समाज की त्रासदी ईश्वर को व्यावहारिक जीवन से अलग कर देती है ।

इसी कारण समाज अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा है । जब हृदय में उसका भय और व्यवहार में ईश्वर की पसन्द-नापसन्द का ख़्याल न हो तो समाज में नैतिकता स्थापित नहीं की जा सकती । जीवन में ईश्वरीय आदेश का पालन हो और उसकी मर्ज़ी को ही हर क्षेत्र में वरीयता प्राप्त हो, इसके अतिरिक्त मानव-जीवन की प्रतिष्ठा की रक्षा का कोई और उपाय नहीं है और व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में शांति-स्थापना का कोई अन्य विकल्प नहीं है ।

लेखकों एवं रचनाकारों से

"कान्ति" में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

-संपादक

कोलकाता में क़याम के लिए उमदा रिहाइश का मर्कज़



HOTEL AL-FALAH

Ph. : 033-22837901 , Cell : 9836015030
E-mail : hotelal_falah@hotmail.com

A/c Rooms & Non A/c Rooms
With
Attatch Bath Rooms

कोलकाता के शहर के दामन में (पार्क सर्कस) मुनासिब दामों पर रिहाइश का माक़ूल इन्तिज़ाम

एक बार ख़िदमत का मौक़ा ज़रूर दें।

83, Fazlul Haque Sarani, Kolkata - 700 017
WEST BENGAL

मरणोपरान्त जीवन : एक विवेचन

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

मीडिया के विभिन्न माध्यमों में आये दिन इस आशय की चीज़ें आती रहती हैं कि अमुक लड़का- लड़की अर्थात विभिन्न आयु-वर्ग के स्त्री-पुरुष अपने पूर्व जन्म की घटनाओं व वृत्तांतों से परिचित हैं । एक टी॰वी॰ चैनेल ने भावी परिणामों की अनदेखी करते हुए व्यावसायिकता में पगकर पूर्व जन्म और मृत्योपरान्त जन्म तक के बारे में जानकारी का दावा करके अपने व्यूअर्स की संख्या बढ़ाने में लगा रहा । यह दावा भी किया जाता है कि अमुक व्यक्ति अमुक व्यक्तित्व का 'पुनर्जन्म' है और इस आधार पर ऐसा भी हुआ है कि संपत्ति में हिस्सा मांगा गया । यह 'आयोजन' स्वप्रचार का माध्यम भी बनता रहा है, लेकिन यह अवधारणा जीवनोत्थान में गतिरोध और समस्याएं पैदा करती रही हैं । यह भी प्रचारित किया जाता है कि अमुक व्यक्ति की दुरावस्था उसके पूर्वजन्म का फल है, अत: उसे इसे भोगना चाहिए।

हमारे देश भारत में अब तक कई विद्वानों ने इस विषय पर बौद्धिक रूप से कुछ कथित पुनर्जन्मित कथा के सहारे अध्ययन किया है । राय बहादुर श्याम सुन्दरलाल, के॰के॰एन॰ सहाय, ताराचंद माथुर, डॉ॰ एम॰सी॰ बोस, लाला देशबन्धु गुप्त, प्रो॰ आज्ञेय, डॉ॰ केदार, डॉ॰ कीर्ति स्वरूप रावत, डॉ॰ एल॰पी॰ मेहरोत्रा, पं॰ नेकी राम शर्मा आदि विद्वानों ने इस विषय पर लेखनी चलायी है, लेकिन इनके विवेचनों से जो प्रश्न खड़े होते हैं, वे स्वयं इन्हें बुद्धि-विवेक की कसौटी से परे कर देते हैं ।

वेदों में जन्म-जन्मांतरवाद और आवागमनीय पुनर्जन्म का उल्लेख नहीं मिलता । इस अवधारणा का प्रवेश हिन्दू धर्म-दर्शन में परवर्ती युग में हुआ है । महापंडित राहुल सांकृत्यायन इसके औचित्य पर सवालिया निशान लगाते हैं और लिखते हैं कि इसका अस्तित्व सामाजिक अत्याचार पर परदा डालने के लिए है । ..."इसी लोक में आकर फिर जनमना (पुनर्जन्म) तो पीड़ित वर्ग के लिए और भी ख़तरनाक चीज़ है । इसमें यही नहीं है कि आज के दुखों को भूल जाओ, बल्कि साथ ही यह भी बतलाया गया है कि यहां की सामाजिक विषमताएं न्याच्य हैं, क्योंकि तुम्हारी ही पिछले जन्म की 'तपस्याओं' (दुखों, अत्याचारपूर्ण वेदनाओं) के कारण संसार ऐसा बना है । इस विषमता के बिना तुम अपने आज़ के कष्टों का परितोषिक नहीं पा सकते" ('दर्शन-दिग्दर्शन', किताब महल, संस्करण 1992, ई॰, पृ॰ 403)।

ख्यातलब्ध संत स्वामी पद्मन जी और स्वामी महेश्वरानन्द ने 84 लाख योनियों में कर्माधार पर परिभ्रमण को मिथ्या ठहराया है और लिखा है कि इसका कोई तार्किक उत्तर नहीं है । सुख्यात चिन्तक डॉ॰ एम॰एन॰ राय का विचार है कि "पुनर्जन्म का सिद्धांत समाज में नियतिवाद को जन्म देता है और इन्सान को निष्क्रिय एवं पौरुषहीन बना देता है" (Indian Message, पृ॰ 14, 151)। पं॰ मंगलदेव (तड़ित्कान्त) वेदालंकार ने 'यम और पितर' नामक अपनी पुस्तक में प्रचलित पुनर्जन्म की मान्यता का खंडन किया है । अन्य विद्वानों (डॉ॰ राधाकृष्णन, सत्यकाम विद्यालंकार आदि) ने जब भी इस अवधारणा को बुद्धि और विवेक की कसौटी पर परखा, तो इसे खरा नहीं पाया । पुनर्जन्म का दावा करने वाले अनेक मामलों की गहरी पड़ताल करने वाले अमेरिका के वरिष्ठ अध्येता डॉ॰ आईन स्टीवेंसन (वर्जीनिया विश्वविद्यालय) ने 'Children who remember privious lives' नामक जो मशहूर पुस्तक लिखी, उसमें वे किसी ऐसे निष्कर्ष पर नहीं पहुंच

सक़ें कि अमुक केस तर्क, बुद्धि और विवेक की कसौटी पर खरा उतरा है और इससे आत्मा और आवागमनीय पुनर्जन्म की मान्यता पुष्ट हुई है ।

जब इसे परखा गया

हमारे देश भारत में अब तक कई विद्वानों ने इस विषय पर बौद्धिक रूप से कुछ कथित पुनर्जन्मित कथा के सहारे अध्ययन किया है । राय बहादुर श्याम सुन्दरलाल, के॰के॰एन॰ सहाय, ताराचंद माथुर, डॉ॰ एम॰सी॰ बोस, लाला देशबन्धु गुप्त, प्रो॰ आज्ञेय, डॉ॰ केदार, डॉ॰ कीर्ति स्वरूप रावत, डॉ॰ एल॰पी॰ मेहरोत्रा, पं॰ नेकी राम शर्मा आदि विद्वानों ने इस विषय पर लेखनी चलायी है, लेकिन इनके विवेचनों से जो प्रश्न खड़े होते हैं, वे स्वयं इन्हें बुद्धि-विवेक की कसौटी से परे कर देते हैं ।

आत्मा और आवागमनीय पुनर्जन्म की यह मान्यता इस्लाम, ईसाई, बौद्ध और दूसरे अन्य धर्मों व मतों में नहीं पायी जाती है । यह हिन्दू धर्म और कुछ मतों की मान्यता है, जिसके प्रति जनमानस को 'विवश' करने की कोशिश लंबे समय से की जाती रही है । यहां यह तथ्य भी नहीं भूलना चाहिए कि इसके लिए 'क़ायल व विवश' करने की जितनी भी कोशिशें की गयीं सब में असफलता ही सामने आयी । इस मान्यता की वैज्ञानिक सत्यता को जांचने अर्थात पुष्ट करने के लिए 1965 ई॰ के आसपास राजस्थान विश्वविद्यालय में परामनोविज्ञान विभाग खोला गया । वरिष्ठ परामनोवैज्ञानिक डॉ॰ एच॰एन॰ बनर्जी इसके अध्यक्ष बनाए गये थे ।

डॉ॰ बनर्जी बड़े प्रतिभावान और सत्याधारित अनुसंधान के प्रबल पक्षधर थे । उन्होंने सौ से अधिक 'पुनर्जन्मित' कहे जाने वाले उन केसों को जांच-पड़ताल के लिए अपने हाथ में लिया, जिसका उल्लेख परामनोविज्ञानी अपनी पुस्तकों में बार-बार कर रहे थे । अनुसंधान के लिए उन्होंने टीमें बना दीं । इन टीमों ने On the Spot (घटना स्थल पर) जाकर अनुसंधान कार्य पूर्ण किया । कई स्थानों पर डॉ॰ बनर्जी खुद गये । उदाहरणार्थ, डॉ॰ बनर्जी एक बड़ी टीम के साथ तुर्की गये । इस टीम में वरिष्ठ डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक भी शामिल थे । बड़ी तैयारी के साथ यह टीम तुर्की रवाना हुई थी । वहां के अडाना ज़िले में 1956 में इस्माईल के कथित पुनर्जन्म की घटना को पुनर्जन्म के पक्ष में ख़ूब प्रचारित किया जा रहा था । कुछ लोग इसे सबसे मज़बूत केस मानते थे । जिस गांव का इस्माईल के निवासी होने की बात कही जा रही थी, डॉ॰ बनर्जी को न तो वह गांव ही मिल सका, न ही इस्माईल से भेंट हो सकी, जबकि घटना कुछ ही वर्ष पहले की बतायी जा रही थी ।

डॉ॰ बनर्जी ने काफ़ी प्रयास किया, पर असफलता ही हाथ लगी । उन्होंने इस घटना का उल्लेख विस्तार के साथ अपने शोध-कार्य में किया है । अब आइए, यह भी जान लें कि पुनर्जन्म के जिन सौ से अधिक केसों की उन्होंने जांच-पड़ताल करायी, उनका निष्कर्ष क्या रहा ? पूरा आवागमनीय पुनर्जन्म खंड-खंड हो गया । एक भी केस सही नहीं पाया गया । डॉ॰ बनर्जी की कुछ पक्षों द्वारा कड़ी आलोचना की जाने लगी, उन्हें पद से हटा दिया गया और 1968 में रहस्यमय ढंग से उनके विभाग को बन्द कर दिया गया ।

वैज्ञानिकता का अभाव

पुनर्जन्म के मामलों की पुष्टि अभी तक संभव नहीं हो सकी है । इसका वैज्ञानिक आधार अप्राप्य है । इसका एकमात्र कारण पुनर्जन्म का न होना है । 7 अक्तूबर 1968 को प्रकाशित एक समाचार के अनुसार, "मनोविज्ञान के विशेषज्ञों (Psychologists) ने कुछ केसों की जांच-पड़ताल करने के बाद यह मत प्रकट किया कि कुछ लोग जो अपने पूर्व जन्म की बातें बयान करते हैं, वे अधिकतर मानसिक हिस्टीरिया (Psychic Hysteria) रोग से ग्रसित होते हैं और बातें इसी का परिणाम होती है । जयपुर के मानसिक चिकित्सालय के डॉ॰ बी॰के॰ व्यास और एक अन्य विशेषज्ञ श्री रत्न सिंह का दावा है कि उन्होंने कुछ केसों का इलाज किया है, जिसमें उन्हें सफलता मिली है । डॉ॰ व्यास ने

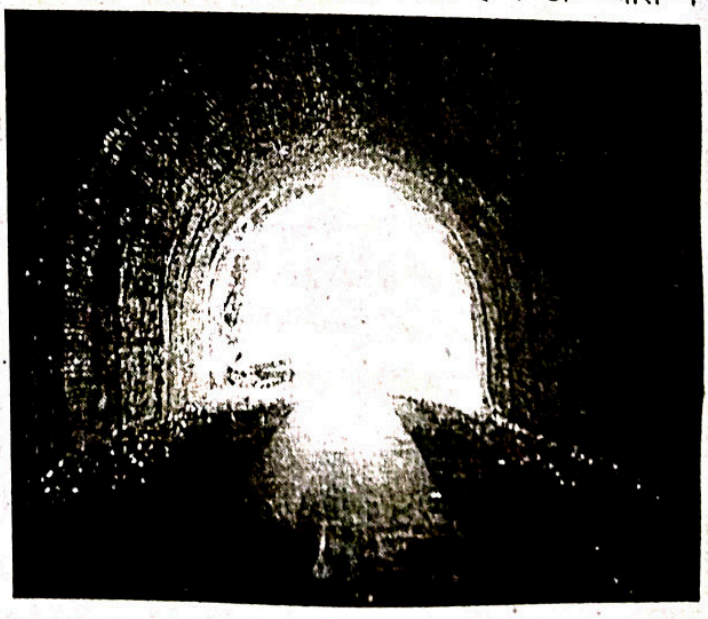

यूनाइटेड न्यूज़ ऑफ़ इंडिया को साक्षात्कार देते हुए कहा कि जो लोग पूर्वजन्म की घटनाएं बयान करते हैं, उनकी मानसिक स्थिति साधारणतया संतुलित नहीं होती । ये अधिकतर व्यक्तिगत समस्याओं के केस होते हैं । ये लोग मानसिक असंतुलन के कारण कुछ और बनने के इच्छुक रहते हैं । इस प्रकार मनगढ़ंत क़िस्से बयान करने से कुछ दूसरे लाभ प्राप्त हो जाते हैं ।''

(हिन्दुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली)

डॉ॰ व्यास ने अपने पक्ष-समर्थन के लिए कुछ केसों के विवरण भी दिए ।

देश में पुनर्जन्म का दावा करने वाली जो भी घटनाएं सामने आयी हैं, उनके पात्र या तो मानसिक रोग से ग्रसित रहे या किसी लाभ के निमित्त मनगढ़ंत क़िस्सा बनाया गया या काल्पनिक रूप से लिख दिया गया कि पुनर्जन्म की घटना अमुक स्थान पर घटी ऐसी एक घटना का उल्लेख करते हुए डॉ॰ एल॰पी॰ मेहरोत्रा लिखते हैं–यह घटना एक ऐसे बालक से संबंधित है, जिसकी बहन को पूर्वजन्म की स्मृतियां थी और जिससे उसको अपनी बहन से डाह हो गयी और वह अपने को महात्मा गांधी का मृतात्मा बताने लगा । इस बालक ने गांधी की जीवनी के विषय में एक पुस्तक में पढ़ा था और उसी का सहारा लेकर उनके विषय में बताने लगा । जब लोगों को यह पता चला कि गांधी जी का पुनर्जन्म हो गया है, तो लोग बड़ी संख्या में उससे मिलने पहुंचने लगे । कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता भी वहां गये यहां तक कि सुशीला नय्यर भी गयीं । इस सबसे उस बालक को बड़ी शोहरत मिली, पर अंत में उसकी पोल खुल गयी और उसका झूठ सामने आ गया ।

न्यायालय का ऐतिहासिक निर्णय

आत्मा के पुनर्जन्म और जन्म-जन्मांतरवाद पर प्रतिष्ठित लेखिका सोमा सबलोक ने 1978 में 'आत्मा और पुनर्जन्म' पर एक आलेख लिखा, जिसमें उन्होंने आवागमनीय पुनर्जन्म की वैधता को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर परखकर रद्द कर दिया था ।

याचिकाकर्ता ने दिल्ली की तीस हज़ारी अदालत में यह कहा था कि उक्त आलेख धर्म-विशेष की आस्था पर प्रहार करता है और जनभावनाओं को आहत करता है । न्यायालय ने इस मामले के विभिन्न पहलुओं का जायज़ा लेकर 2 दिसम्बर 1983 को इसे ख़ारिज करते हुए अपने फ़ैसले में कहा कि, ''विज्ञान के इस युग में आत्मा के अस्तित्व और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर शंका और आपत्ति करने का प्रत्येक का अधिकार है, क्योंकि ऐसा करना वैज्ञानिक और सुधारवादी विचारधारा पैदा करने की दिशा में आगे क़दम बढ़ाना है, जिसके लिए भारतीय संविधान की धारा 51 (अ) में निर्देश दिया गया है । इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर लेखिका ने इस लेख के द्वारा पाठकों को ज्ञानवान बनाने का प्रयास किया है ।

यह बात बड़े दुख के साथ कहनी पड़ रही है कि ऐसा प्रयास करने पर लेखिका पर हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का दोष लगाया गया है और उसे कई वर्षों तक मुक़द्दमे का सामना करने का कष्ट झेलना पड़ा । यह लेख सच्चाई को खोजने की दिशा में एक यत्न है और यह नहीं कहा जा सकता कि इसे लिखकर हिन्दुओं की धार्मिक भावना को जान-बूझकर ठेस पहुंचाने का काम किया गया है । ईसाई, इस्लाम, बौद्ध और दूसरे अनेक धार्मिक मत हैं जो आत्मा और पुनर्जन्म (जन्म-जन्मांतरवाद) के सिद्धांत में विश्वास नहीं करते ।

कुछ सहज प्रश्न

अत: जन्म-जन्मांतरवाद और आवागमनीय पुनर्जन्म के पक्ष में कोई वैज्ञानिक, बौद्धिक और व्यावहारिक तथ्य नहीं प्राप्त होते हैं । इसके विपरीत सहज रूप से कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं–

★ इन्सान के सुकर्मों-दुष्कर्मों पर पुरस्कार और दंड प्रकृति की मांग है, जिसकी पूर्ति किसी जीव-जन्तु में रूपांतरित होने से असंभव है । फिर इस प्रचलित मान्यता में यह पता नहीं चलता कि वह किस सुकर्म-दुष्कर्म का फल भोग रहा है । इसलिए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि इन्सान को पुनर्जीवन प्राप्त हो, जो आवागमन से मुक्त हो, बल्कि उसके कर्मों का उसकी जानकारी व बोध में उचित फल मिले । इस्लाम की पारलौकिक धारणा में इसका प्रावधान है ।

★ सच्चे न्याय के लिए पारलौकिक जीवन अनिवार्य है ।

★ आवागमनीय पुनर्जन्म की मान्यता के अनुसार पशु, पक्षी, वनस्पतियां आदि पाप कर्म का परिणाम हैं । तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि मानव जीवन के लिए लाभकारी इन चीज़ों को बढ़ाने के लिए पाप-कर्म ख़ूब किये

जाएं ।

★ इन्सान के कर्मों के प्रभाव उसकी मृत्यु के बाद भी पड़ते हैं । अत: बुद्धि-विवेक को अपेक्षित है कि उसके अच्छे-बुरे कर्मों के भावी पीढ़ियों पर पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन मूल्यांकन हो, फिर उसे दंडित किया जाए । इसके अभाव में समुचित दंड या पुरस्कार इस लोक में संभव नहीं है ।

★ यह स्वाभाविक तथ्य है कि जब व्यक्ति यह समझता है कि वह अपने पूर्व जन्म के कर्मों की सज़ा भुगतने के लिए पैदा किया गया है, तो सहज रूप से मनुष्यत्व प्रभावित होगा । उसमें आत्म-सम्मान, स्वाभिमान और पुरुषार्थ की भावना नहीं पैदा होगी, बल्कि वह ग्लानि, क्षोभ, कुंठा और प्रायश्चित व हीन भावना से ग्रस्त जीवन गुज़ारेगा । उसकी उन्नति प्रभावित होगी ।

★ लोगों का अहंकार बढ़ेगा । संपन्न लोग विपन्न और निर्धन जनों के साथ उपेक्षा पूर्ण व्यवहार और निम्न-भाव से पेश आएंगे और इस प्रकार मानवता ऊंच-नीच, छूतछात में विखंडित होगी ।

इन्सान के सुकर्मों-दुष्कर्मों पर पुरस्कार और दंड प्रकृति की मांग है, जिसकी पूर्ति किसी जीव-जन्तु में रूपांतरित होने से असंभव है । फिर इस प्रचलित मान्यता में यह पता नहीं चलता कि वह किस सुकर्म-दुष्कर्म का फल भोग रहा है । इसलिए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि इन्सान को पुनर्जीवन प्राप्त हो, जो आवागमन से मुक्त हो, बल्कि उसके कर्मों का उसकी जानकारी व बोध में उचित फल मिले । इस्लाम की पारलौकिक धारणा में इसका प्रावधान है ।

पुनर्जीवन की इस्लामी धारणा

इस्लाम संपूर्ण जीवन-व्यवस्था है । इसकी शिक्षाएं इन्सान के लिए सर्वथा कल्याणकारी और मोक्षदायिनी हैं । यह खुली हुई सच्चाई और वास्तविकता है कि इन्सान को इस लोक में अपने अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा पुरस्कार एवं दंड नहीं मिल सकता । इसके लिए परलोक का होना अनिवार्य है । विश्व के सभी बड़े धर्मों में परलोक की धारणा पायी जाती है । इस्लाम की शब्दावली में पारलौकिक जीवन को 'आख़िरत' कहते हैं ।

इस्लाम की यह धारणा है कि मनुष्य का यह जीवन उसकी परीक्षा की घड़ी है । यह नश्वर जगत है, जिसका एक दिन विनाश होना निश्चित है । शाश्वत जीवन तो 'आख़िरत' (परलोक का जीवन) है । मनुष्य का यह जीवन शाश्वत जीवन के लिए तैयारी का अवसर जुटाता है । यदि मनुष्य अपने जीवन को ईश्वरीय आदेशों के अनुरूप बनाता है, एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व, पारलौकिक जीवन आदि मौलिक धारणाओं को स्वीकार करता है एवं सत्कर्मों में लगा रहकर जीवन व्यतीत करता है, तो उसके लिए अच्छा बदला है और वह जन्नत (स्वर्ग) का पात्र होगा । वहां उसे वास्तविक जीवन, सुख-शान्ति और अमरता प्राप्त होगी । वह इस लोक का अत्यंत विकसित रूप होगा, वहां कोई अल्पता और कमी न होगी । सत्कर्मी इसमें सदैव रहेगा । इसके विपरीत मिथ्याचार में लगे दुष्कर्मी को जहन्नम (नरक) की दहकती आग में डाल दिया जाएगा, जिसमें वह सदैव जलेगा । दुष्कर्मी विभिन्न यातनाओं से भी दो-चार होगा ।

इस्लाम पुनर्जन्म नहीं पुनरुज्जीवन (हश्र– Resurrection) को मान्यता देता है । वह मनुष्य के बार-बार जन्म लेने को नहीं मानता, वह मानव-आत्मा के जीव-जन्तु, वनस्पति आदि में परिभ्रमण के विचार को पूर्णत: निरस्त करता है, उसके अनुसार सारे मनुष्य जो मानव जीवन के आरंभ से लेकर क़ियामत (महाप्रलय) के आने के पूर्व तक के होंगे, सभी दोबारा पैदा किये जाएंगे और अल्लाह उनसे उनके कर्मों का हिसाब लेगा एवं कर्मानुसार पुरस्कार या दंड देगा ।

क़ियामत (महाप्रलय) का आना यक़ीनी है (क़ुरआन, 15:85)।

इस दिन अल्लाह सबको इकट्ठा करेगा (क़ुरआन, 15:25)।

"...और (उस समय परलोक में) कर्म-पत्र सामने रख दिया जाएगा । उस समय तुम देख लोगे कि अपराधी लोग अपनी ज़िन्दगी की किताब में अंकित बातों से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे कि, "हाय हमारा दुर्भाग्य । यह कैसी

किताब है कि हमारी कोई छोटी-बड़ी हरकत ऐसी नहीं रही जो इसमें अंकित न हो गयी हो।'' जो-जो उन्होंने किया था वह सब अपने सामने मौजूद पाएंगे, और तुम्हारा रब किसी पर तनिक जुल्म न करेगा। (क़ुरआन, 18:49)

''चिंता उस दिन की होनी चाहिए जबकि हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को बिल्कुल नंगी पाओगे, और हम सारे इन्सानों को इस तरह घेरकर इकट्ठा करेंगे कि (अगलों-पिछलों में से) एक भी न छूटेगा। और सबके सब तुम्हारे रब के सामने पंक्तियों में पेश किये जाएंगे–लो देख लो ! आ गये न तुम हमारे पास उसी प्रकार जैसा हमने तुमको पहली बार पैदा किया था।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने क़ियामत के ये लक्षण बताए हैं : ज्ञान उठा लिया जाएगा, अज्ञान अधिक होगा, व्यभिचार की अधिकता होगी, शराब बहुत पी जाने लगेगी। पुरुष कम स्त्रियां अधिक हो जाएंगी यहां तक कि पचास स्त्रियों का सिरधरा एक (पुरुष) होगा (बुख़ारी, मुस्लिम, अहमद, तिरमिज़ी)।

जब सूर (नरसिंघा) में फूंक मारी जाएगी, तो सब अपनी क़ब्रों से निकलकर अपने पालनहार की ओर चल पड़ेंगे (क़ुरआन, 36: 51)।

क़ियामत के दिन आकाश फट जाएगा, तारे झड़ जाएंगे, सूर्य लपेट दिया जाएगा, पर्वत धुने हुए ऊन की तरह हो जाएंगे, धरती कूट-कूटकर चूर्ण-विचूर्ण कर समतल कर दी जाएगी और जो कुछ उसमें भीतर है उसे बाहर डालकर ख़ाली हो जाएगी। मुर्दे क़ब्रों से उठाए जाएंगे और दिलों के भेद प्रकट हो जाएंगे। जिस दिन लोग बिखरे हुए पतंगों के सदृश्य हो जाएंगे। (क़ुरआन, 82:1, 84:1, 82:2, 81:1, 89:21, 84:4, 100:9,10, 101:4)।

पुनरुज्जीवन के दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का पूरा-पूरा फल पाएगा। क़ुरआन में है–

''फिर जब 'सूर' में फूंक मारी जाएगी तो उस दिन उनके बीच रिश्ते-नाते शेष न रहेंगे और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे। फिर जिनके अच्छे कर्म भारी हुए, तो वही हैं जो सफल होंगे। रहे वे लोग जिनके अच्छे कर्म हल्के हुए, तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। वे सदैव जहन्नम (नरक) में होंगे। आग उनके चेहरों को झुलसा देगी और उसमें उनके मुंह विकृत हो रहे होंगे।'' (23:101-104)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–

''मरने वाले के साथ तीन चीज़ें चलती हैं : उसके घर वाले, उसका माल और उसका कर्म। फिर दो चीज़ें तो पलट आती हैं और एक साथ रह जाती है। उसके घर वाले और माल तो वापस आ जाते हैं और उसका कर्म साथ रह जाता है'' (बुख़ारी, मुस्लिम)।

क़ुरआन में है–''आख़िरकार प्रत्येक व्यक्ति को मरना है और तुम सब अपना पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन पाने वाले हो। कामयाब वास्तव में वह है, जो वहां जहन्नम की आग से बच जाए और जन्नत में पहुंचा दिया जाए। रहा यह संसार, तो यह केवल बाह्य धोखे की चीज़ है (क़ुरआन, 3:185)।

उस दिन हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और किसी के साथ अन्याय न होगा। (क़ुरआन, 3:25)

उस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने भले कर्म को सामने मौजूद पाएगा और बुरे को भी। जो कुछ उसने कमाया होगा, पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कोई अन्याय न होगा (क़ुरआन, 3:30,25)। उस दिन उसके न माल काम आएगा और न संतान (क़ुरआन, 26:88)। ख़ुद इन्सान के हाथ, पैर, आंख, जिह्वा और सारे अंग गवाही देंगे कि उनसे उसने किस प्रकार काम लिया।

(क़ुरआन, 36:65, 41:20-24)

अल्लाह कहता है–''और क़ियामत के दिन हम न्याय-तुला रखेंगे, फिर किसी व्यक्ति पर तनिक जुल्म न किया जाएगा, यद्यपि वह (कर्म) राई के दाने ही के बराबर हो, हम उसे ला उपस्थित करेंगे। और हिसाब करने के लिए हम काफ़ी हैं।'' (क़ुरआन, 21:47)

वह दिन सत्कर्मी के लिए सुगम और दुष्कर्मी के लिए कठिन होगा। क़ुरआन में है–

''जो कोई सुचरित लेकर आया उसको उससे भी अच्छा प्राप्त होगा, और ऐसे लोग घबराहट से उस दिन निश्चिंत होंगे। और जो कुचरित लेकर आया तो ऐसे लोगों के मुंह आग में औंधे होंगे।'' (क़ुरआन, 27:89,90)

कोई शब्द उसके मुख से नहीं निकलता जिसे सुरक्षित करने के लिए एक उपस्थित रहने वाला निरीक्षक (फ़रिश्ता) मौजूद न हो (50:18)। वह (अल्लाह) छिपे और खुले हर चीज़ को जानता है।...तुममें से कोई व्यक्ति चाहे ज़ोर से बात करे या धीरे से, और कोई रात के अंधेरे में छिपा हुआ हो

या दिन के उजाले में चल रहा हो, उसके लिए सब समान है (कुरआन, 13:9,10)।

"फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, उससे आसान, सरसरी हिसाब लिया जाएगा, और वह अपने लोगों की ओर खुश-खुश पलटेगा। और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (उसके बाएं हाथ में) दिया गया, जिसको (उसने) पीठ पीछे डाल रखा था, तो वह विनाश को पुकारेगा और दहकती आग में जा पड़ेगा।" (कुरआन, 84:7-12)

"वास्तव में घाटे में पड़ने वाले तो वही हैं, जिन्होंने अपने आपको और अपने लोगों को क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया। जान रखो, यही खुला घाटा है।"

(कुरआन, 39:15)

जन्नत (स्वर्ग)

जन्नत के पात्र वही व्यक्ति होंगे, जिन्होंने जीवन भर अल्लाह की बन्दगी (उपासना) करते हुए अच्छे कार्य किये होंगे। अल्लाह का यह वादा है–"वे लोग जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किये, उन्हें हम जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहां वे सदैव रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन हो सकता है ?"

(कुरआन, 4:122)

जो लोग ईमान लाए अर्थात मुस्लिम हुए और अच्छे कर्म किये, तो उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है (कुरआन, 95:6)। उसे कोई नहीं जानता जो आंखों की ठंडक उनके लिए छिपा रखी गयी है उसके बदले में देने के ध्येय से जो सुकर्म वे करते रहे होंगे।

(कुरआन, 32:17)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का कथन है–

क़ियामत के दिन बन्दा एक क़दम भी आगे न बढ़ सकेगा, जब तक कि उससे पांच बातों का जवाब न ले लिया जाए–अपनी आयु किस प्रकार व्यतीत की, अपनी जवानी किस तरह बितायी, माल कहां से कमाया ? माल कहां ख़र्च किया ? और जो सद्ज्ञान उसने अर्जित किया उस पर कितना अमल किया ? (तिरमिज़ी)

एक और हदीस में इस तरह है–

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत (उल्लिखित) है कि नबी (सल्ल०) ने कहा कि जबकि जन्नत वाले जन्नत की नेमतों में होंगे, सहसा उनके लिए एक नूर रोशन होगा सो वे अपने सिर उठाएंगे तो क्या देखेंगे कि उनका रब (पालनकर्ता प्रभु) उनके ऊपर प्रगट है। अल्लाह कहेगा : 'तुम पर सलाम हो, ऐ जन्नत वालो !' आप (सल्ल०) ने कहा कि अल्लाह तआला उनकी तरफ़ देखेगा और वे उसकी तरफ़ देखेंगे। फिर वे जब तक अल्लाह की तरफ़ देखते रहेंगे, जन्नत की किसी नेमत की ओर ध्यान नहीं देंगे, यहां तक कि अल्लाह उनसे परदे में हो जाएगा और बाक़ी रह जाएगा उसका नूर। (इब्ने माजा)

पवित्र कुरआन में जन्नत का चित्रण है–

अल्लाह के परायण और उससे डर रखने वाले सुगंधित फूल और नेमत भरे उद्यान में होंगे, उनके लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे (कुरआन, 56:89, 18:107)। उनके लिए ऊपरी मंज़िल पर कक्ष होंगे, जिनके ऊपर भीं निर्मित कक्ष होंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी (39:20, 29:58)। वे जो चाहेंगे मिलेगा, उसमें वे सदैव रहेंगे (कुरआन, 25:16)। उन्हें वास्तविक शांति और निश्चिंतता प्राप्त होगी। वे बाग़ों और स्रोतों में बारीक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए एक-दूसरे के आमने-सामने उपस्थित होंगे (कुरआन, 44:51,53)। उनके लिए सुख वैभव की चीज़ें होंगी। वे और उनकी पत्नियां छायों में मसहरियों पर तकिया लगाएं बैठे होंगे (कुरआन, 36:55,56)। उन्हें सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किया जाएगा (कुरआन, 35:33, 76:21)। उनके लिए सोने और चांदी के बर्तन होंगे (कुरआन, 43:71, 76:15,16)। अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए वह कुछ जुटा रखा है, जिसको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के मन में उसका विचार आया।

जन्नत में न तो सख़्त धूप होगी और न सख़्त ठंड (कुरआन, 76:13)। फलों से लदे हुए पेड़ होंगे, अंगूर के बाग़ होंगे, मनचाहे मेवे होंगे (कुरआन, 76:13,14, 78:32, 77:42)। साफ़, गोरी, बड़ी नेत्रों वाली स्त्रियों से उनका विवाह होगा (कुरआन, 44:54)। उनके लिए हरे रेशमी गद्दे और उत्कृष्ट एवं असाधारण क़ालीन होंगे, क़ालीनें हर ओर बिछी होंगी (कुरआन, 55:76:88:16)। उन्हें वहां इच्छित मेवे और पेय मिलेंगे, उनके बीच विशुद्ध पेय का पात्र फिराया जाएगा, बिल्कुल साफ़ उज्ज्वल, पीने वालों के लिए सुस्वादु, छलकता जाम होगा, उसमें न कोई ख़ुमार होगा और

न वे उससे निढाल और मदहोश होंगे (कुरआन, 38:51, 37:45-47)।

जन्नत वालों के चेहरे प्रफुल्लित और सौम्य होंगे। उनसे नेमतों की ताज़गी और आभा का बोध हो रहा होगा (क़ुरआन, 88:8, 83:24)। वे कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे, और न कोई झुठलाने की बात (कुरआन, 78:35, 88:11)। वे भली प्रकार सदैव स्वस्थ ओर सानन्द होंगे। हदीस में है–

"यहां वह स्वास्थ्य है कि बीमार न पड़ोगे, वह जीवन है कि मृत्यु न आएगी, वह जवानी है कि वृद्ध न होंगे, और वह आराम है कि फिर तकलीफ़ न पाओगे। लोगों के चेहरे अपने-अपने कर्मों के अनुसार चमकेंगे कोई सितारे की तरह, कोई पूर्णिमा के चांद की तरह।" (मुस्लिम)

जन्नत के संबंध में ऊपर जो विवरण वर्णित हुए हैं, वे स्वाभाविक रूप से प्रत्येक समझदार और विवेकशील व्यक्ति के दिल और अंतर्मन में इसके प्रति ललक पैदा करने के लिए काफ़ी हैं। हमें अपने आपको जन्नत का पात्र बनाने हेतु गंभीर प्रयास करने चाहिए। दुनिया में हमें जो अवसर उपलब्ध हुआ है, ईश्वर का आज्ञाकारी बनकर एवं सुकर्म कर उसका समुचित सदुपयोग किया जा सकता है और लोक-परलोक दोनों में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

जहन्नम (नरक)

जहन्नम को नरक और दोज़ख़ भी कहा जाता है, जो दुष्कर्मियों और पापाचारियों का ठिकाना है। इसमें वे अत्यंत कठिन दुखदायिनी यातना से दो-चार होंगे।

क़ुरआन में है–"कहो : क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बरें दें, जो अपने कर्मों की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठाने वाले हैं ? ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं। यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने पालनकर्ता प्रभु की आयतों (क़ुरआन का वाक्य) का और उससे मिलन का इन्कार किया। अत: उनके कर्म जान को लागू हुए, तो हम क़ियामत के दिन उन्हें कोई वज़न न देंगे। उनका बदला वही जहन्नम है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की नीति अपनायी और मेरी आयतों एवं मेरे रसूलों (ईशदूतों) का उपहास किया" (क़ुरआन, 18:103-106)।

जिन लोगों ने इहलोक में सत्य के इन्कार की नीति अपनायी, उनको आग के वस्त्र पहनाए जाएंगे, उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा, जिससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी, उनको दंड देने के लिए लोहे के गुर्ज़ (गदाएं) होंगे। जब कभी भी वे घबराकर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिये जाएंगे और कहा जाएगा कि चखो दहकती आग की यातना का मज़ा (क़ुरआन, 22:19-22, 44:48, 32:20)।

जहन्नम की आग बुझने न पाएगी और अपराधियों को घेरे रहेगी (क़ुरआन, 17:97, 18:29)।

आग उनके चेहरों को झुलस देगी, जिससे वे कुरूप हो जाएंगे (क़ुरआन, 23:104)।

उनके लिए आग ही ओढ़ना-बिछौना होगा (क़ुरआन, 7:41)।

उन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा (क़ुरआन, 47:15, 10:4)। ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा, जो उनके मुंह भून डालेगा (क़ुरआन, 18:29)। निस्संदेह ज़क़्क़ूम का वृक्ष गुनहगार का भोजन होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेटों में खौलता होगा जैसे गर्म पानी खौलता है।

(क़ुरआन, 44:43-46)

जहन्नम एक घात-स्थल है। सरकश लोग उसमें न किसी शीतलता का मज़ा चखेंगे और न किसी पेय का सिवाय खौलते पानी और बहती पीप-रक्त के (क़ुरआन, 78:21,24,25)। वहां वे चिल्लाएंगे, आर्तनाद करेंगे, बिफरेंगे, सांस खीचेंगे और फुंकार मारेंगे, वहां वे सदैव रहेंगे। जब वे किसी तंग जगह जकड़े हुए डाले जाएंगे तो वहां विनाश को पुकारेंगे। (कहा जाएगा :) "आज एक विनाश को मत पुकारो, बल्कि बहुत से विनाशों को पुकारो !" (क़ुरआन, 11:106,107, 25:12-14)।

"पलटो अपने रब (पालनकर्ता प्रभु) की ओर और आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी। और अनुसरण करो उस सर्वोत्तम चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से अवतरित हुई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक यातना आ जाए और तुम्हें पता भी न हो।"

कहीं ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : "हाय, अफ़सोस मुझ पर। जो कोताही अल्लाह के हक़ में मैंने की। और मैं तो परिहास करने वालों में ही शामिल रहा।" (क़ुरआन, 39:56)।

शान्ति-सलामती का महीना रमज़ान

● संपादन प्रभाग

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस (रह०) ने लिखा है कि इस पवित्र महीने में ख़ुदा के नेक, भले और आज्ञाकारी बन्दे ख़ुदा की याद और अच्छे अच्छे कामों को करने में लगे रहते हैं और उनको देखकर दूसरे मुसलमानों का दिल भी अच्छे कामों की ओर बहुत ज़्यादा मुड़ जाता है, जिससे इस महीने में इस्लामी समाज में नेकी और भलाई का ऐसा माहौल क़ायम हो जाता है कि हर ओर अच्छाई ही अच्छाई नज़र आने लगती है । एक बात और भी है कि रमज़ान के दौरान की जाने वाली नेकी का सवाब (पुण्य) आम दिनों में की जाने वाली नेकी के सवाब से बहुत ज़्यादा बढ़ा दिया जाता है । इसलिए इन सब बातों का नतीजा यह होता है कि नेकी के लिए कोशिश करने वाले लोगों के लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान ऐसे नेक बन्दों को गुमराह नहीं कर सकते हैं ।

मौलाना अबुल हसन अली नदवी रमज़ान के दौरान जन्नत के दरवाज़ों के खुल जाने, दोज़ख़ के दरवाज़े के बन्द हो जाने और शैतानों को जकड़ दिये जाने का ज़िक्र करते हुए कहते हैं–''इन तमाम चीज़ों ने रमज़ान को इबादत, ज़िक्र, तिलावत (क़ुरआन पाठ), तक़वा और परहेज़गारी का एक ऐसा विश्वव्यापी मौसम और आम जश्न का ज़माना बना दिया है कि इसमें पूरब-पश्चिम के सभी मुसलमान, पढ़े-लिखे और अनपढ़, अमीर और ग़रीब, कम हिम्मत वाले और अधिक हिम्मत वाले हर तरह और हर गिरोह के लोग एक-दूसरे के साथी, हमदम, हमदर्द और एक ही राह के राही नज़र आते हैं, एक जैसे दिखते हैं । यह रमज़ान एक ही समय में हर शहर, हर गांव और हर देहात में होता है । अमीर के महल और ग़रीब की झोपड़ी दोनों में इसका जलवा नज़र आता है । ...ऐसा मालूम होता है कि इस्लामी समाज में कान्ति और शान्ति का बहुत बड़ा शामियाना फैला हुआ है ।''

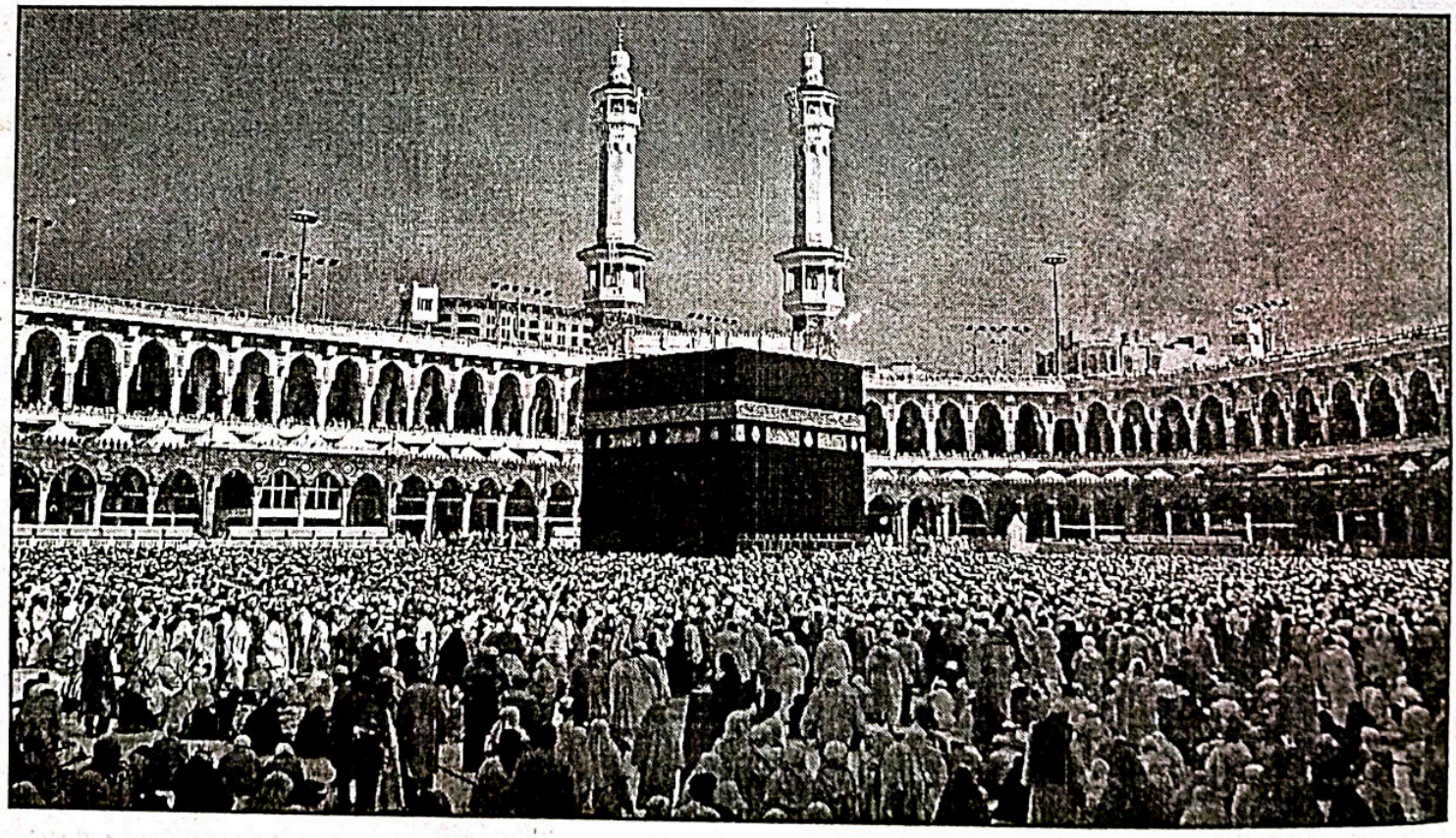

रोज़ा : एक प्रशिक्षण मास

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने रोज़े के महत्व पर रोशनी डालते हुए कहा है–

'जिसने रमज़ान के महीने में ईमान के साथ और सवाब (पुण्य) की नीयत से रोज़े रखे, उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे ।'' (बुख़ारी)

बुख़ारी शरीफ़ में ही एक और हदीस है जिसमें अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा है कि ''जो आदमी एक दिन का रोज़ा रखे अल्लाह उसके चेहरे को दोज़ख़ की आग से सत्तर बरस की यात्रा के बराबर दूर कर देगा ।'' (बुख़ारी)

सहरी और इफ़्तार

सहरी और इफ़्तार के बारे में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने हिदायत दी है कि सहरी ज़रूर खायी जाए और इफ़्तार ठीक वक़्त पर कर लिया जाए । आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

''सहरी खाओ, क्योंकि सहरी में बरकत है ।''

आप (सल्ल॰) ने इफ़्तार के बारे में कहा–''लोग हमेशा भलाई पर रहेंगे, जब तक इफ़्तार जल्दी करते रहेंगे ।'' (मुस्लिम)

ख़ुद रोज़ा रखने के साथ ही दूसरे रोज़ेदार को इफ़्तार कराने पर भी इफ़्तार कराने वाले को रोज़ेदारों के बराबर सवाब मिलता है ।

आप (सल्ल॰) ने कहा–''जिसने किसी रोज़ेदार को रोज़ा इफ़्तार करवाया, उसका उतना ही सवाब मिलेगा, जितना उस रोज़ेदार को मिलेगा, बिना इसके कि रोज़ेदार के सवाब में कुछ कम हो ।'' (तिरमिज़ी)

तरावीह : तरावीह उन नफ़्लों (ऐच्छिक नमाज़) को कहा जाता है, जो रमज़ान के दौरान इशा की नमाज़ के बाद पढ़े जाते हैं । कुछ उलेमा इसकी संख्या आठ बताते हैं और कुछ की राय में बीस रक्अत नमाज़ें हैं ।

थोड़ी देर सुस्ताने के लिए बैठने को तरावीह कहते हैं । इस नमाज़ में हर चार रक्अत के बाद थोड़ी देर बैठकर आराम किया जाता है, इसलिए इस नमाज़ का नाम तरावीह

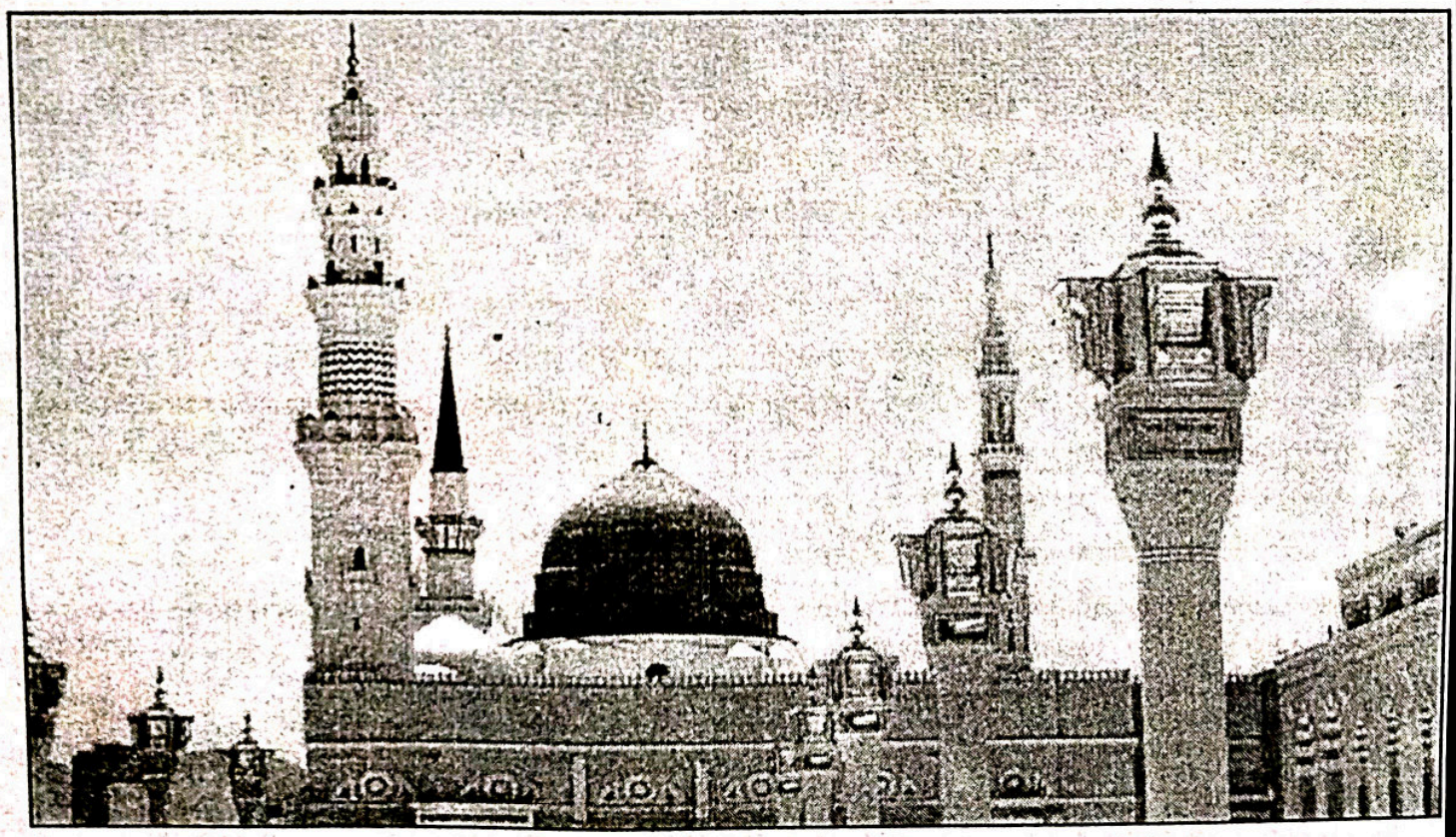

की नमाज़ हो गया ।

आख़िरी अशरा : दस दिन की अवधि को अशरा कहा जाता है । रमज़ान में तीन अशरे होते हैं । पहले रोज़े से दसवें रोज़े तक पहला अशरा, ग्यारहवें रोज़े से बीसवें रोज़े तक दूसरा अशरा और इक्कीसवें रोज़े से रमज़ान के ख़त्म होने तक तीसरा अशरा कहलाता है, चाहे आख़िरी अशरा नौ दिन का हो गया दस दिन का । रमज़ान महीने के आख़िरी अशरे का बहुत महत्व है, क्योंकि इसी अशरे की ताक़ रातों में किसी एक में कुरआन उतरना शुरू हुआ था । रमज़ान की इक्कीसवीं, तेइसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताइसवीं और उनतीसवीं रातों को ताक़ रात कहा जाता है । इन रातों को रात भर इबादत की जाती है । इन्हीं ताक़ रातों में से कोई एक रात 'शबे क़द्र' कहलाती है, जो हज़ारों महीनों से बेहतर है ।

शबे-क़द्र : शबे-क़द्र को लैलतुल क़द्र भी कहा जाता है । यह बेइन्तिहा रहमत और बरकत वाली रात है । कुरआन पाक में इस पाक रात के बारे में कहा गया है–

"शबे-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है । फ़रिश्ते और रूह हर महत्वपूर्ण मामले में अपने रब की अनुमति से उतरते हैं । वह रात पूर्णतः शांति और सलामती है, उषाकाल के आने तक ।" (कुरआन, 97:3-5)

एतिकाफ़ : एतिकाफ़ उस ख़ास इबादत का नाम है, जो हिम्मत वाले लोग रमज़ान के आख़िरी अशरे में लोगों से अलग-थलग होकर मस्जिद में करते हैं एतिकाफ़ की रूह और इसका मक़सद यह है कि दिल अल्लाह तआला से लग जाए ।

बन्दा अपने ख़ुदा को ख़ुश करने के लिए जो भी काम करे वह इबादत है और फिर ग़ौर कीजिए कि रोज़ा बन्दे को इस इबादत के लिए किस तरह तैयार करता है । रमज़ान के पूरे तीस या उनतीस दिन इन्सान इस बात का अभ्यास करता रहता है कि अपने मालिक और ख़ालिक़ (स्रष्टा) की ख़ुशी हासिल करने के लिए जायज़ ख़्वाहिशों को भी दबाये और हर साल का यह अभ्यास उसे इस लायक़ बनाता चला जाता है कि वह ज़िन्दगी के हर मामले में अपनी भावनाओं और इच्छाओं को संतुष्ट और ख़ुश करने के बजाय अपने मालिक और पालनहार की ख़ुशी हासिल करने में लगा रहे ।

रमज़ान हर तरह की भलाई और बरकत का महीना है । आदमी को ग्यारह महीनों में जो कुछ नेकी, भलाई और बरकतें मिलती हैं, वे इस महीने में मिलने वाली भलाइयों और बरकतों के सामने ऐसी हैं, जैसे समुद्र की तुलना में बूंद । धन्यवाद के पात्र हैं वे लोग, जिनसे यह महीना राज़ी होकर गया तथा नाकाम और बदनसीब हैं वे लोग जो इसको नाराज़ करके हर तरह की भलाई और बरकतों से वंचित हो गये ।

रोज़े से पूरा फ़ायदा उठाने के लिए ज़रूरी है कि रमज़ान के दौरान गुनाहों से बचने और रोज़े रखकर ज़्यादा से ज़्यादा नेकियां करने की कोशिश करनी चाहिए । यहां यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी है कि रमज़ान के दौरान गुनाहों से बचने की ख़ास हिदायत का मतलब यह नहीं है कि बाक़ी ग्यारह महीनों में इनको छुट्टी दे दी गयी है, बल्कि इसका मतलब यह है कि इस पवित्र महीने में परहेज़गारी का विशेष अभ्यास कर लिया जाए कि इन्सान को परहेज़गार रहने की आदत हो जाए और वह बाक़ी ग्यारह महीनों में भी परहेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारे ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) इस बात का उल्लेख करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा कि जिसने रोज़ा रखने के बावजूद झूठ बोलना और झूठ पर अमल करना नहीं छोड़ा, तो ख़ुदा को इस बात की ज़रूरत नहीं है कि वह अपना खाना-पीना छोड़ दे । (बुख़ारी)

रोज़ा लोगों को झगड़े-फ़सद और जहन्नम की आग से बचाता है । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा कि रोज़ा (अल्लाह के अज़ाब से बचाने के लिए) ढाल है (यानी इसके ज़रिये अल्लाह के अज़ाब से बचाव होता है)। इसलिए रोज़ेदार को चाहिए कि वह न तो अश्लील बातें कहे, न मूर्खता करे और अगर कोई व्यक्ति उससे लड़े या उसे गाली दे तो वह दो बार कह दे कि मैं रोज़ेदार हूं । (बुख़ारी)

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा है कि जब तू रोज़ा रखे तो तेरी पांचों ज्ञानेन्द्रियां क़ाबू में रहें और उनका भी रोज़ा होना चाहिए । इसलिए रोज़ेदार के लिए ज़रूरी है कि रोज़े के दौरान पांचों ज्ञानेन्द्रियों को वह ख़ुदा के हुक्म के अनुसार क़ाबू में रखे यानी रोज़ेदार उसी चीज़ को देखे, जिसे देखने की ख़ुदा की तरफ़ से इजाज़त है ।

रमज़ान के रोज़े की मर्यादाएं

● अबू हामिद मुहम्मद ग़ज़ाली

हक़ीक़ी रोज़ा के लिए जो अंगों को गुनाहों से रोकता है, छह आदाब सामने रखना ज़रूरी हैं–

1. निगाह का रोज़ा

पहला अदब यह है कि नज़र नीची रखो । जिन चीज़ों की तरफ़ निगाह डालना अल्लाह तआला को नापसन्द है, उनकी तरफ़ निगाह को न जाने दो । जिन चीज़ों को देखने से दिल भटकता हो और अल्लाह की याद से ग़फ़लत तारी होती हो, उनको न देखो ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"नज़र डालना (ऐसी चीज़ों पर जिनसे अल्लाह ने रोका है) शैतान के तीरों में एक ज़हर में बुझा हुआ तीर है । जो कोई अल्लाह के डर से बदनिगाह से रुक जाए, अल्लाह तआला उसके दिल में ईमान की मिठास का मज़ा अता करेगा ।"

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा–

"पांच चीज़ें ऐसी हैं जिनसे रोज़ा टूट जाता है । एक झूठ, दूसरे ग़ीबत, तीसरे चुग़ली, चौथे झूठी क़सम और पांचवीं वासना की नज़र ।"

2. ज़ुबान का रोज़ा

दूसरा अदब यह है कि ज़ुबान से बेहूदा बात न करो, झूठ न बोलो, ग़ीबत न करो, चुग़ली न खाओ, बेशर्मी की बातें न करो, अत्याचार व ज़्यादती करने की बात न करो, झगड़ा न करो, वादा करके वादा न तोड़ो और न कोई बात काटो । ज़ुबान का रोज़ा यह है कि ख़ामोश रहे, उससे होने वाले गुनाहों से बचे और उसे अल्लाह की याद और क़ुरआन की तिलावत में मशग़ूल (व्यस्त) रखे ।

सुफ़ियान सौरी (रह०) कहते हैं कि ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है । मुजाहिद (रह०) ने कहा कि दो चीज़ों से रोज़ा टूट जाता है–एक ग़ीबत से, दूसरे झूठ से ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"रोज़ा ढाल है (गुनाहों से बचाव के लिए)। तुममें से कोई रोज़ा से हो तो न बेशर्मी की बात करे, न बदकलामी और फ़ुज़ूल बकवास करे, न चीख़े-चिल्लाये और अगर कोई गाली दे या लड़ने पर उतर आये तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं ।"

एक हदीस में है कि हुज़ूर (सल्ल०) के ज़माने में दो औरतों ने रोज़ा रखा । दिन गुज़रने के बाद भूख और प्यास की शिद्दत से उनकी हालत ख़राब हो गयी । उन्होंने हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में आदमी भेजा और इफ़्तार की इजाज़त मांगी। आप (सल्ल०) ने उस आदमी को एक प्याला दिया और हुक्म किया कि उन दोनों से कहना कि जो कुछ तुमने खाया है इस प्याला में 'क़ै' कर दो । एक औरत ने क़ै की तो उससे आधा प्याला ताज़ा गोश्त और ख़ून से भर गया । दूसरी ने क़ै की तो प्याला पूरा भर गया । लोगों को बहुत ताज्जुब हुआ ! अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इन दोनों ने उस ग़िज़ा (खाने) से तो रोज़ा रखा जो अल्लाह ने हलाल की है, लेकिन जो चीज़ उसने हराम की है उसे खाती रहीं । वे एक-दूसरे के पास बैठीं तो दोनों ने लोगों की ग़ीबत शुरू कर दी, दोनों ने लोगों का जो गोश्त खाया था वही गोश्त प्याले में है ।

3. कान का रोज़ा

तीसरा अदब यह है कि कानों को बुरी बात सुनने से रोको । इसलिए कि जिन बातों का ज़ुबान से निकालना हराम है, उनका सुनना भी हराम है । इसी वजह से अल्लाह तआला ने कानों से झूठ सुनने वालों और हराम का माल खाने वालों का ज़िक्र साथ-साथ फ़रमाया है–

"ये कान लगाकर झूठ सुनने वाले और हराम का माल खाने वाले ।" (क़ुरआन, 5:42)

इसी तरह उसने यह भी इरशाद फ़रमाया–

"क्यों उनके उलमा और पीर उन्हें गुनाह की बात कहने और हराम खाने से नहीं रोकते ।" (क़ुरआन, 5:63)

ग़ीबत सुनना और ख़ामोश रहना भी हराम है । अल्लाह तआला ने फ़रमाया है–

"फिर तो तुम भी उन्हीं की तरह हुए ।"

इसीलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"ग़ीबत करने वाला और सुनने वाला दोनों गुनाह में बराबर के साझीदार हैं ।"

4. अंगों का रोज़ा

चौथा अदब यह है कि हाथ-पांव और दूसरे अंगों को गुनाहों से रोको और इफ़्तार के वक़्त ऐसे खाने से बचो जिसके बारे में हराम होने की आशंका हो । अगर दिन भर वह खाना भी न खाये जो हलाल है और इफ़्तार हराम खाने से करे, तो क्या उसका रोज़ा हुआ ? शरीअत कहती है रोज़ा नहीं हुआ । ऐसे रोज़ेदार की मिसाल ऐसी है जैसे एक व्यक्ति महल बनाये, लेकिन पूरे शहर को ध्वस्त कर दे ।

वैसे भी अगर ज़रूरत से ज़्यादा खाया जाए तो हलाल खाना भी रूह के लिए नुक़्सानदेह होता है । इसीलिए रोज़ा खाना कम करने की तर्बीयत करता है । वह बहुत बेवक़ूफ़ होगा जो दवा तो ज़्यादा न खाये कि नुक़्सान करेगी, लेकिन ज़हर खा ले । हराम खाना ज़हर है जो दीन को बरबाद करता है । हलाल खाना एक दवा की तरह है, जिसका कम खाना फ़ायदेमंद है और ज़्यादा खाना हानिकारक है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"कितने ही रोज़ेदार ऐसे हैं, जिन्हें अपने रोज़े से भूख और प्यास के सिवा कुछ नहीं मिलता ।"

कुछ आलिम कहते हैं कि यह वह रोज़ेदार हैं, जो हराम खाने से रोज़ा इफ़्तार करे । कुछ ने कहा है कि वह शख़्स मुराद है जो रोज़े के दौरान हलाल खाने से तो रुका रहे, किन्तु लोगों का गोश्त खाता रहे । यानी ग़ीबत करता रहे, जो हराम है और कुछ की राय यह है कि यह वह व्यक्ति है जो अपने अंगों को गुनाहों से न बचाये ।

5. हलाल रोज़ी

पांचवां अदब यह है कि इफ़्तार के वक़्त हलाल खाना भी कम ही खाओ । इतना न खाओ कि पेट फूल जाए । इसलिए कि अल्लाह के नज़दीक हलक़ तक भरे हुए पेट से ज़्यादा नापसन्दीदा कोई भर जाने वाली चीज़ नहीं, अगरचे खाना हलाल हो । शैतान पर ग़ालिब आने और शहवत (वासना) की तीव्रता तोड़ने में रोज़े से क्या मदद मिलेगी, अगर रोज़ेदार इफ़्तार के वक़्त दिन भर की भूख-प्यास की तलाफ़ी (पूर्ति) कर दे और एक वक़्त में इतना खा ले जितना दिन भर में खाता था ।

ज़ाहिर है कि रोज़े का मक़्सद तो ख़ाली पेट रहना और नफ़्स की ख़ाहिशों को क़ाबू में रखना है, ताकि नफ़्स (मनोवृत्ति) में तक़्वा पैदा हो । अब अगर कोई सुबह से शाम तक तो पेट ख़ाली रखे फिर स्वादिष्ट और मज़ेदार खाने से ख़ूब पेट भर ले, तो नफ़्स की ख़ाहिशें तो और दोगुनी हो जाएंगी और ऐसी ख़ाहिशें पैदा हो जाएंगी जो रोज़ा न रखता तो न पैदा होतीं । बेहतर यह है कि रात को भी अपना पेट इतना ख़ाली रखे कि तहज्जुद और दूसरे वज़ीफ़ों में आसानी हो, शैतान दिल के पास न आने पाये और फ़रिश्तों की दुनिया के दीदार से फ़ैज़याब हो सके । हालांकि सिर्फ़ पेट का ख़ाली रखना भी काफ़ी न होगा, जब तक वह अपनी फ़िक्र और इरादे को अल्लाह के अलावा हर मक़्सूद से ख़ाली न कर ले ।

6. ख़ौफ़ और उम्मीद

छठा अदब यह है कि रोज़ा इफ़्तार करने के बाद ख़ौफ़ और उम्मीद की कैफ़ियत तारी हो । उम्मीद यह रखे कि अल्लाह तआला उसका रोज़ा क़बूल करेगा और उसे अपने क़रीब वालों में शामिल करेगा । साथ ही डरे कि शायद उसका रोज़ा क़बूल न किया जाए और वह अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) का हक़दार ठहरे । हक़ीक़त यह है कि हर इबादत से फ़ारिग़ होने के बाद यही कैफ़ियत होनी चाहिए ।

ये रोज़ा के वे छह आदाब हैं जिनको सामने रखने ही से रोज़ा हक़ीक़ी मानों में सही होता है । अबू दरदा (रज़ि॰) कहते हैं कि अक़्लमंद आदमी का सोना और रोज़ा न रखना भी अच्छा है और बेवक़ूफ़ आदमी का रोज़ा रखना और जागना भी बुरा है । कहा गया है कि यक़ीन और तक़्वा के साथ ज़र्रा बराबर इबादत, ग़लत कामों के साथ की हुई पहाड़ के बराबर इबादत से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) है । कुछ आलिमों ने कहा है कि बहुत-से रोज़ेदार हक़ीक़त में बेरोज़ा होते हैं और बहुत-से बेरोज़ा, रोज़ेदार होते हैं । बेरोज़ा रोज़ेदार वे हैं जो खाते-पीते तो हैं, लेकिन अपने अंगों को गुनाहों से महफ़ूज़ रखते हैं और रोज़ेदार बेरोज़ा वे हैं जो खाने-पीने से तो रुक जाते हैं लेकिन अपने अंगों को गुनाहों से नहीं रोकते ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया है–

"रोज़ा एक अमानत है, हर एक को अपनी अमानत की हिफ़ाज़त करनी चाहिए ।"

रमज़ान की महत्ता

● अबरार अहमद



अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने रमज़ान के महीने को 'शहरुल मुआसात' कहा है, जिसका अर्थ है– सहानुभूति, ग़मख़्वारी और सहनशीलता का महीना । अर्थात यह महीना इन्सानों के साथ सहानुभूति, हमदर्दी और ग़मख़्वारी का महीना है ।

कुरआन में रोज़ा के लिए 'सौम' शब्द आया है, जिसका अर्थ है–रुकना, अर्थात अपनी मनोकामनाओं पर नियंत्रण रखना । अन्य इबादतों में कुछ न कुछ करना पड़ता है, मगर रोज़े में रुकना पड़ता है, अर्थात रोज़े की हालत में खाने-पीने से तथा संभोग से रुकना यानी बचना पड़ता है ।

रमज़ान मास के रोज़े आध्यात्मिक और नैतिक प्रशिक्षण का सर्वोत्तम साधन हैं । इन रोज़ों के द्वारा रोज़ेदार में ईशभय पैदा होता है, संयम आता है, चरित्र सुधार होता है तथा मनोकामनाओं पर क़ाबू पाने की शक्ति पैदा होती है ।

चूंकि रमज़ान हमदर्दी का महीना है, अत: इस महीने में एक-दूसरे की तंगियों, महरूमियों, परेशानियों और विपत्तियों में शामिल होकर उनकी सहायता की जाती है ।

यहां इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल इसी महीने में उक्त पुण्य कार्य किये जाएं, बल्कि यह तो एक प्रशिक्षण मास है । इस पूरे महीने में इन्सान चरित्र-निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त करके शेष ग्यारह महीनों में भी भलाई-कल्याण के कार्यों में लगा रहता है ।

इन्सान का हर अच्छे कर्म का सवाब दस गुने से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है, परन्तु रोज़ा अल्लाह के लिए है, और वही उसका बदला जिस तरह चाहेगा, देगा ।

"गौरव का स्वामी प्रतापवान अल्लाह कहता है–आदम के बेटे (मनुष्य) का प्रत्येक कर्म उसके लिए है, सिवाय रोज़े के, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा । और रोज़ा ढाल है । अत: जब तुममें से किसी का रोज़े का दिन हो, तो न अश्लील बात ज़ुबान पर लाए और न शोर मचाए और न दंगा व फ़साद करे और यदि कोई उसे अपशब्द कहे या उससे लड़े तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

रमज़ान के महीने में शैतानों को जंज़ीरों से जकड़ लिया जाता है । अत: इस महीने में गुनाह के कार्यों में अत्यधिक कमी आ जाती है तथा चारों ओर भलाई ही भलाई फैल जाती है ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा, "जब रमज़ान आता है, तो जन्नत के द्वार खोल दिये जाते हैं, और दोज़ख़ के द्वार बन्द कर दिये जाते हैं और शैतानों को जकड़ लिया जाता है ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

चूंकि रमज़ान के महीने की सबसे प्रमुख इबादत रोज़ा है, अत: रोज़ा रखने से इन्सान में परहेज़गारी पैदा होती है ।

"ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस तरह तुम से पहले नबियों के अनुयायियों

के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे उम्मीद है कि तुममें परहेज़गारी का गुण पैदा होगा ।" (कुरआन, 2:183)

इस महीने की क्या विशेषता है, यह भी कुरआन हमें बताता है–"रमज़ान वह महीना है, जिसमें कुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है, जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली है । अत: अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाये उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे ।"

(कुरआन, 2:185)

रोज़ेदार की अपनी भूख-प्यास जहां उसमें ईशपरायणता, आत्म-नियंत्रण, अल्लाह के आज्ञा-पालन और धैर्य के गुण पैदा करने का ज़रिया बनती है, वहीं रोज़ेदार को इन्सानों पर भूख-प्यास और दुख-दर्द में जो कुछ बीतती है, उसका आस्वादन भी कराती है । इस निजी अनुभव से उसके भीतर सहानुभूति की जीवंत भावना पैदा हो जाती है।

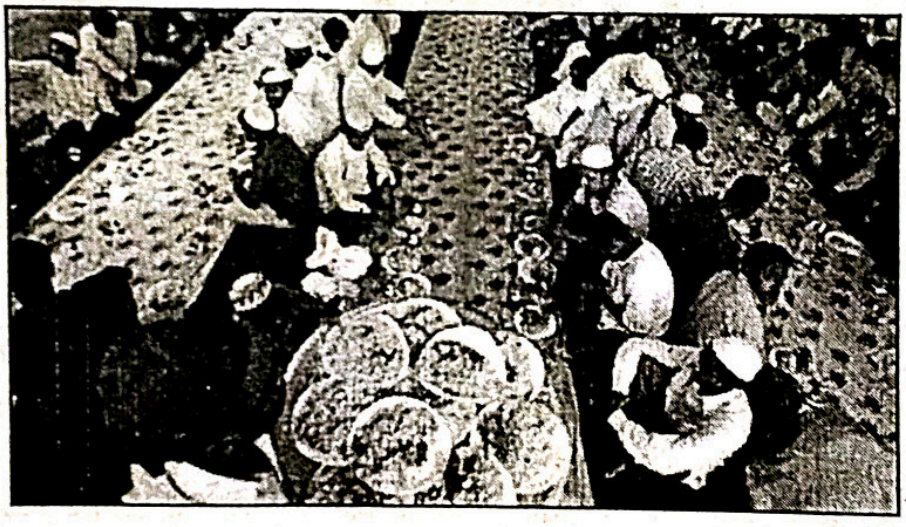

यद्यपि रमज़ान के महीने में रोज़े रखना हर आक़िल व बातिल इन्सान पर अनिवार्य है, तथापि बीमारों तथा मुसाफ़िरों को छूट दी गयी है कि वे यदि इस महीने में रोज़ों से चूक जाएं तो अन्य दिनों में रोज़े रखें, क्योंकि अल्लाह इन्सान पर नर्मी बरतना चाहता है ।

"और जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो, तो वह दूसरे दिनों में रोज़ों की गिनती पूरी करे । अल्लाह तुम्हारे साथ नर्मी करना चाहता है, सख़्ती करना नहीं चाहता । इसलिए यह तरीक़ा तुम्हें बताया जा रहा है ताकि तुम रोज़ों की गिनती पूरी कर सको और जिस सीधे मार्ग पर अल्लाह ने तुम्हें लगाया है, उस पर अल्लाह की बड़ाई का इज़हार करो और मानो और शुक्रगुज़ार बनो ।" (कुरआन, 2:185)

रोज़े की हालत में इन्सान के हर अंग का रोज़ा होता है । उदाहरण के लिए आंख का रोज़ा है–बुरा न देखना, ज़ुबान का रोज़ा है–अपशब्द न बोलना तथा ग़ीबत न करना तथा कान का रोज़ा है–किसी की ग़ीबत न सुनना । वैसे भी इस्लाम में 'ग़ीबत' एक भयंकर पाप है तथा मरे हुए भाई का मांस खाने के समान है ।

पीठ पीछे यदि किसी की बुराई की जाती है, और वह बुराई उसमें मौजूद है, तो इसे ग़ीबत कहेंगे, और यदि मौजूद नहीं है, तो इसे बुहतान कहेंगे । किसी पर बुहतान लगाना ग़ीबत से भी बड़ा पाप है ।

अत: रोज़े का अर्थ केवल भूखा-प्यासा रहना ही नहीं है, बल्कि हर बुराई से परहेज़ करना होता है । जो व्यक्ति रोज़ा रखकर भी झूठ बोलने और झूठ पर अमल करने से बाज़ नहीं आया, तो अल्लाह को उसके भूखे-प्यासे कहने से कोई मतलब नहीं ।

इसके विपरीत यदि सभी मापदंडों के साथ रोज़ा रखा जाए तो ऐसे रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की ख़ुशबू से भी बेहतर है ।

"और रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुश्क की बू से ज़्यादा बेहतर है ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

रमज़ान के महीने में 70 गुना पुण्य बढ़ा दिया जाता है और यदि कोई व्यक्ति दिल में नेक काम का इरादा करे और किसी कारणवश इस काम को न कर सके, तब भी उसके नाम पुण्य लिख दिया जाता है ।

रोज़ा दिन के समय रखा जाता है तथा इस हालत में खाने-पीने तथा संभोग की मनाही है, जबकि रोज़े की रात में इन्सान को खाने-पीने तथा अपनी पत्नी के साथ संभोग की इजाज़त है । क्योंकि अल्लाह इन्सान को ख़ियानत से बचाना चाहता है ।

"तुम्हारे लिए रोज़ों के ज़माने में रातों को अपनी पत्नियों के पास जाना जाइज़ कर दिया गया है । वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो ।"

(कुरआन, 2:187)

"अब तुम अपनी पत्नियों के साथ रात काटो और जो आनन्द अल्लाह ने तुम्हारे लिए जाइज़ कर दिया है, उसे हासिल करो । और रातों को खाओ-पियो यहां तक कि रात की कालिमा की घाटी से प्रात: बेला की सफ़ेद घाटी स्पष्ट दिखायी दे जाए । तब ये सब काम छोड़कर रात तक अपना रोज़ा पूरा करो ।" (कुरआन, 2:187)

रमज़ान में रात को ईशा की नमाज़ के बाद एक अतिरिक्त नमाज़ पढ़ी जाती है, जिसे तरावीह कहते हैं । तरावीह में इमाम साहब कुरआन सुनाते हैं तथा शेष लोग चुपचाप इस क़िराअत को सुनते हैं ।

लैलतुल क़द्र वह मुबारक रात है, जिसमें कुरआन मजीद नाज़िल हुआ, अत: यह रात हज़ार महीने से बेहतर है, यानी इस रात की इबादत, हज़ार महीने की इबादत से बेहतर है । इस रात को इबादत करने पर सारे गुनाहों से मग़फ़िरत की शुभ-सूचना दी गयी है ।

"हमने इस (कुरआन) को क़द्र की रात में अवतरित किया है, और तुम क्या जानो की क़द्र की रात क्या है ? क़द्र की रात हज़ार महीने से ज़्यादा बेहतर है ।"

(कुरआन, 97:1-3)

रमज़ान के महीने में 'एतिकाफ़' भी एक महत्वपूर्ण इबादत है । 'एतिकाफ़' से अभिप्राय है कि इन्सान कुछ अवधि के लिए दुनिया के काम, हर प्रकार की व्यस्तता और रुचि से कटकर अपने आपको केवल अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दे । अपना घर-बार छोड़कर अल्लाह के घर में जा बैठे और सारा समय उसकी याद में बसर करे । आमतौर पर रमज़ान के अंतिम दस दिनों में 'एतिकाफ़' किया जाता है । 'एतिकाफ़' की हालत में संभोग की मनाही है ।

"और जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ में हो, तो पत्नियों से संभोग न करो ।" (कुरआन, 2:187)

रमज़ान में दानशीलता का महत्व भी कई गुना बढ़ जाता है । "रमज़ान में दानशीलता का महत्व भी कई गुना बढ़ जाता है । हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है, वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) लोगों में सबसे बढ़कर दानशील थे । और रमज़ान में जबकि आप जिबरील (अलैहि॰) से मुलाक़ात करते, तो आपकी दानशीलता और भी बढ़ जाती थी । जिबरील (अलैहि॰) रमज़ान की हर रात में आप (सल्ल॰) से मुलाक़ात करते और आपके साथ कुरआन का पठन-पाठन करते । और अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब जिबरील (अलैहि॰) से मिलते, तो आप नेकी में वर्षा लाने वाली हवा से भी बढ़कर दानशील हो जाते ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

रोज़ेदार का रोज़ा खुलवाना भी एक सवाब का काम है । जो किसी रोज़ेदार को भरपेट खाना खिलाये, तो अल्लाह तआला उसे अपने हौज से इतना तृप्त करेगा कि फिर उसे कभी प्यास न लगेगी, यहां तक कि वह जन्नत में दाख़िल हो जाए ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रमज़ान के रोज़ों को न केवल इबादत का प्रशिक्षण ठहराया गया है, बल्कि उस महान मार्गदर्शन की नेमत पर अल्लाह तआला के प्रति कृतज्ञता भी ठहराया गया है, जो कुरआन के रूप में उसने हमें प्रदान की है ।

माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हरगिज़ जमा नहीं हो सकते ।

मद्रासी

मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी॰जी॰)
फोन : 0771-2539516,2236788

मद्रासी होटल
शॉप नं॰ 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

बरी होते क़ातिल, सिसकता लोकतंत्र !

हाशिमपुरा नरसंहार में मारे गए 42 लोगों के मामले में अदालत ने सभी अभियुक्तों को बरी कर दिया है । यह सी॰ आई॰ डी॰ की लचर तफ़्तीश का बड़ा उदाहरण है । यह टिप्पणी गाज़ियाबाद के तत्कालीन एस॰पी॰ श्री वी॰एन॰ राय की है, जिन्होंने इस मामले का मुक़दमा दर्ज कराया था । हाशिमपुरा नरसंहार को लेकर उनकी पुस्तक भी आ रही है । 1987 में मेरठ के हाशिमपुरा में हुए नरसंहार में 42 निर्दोष लोगों को मार दिया गया था और उन्हें गाज़ियाबाद में फेंक दिया गया था । उस समय गाज़ियाबाद के पुलिस अधीक्षक विभूति नारायण राय थे, जिन्होंने इस मामले में मुक़दमा दर्ज कराया था और जांच के बाद 16 पी॰ ए॰ सी॰ के जवान अभियुक्त बने थे, जिन्हें अदालत ने सबूतों के अभाव में छोड़ दिया । राय का कहना है कि सी॰ आई॰ डी॰ ने जिस तरह इस मामले में लचर ढंग से तफ़्तीश की थी, उससे यही होना था। यह फ़ैसला एक बार फिर सत्ता के निरंकुश चरित्र को बेनक़ाब करने वाला है । किसी भी ऐसे बड़े मामले में अभियुक्तों के ख़िलाफ़ न ढंग से पैरवी होती है और न ही तफ़्तीश । जिसकी वजह से 'अदालत साक्ष्य के अभाव में अभियुक्तों को बरी कर देती है । ग़ौरतलब है कि लक्ष्मनपुर बाथे और शंकर बिगहा के सामूहिक दलित नरसंहार की तरह हाशिमपुरा नरसंहार के अभियुक्त भी बरी हो गये। दलित चिन्तक लाल जी निर्मल के मुताबिक़ लक्ष्मनपुर बाथे और शंकर बिगहा के नरसंहार के आरोपियों को सज़ा दिलाने के लिए कोई आवाज़ ही नहीं बन पाई । श्री राय लिखते हैं–

उत्तर प्रदेश में मेरठ के हाशिमपुरा में 22 मई, 1987 को बड़ी संख्या में पी॰ए॰सी॰ के जवानों ने पहुंचकर मस्जिद के सामने चल रही धार्मिक सभा से मुस्लिम समुदाय के क़रीब 50 लोगों को हिरासत में ले लिया था । पी॰ए॰सी॰ के जवानों पर इनमें से 42 लोगों की गोली मारकर हत्या करने के बाद शव नहर में फेंकने का आरोप था । उत्तर प्रदेश पुलिस ने वर्ष 1996 में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, ग़ाज़ियाबाद की अदालत में आरोप पत्र दायर किया था । आरोप पत्र में 19 लोगों को हत्या, हत्या का प्रयास, साक्ष्यों के साथ छेड़छाड़ और साज़िश रचने की धाराओं में आरोपी बनाया गया था । वर्ष 2002 में सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले को दिल्ली की तीस हज़ारी कोर्ट में स्थानांतरित कर दिया था ।

जीवन के कुछ अनुभव ऐसे होते हैं जो ज़िन्दगी भर आपका पीछा नहीं छोड़ते । एक दु:स्वप्न की तरह वे हमेशा आपके साथ चलते हैं और कई बार तो क़र्ज़ की तरह आपके सर पर सवार रहते हैं । हाशिमपुरा भी मेरे लिए कुछ ऐसा ही अनुभव है । 22 व 23 मई सन 1987 की आधी रात दिल्ली ग़ाज़ियाबाद सीमा पर मकनपुर गांव से गुज़रने वाली नहर की पटरी और किनारे उगे सरकंडों के बीच टार्च की कमज़ोर रोशनी में ख़ून से लथपथ धरती पर मृतकों के बीच किसी जीवित को तलाशना-सब कुछ मेरे स्मृति पटल पर किसी हॉरर फ़िल्म की तरह अंकित है ।

उस रात दस-साढ़े दस बजे हापुड़

से वापस लौटा था । साथ ज़िला मजिस्ट्रेट नसीम ज़ैदी थे जिन्हें उनके बंगले पर उतारता हुआ मैं पुलिस अधीक्षक निवास पर पहुंचा । निवास के गेट पर जैसे ही कार की हेडलाइट्स पड़ी मुझे घबराया हुआ और उड़ी रंगत वाला चेहरा लिए सब इंसपेक्टर वी॰बी॰ सिंह दिखायी दिया जो उस समय लिंक रोड थाने का इंचार्ज था । मेरा अनुभव बता रहा था कि उसके इलाक़े में कुछ गंभीर घटा है । मैंने ड्राइवर को कार रोकने का इशारा किया और नीचे उतर गया ।



वी॰बी॰ सिंह इतना घबराया हुआ था कि उसके लिए सुसंगत तरीक़े से कुछ भी बता पाना संभव नहीं लग रहा था । हकलाते हुए और असंबद्ध टुकड़ों में उसने जो कुछ मुझे बताया वह स्तब्ध कर देने के लिए काफ़ी था । मेरी समझ में आ गया कि उसके थाना क्षेत्र में कहीं नहर के किनारे पी॰ए॰सी॰ ने कुछ मुसलमानों को मार दिया है । क्यों मारा ? कितने लोगों को मारा ? कहां से लाकर मारा ? स्पष्ट नहीं था । कई बार उसे अपने तथ्यों को दुहराने के लिए कहकर मैंने पूरे घटनाक्रम को टुकड़े-टुकड़े जोड़ते हुए एक नैरेटिव तैयार करने की कोशिश की । जो चित्र बना उसके अनुसार वी॰बी॰ सिंह थाने में अपने कार्यालय में बैठा हुआ था कि लगभग 9 बजे उसे मकनपुर की तरफ़ से फ़ायरिंग की आवाज़ सुनायी दी । उसे और थाने में मौजूद दूसरे पुलिसकर्मियों को लगा कि गांव में डकैती पड़ रही है ।

आज तो मकनपुर गांव का नाम सिर्फ़ रेवेन्यू रिकार्ड्स में है । आज गगनचुम्बी आवासीय इमारतों, मॉल और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों वाले मकनपुर में 1987 में दूर-दूर तक बंजर ज़मीन पसरी हुई थी । इसी बंजर ज़मीन के बीच की एक चक रोड पर वी॰बी॰ सिंह की मोटर साइकिल दौड़ी । उसके पीछे थाने का एक दारोग़ा और एक अन्य सिपाही बैठे थे । वे चक रोड पर सौ गज़ भी नहीं पहुंचे थे कि सामने से तेज़ रफ़्तार से एक ट्रक आता हुआ दिखायी दिया । अगर उन्होंने समय रहते हुए अपनी मोटर साइकिल चक रोड से नीचे न उतार दी होती तो ट्रक उन्हें कुचल देता । अपना संतुलन संभालते-संभालते जितना कुछ उन्होंने देखा उसके अनुसार ट्रक पीले रंग का था और उस पर पीछे 41 लिखा हुआ था, पिछली सीटों पर ख़ाकी कपड़े पहने कुछ लोग बैठे हुए दिखे । किसी पुलिस कर्मी के लिए यह समझना मुश्किल नहीं था कि पी॰ए॰सी॰ की 41वीं बटालियन का ट्रक कुछ पी॰ए॰सी॰ कर्मियों को लेकर गुज़रा था । पर इससे गुत्थी और उलझ गयी । इस समय मकनपुर गांव में पी॰ए॰सी॰ का ट्रक क्यों आ रहा था ? गोलियों की आवाज़ के पीछे क्या रहस्य था ? वी॰बी॰ सिंह ने मोटर साइकिल वापस चक रोड पर डाली और गांव की तरफ़ बढ़ा । मुश्किल से एक किलोमीटर दूर जो नज़ारा उसने और उसके साथियों ने देखा वह रोंगटे खड़ा कर देने वाला था । मकनपुर गांव की आबादी से पहले चक रोड एक नहर को काटती थी । नहर आगे जाकर दिल्ली की सीमा में प्रवेश कर जाती थी । जहां चक रोड और नहर एक-दूसरे को काटते थे वहां पुलिया थी । पुलिया पर पहुंचते-पहुंचते वी॰बी॰ सिंह के मोटर साइकिल की हेडलाइट जब नहर के किनारे उस सरकंडे की झाड़ियों पर पड़ी तो उन्हें गोलियों की आवाज़ का रहस्य समझ में आया । चारों तरफ़ ख़ून के धब्बे बिखरे पड़े थे । नहर की पटरी, झाड़ियों और पानी के अन्दर ताज़ा ज़ख़्मों वाले शव पड़े थे ।

वी॰बी॰ सिंह और उसके साथियों ने घटनास्थल का मुलाहिज़ा कर अन्दाज़ लगाने की कोशिश की कि वहां क्या हुआ होगा ? उनकी समझ में सिर्फ़ इतना आया कि वहां पड़े

शवों और रास्ते में दिखे पी॰ए॰सी॰ की ट्रक में कोई संबंध ज़रूर है। साथ के सिपाही को घटना स्थल पर निगरानी के लिए छोड़ते हुए वी॰बी॰ सिंह अपने साथी दारोग़ा के साथ वापस मुख्य सड़क की तरफ़ लौटा। थाने से थोड़ी दूर ग़ाज़ियाबाद-दिल्ली मार्ग पर पी॰ए॰सी॰ की 41वीं बटालियन का मुख्यालय था। दोनों सीधे वहीं पहुंचे। बटालियन का मुख्य द्वार बंद था। काफ़ी देर बहस करने के बावजूद भी संतरी ने उन्हें अन्दर जाने की इजाज़त नहीं दी। तब वी॰बी॰ सिंह ने ज़िला मुख्यालय आकर मुझे बताने का फ़ैसला किया। जितना कुछ आगे टुकड़ों-टुकड़ों में बयान किये गये। वृत्तांत से मैं समझ सका उससे स्पष्ट हो ही गया था कि जो घटा है वह बहुत ही भयानक है और दूसरे दिन ग़ाज़ियाबाद जल सकता था।

पिछले कई हफ़्तों से बग़ल के ज़िले मेरठ में सांप्रदायिक दंगे चल रहे थे और उसकी लपटें ग़ाज़ियाबाद पहुंच रहीं थीं। मैंने सबसे पहले ज़िला मजिस्ट्रेट नसीम ज़ैदी को फ़ोन किया। वे सोने ही जा रहे थे। उन्हें जगाने के लिए कहकर मैंने ज़िला मुख्यालय पर मौजूद अपने एडिशनल एस॰पी॰, कुछ डिप्टी एस॰पी॰ और मजिस्ट्रेटों को जगाया और तैयार होने के लिए कहा। अगले चालीस-पैंतालीस मिनटों में सात-आठ वाहनों में लदे-फंदे हम मकनपुर गांव की तरफ़ लपके। नहर की पुलिया से थोड़ा पहले हमारी गाड़ियां खड़ी हो गयीं। नहर के दूसरी तरफ़ थोड़ी दूर पर ही मकनपुर गांव की आबादी थी लेकिन तब तक कोई गांव वाला वहां नहीं पहुंचा था। लगता था कि दहशत ने उन्हें घरों में दुबकने को मजबूर कर दिया था। थाना लिंक रोड के कुछ पुलिसकर्मी ज़रूर वहां पहुंच गये थे। उनकी टार्चों की रोशनी के कमज़ोर वृत्त नहर के किनारे उगी घनी झाड़ियों पर पड़ रहे थे पर उनसे साफ़ देख पाना मुश्किल था। मैंने गाड़ियों के ड्राइवरों से नहर की तरफ़ रुख़ करके अपने हेडलाइट्स ऑन करने के लिए कहा। लगभग सौ गज़ चौड़ा इलाक़ा प्रकाश से नहा उठा। उस रोशनी में मैंने जो कुछ देखा वह वही दु:स्वप्न था जिसका ज़िक्र मैंने शुरू में किया है। गाड़ियों की हेडलाइट्स की रोशनियां झाड़ियों से टकरा कर टूट-टूट जा रहीं थीं इसलिए टार्चों का भी इस्तेमाल करना पड़ रहा था। झाड़ियों और नहरों के किनारे ख़ून के थक्के अभी पूरी तरह से जमे नहीं थे, उनमें से ख़ून रिस रहा था।

पटरी पर बेतरतीबी से शव पड़े थे-कुछ पूरे झाड़ियों में फंसे तो कुछ आधे तिहाई पानी में डूबे। शवों की गिनती करने या निकालने से ज़्यादा ज़रूरी मुझे इस बात की पड़ताल करना लगा कि उनमें से कोई जीवित तो नहीं है। सबने अलग-अलग दिशाओं में टार्चों की रोशनियां फेंक-फेंक कर अन्दाज़ लगाने की कोशिश की कि कोई जीवित है या नहीं। बीच-बीच में हम हांक भी लगाते रहे कि यदि कोई जीवित हो तो उत्तर दे। हम दुश्मन नहीं दोस्त हैं। उसे अस्पताल ले जाएंगे। पर कोई जवाब नहीं मिला। निराश होकर हममें से कुछ पुलिया पर बैठ गये। मैंने और ज़िलाधिकारी ने तय किया कि समय खोने से कोई लाभ नहीं है। हमें दूसरे दिन की रणनीति बनानी थी, इसलिए जूनियर अधिकारियों को शवों को निकालने और ज़रूरी लिखा-पढ़ी करने के लिए कहकर हम लिंक रोड थाने के लिए मुड़े ही थे कि नहर की तरफ़ से खांसने की आवाज़ सुनायी दी। सभी ठिठक कर रुक गये। मैं वापस नहर की तरफ़ लपका। फिर मौन छा गया।

स्पष्ट था कि कोई जीवित था लेकिन उसे यक़ीन नहीं था कि जो लोग उसे तलाश रहे हैं वे मित्र हैं। हमने फिर आवाज़ें लगानी शुरू कीं, टार्च की रोशनी अलग-अलग शरीरों पर डालीं और अंत में हरकत करते हुए एक शरीर पर हमारी नज़रें टिक गयीं। कोई दोनों हाथों से झाड़ियां पकड़े आधा शरीर नहर में डुबोये इस तरह पड़ा था कि बिना ध्यान से देखे यह अन्दाज़ लगाना मुश्किल था कि वह जीवित है या मृत ! दहशत से बुरी तरह वह कांप रहा और काफ़ी देर तक आश्वस्त करने के बाद यह विश्वास करने वाला कि हम उसे मारने नहीं बचाने वाले हैं, जो व्यक्ति अगले कुछ घंटे हमें इस लोमहर्षक घटना की जानकारी देने वाला था, उसका नाम बाबूद्दीन था। गोली उसे छूते हुए निकल गयी थी। भय से वह नि:श्चेष्ट होकर वह झाड़ियों में गिरा तो



भाग दौड़ में उसके हत्यारों को यह जांचने का मौक़ा नहीं मिला कि वह जीवित है या मर गया । दम साधे वह आधा झाड़ियों और आधा पानी में पड़ा रहा और इस तरह मौत के मुंह से वापस लौट आया । उसे कोई ख़ास चोट नहीं आयी थी और नहर से चलकर वह गाड़ियों तक आया । बीच में पुलिया पर बैठकर थोड़ी देर सुस्ताया भी ।

लगभग 21 वर्षों बाद जब हाशिमपुरा पर एक किताब लिखने के लिए सामग्री इकट्ठी करते समय मेरी उससे मुलाक़ात हुई जहां पी॰ए॰सी॰ उसे उठा कर ले गयी थी तो उसे याद था कि पुलिया पर बैठे उसे किसी सिपाही से मांग कर बीड़ी दी थी । बाबूद्दीन ने जो बताया उसके अनुसार उस दिन अपरान्ह तलाशियों के दौरान पी॰ए॰सी॰ के एक ट्रक पर बैठाकर चालीस पचास लोगों को ले जाया गया तो उन्होंने समझा कि उन्हें गिरफ़्तार कर किसी थाने या जेल ले जाया जा रहा है । मकनपुर पहुंचने के लगभग पौन घंटा पहले एक नहर पर ट्रक को मुख्य सड़क से उतारकर नहर की पटरी पर कुछ दूर ले जाकर रोक दिया गया । पी॰ए॰सी॰ के जवान कूद कर नीचे उतर गये और उन्होंने ट्रक पर सवार लोगों को नीचे उतरने का आदेश दिया । अभी आधे लोग ही उतरे थे कि पी॰ए॰सी॰ वालों ने उन पर फ़ायर करना शुरू कर दिया । गोलियां चलते ही ऊपर वाले गाड़ी में ही दुबक गये । बाबूद्दीन भी उनमें से एक था । बाहर उतरे लोगों का क्या हुआ वह सिर्फ़ अनुमान ही लगा सकता था । शायद फ़ायरिंग की आवाज़ आसपास के गांवों में पहुंची जिसके कारण आसपास से शोर सुनायी देने लगा और पी॰ए॰सी॰ वाले वापस ट्रक में चढ़ गये । ट्रक तेज़ी से बैक हुआ और वापस ग़ाज़ियाबाद की तरफ़ भागा ।

यहां वह मकनपुर वाली नहर पर आया और एक बार फिर सबसे उतरने के लिए कहा गया । इस बार डर कर ऊपर दुबके लोगों ने उतरने से इन्कार कर दिया तो उन्हें खींच-खींचकर नीचे घसीटा गया । जो नीचे आ गये उन्हें पहले की तरह गोली मारकर नहर में फेंक दिया गया और जो डर कर ऊपर दुबके रहे उन्हें ऊपर ही गोली मारकर नीचे ढकेला गया । बाबूद्दीन जब यह विवरण बता रहा था तो हमने पहले घटना स्थल का अन्दाज़ लगाने की कोशिश की । किसी ने सुझाव दिया कि पहला घटना स्थल मेरठ से ग़ाज़ियाबाद आते समय रास्ते में मुरादनगर थाने में पड़ने वाली नहर हो सकती है । मैंने लिंक रोड थाने के वायरलेस सेट से मुरादनगर थाने को कॉल किया तो स्पष्ट हुआ कि हमारा सोचना सही था । कुछ देर पहले ही मुरादनगर थाने को भी ऐसी ही स्थिति से गुज़रना पड़ा था । वहां भी कई मृत शव नहर में पड़े मिले थे और कुछ लोग जीवित थाने लाये गये थे ।

इसके बाद की कथा एक लंबा और यातनादायक प्रतीक्षा का वृत्तांत है जिसमें भारतीय राज्य और अल्पसंख्यकों के रिश्ते, पुलिस का ग़ैर-पेशेवराना रवैया और घिसट-घिसट कर चलने वाली उबाऊ न्यायिक प्रणाली जैसे मुद्दे जुड़े हुए हैं । मैंने 22 मई 1987 को जो मुक़दमे ग़ाज़ियाबाद के थाना लिंक रोड और मुरादनगर पर दर्ज कराये थे वे पिछले 21 वर्षों से विभिन्न बाधाओं से टकराते हुए अभी भी अदालत में चल रहे हैं और अपनी तार्किक परिणति की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

–विभूति नारायण राय

आदमी पर निशाना आदमी पर गुलेल

छुकछुक कर चलती भ्रष्टाचार की रेल ।
देश की संसद अब मदारी का खेल ।।

चटनी है रोटी नहीं तो रोटी है चटनी नहीं,
कभी तो रोना गैस का कभी क़िल्लत तेल ।

सारे रहजन यहां रहबर कहलाते हैं,
हाथों में उनके गणतंत्र की है नकेल ।

फंसी राजनीति के भंवर में भंवरी,
पसरी सत्ता पर अय्याशी की अमर बेल ।

चलो ढूंढ़ इक नया आसमां अब यारो,
आदमी पर निशाना आदमी की गुलेल ।

लगी हुई नुमाइश बाज़ार में यहां,
मोल-भाव आबरूओं की बम्फर सेल ।

सिखाओ ज़रा अंगारों को दहकना,
काफ़ी है एक फूंक श्वांस तो उड़ेल ।

डॉ॰ अमर सिंह
(मोती महल, आगरा)

भक्ति बनाम व्यापार

❖ चंपा नुनिया
(हिन्दी विभाग, असम वि॰वि॰, सिलचर)

भारत एक बहुधार्मिक देश है, यहां हर संप्रदाय में धर्म सर्वोपरि है । चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई । हर कोई अपने धार्मिक भावनाओं को अपने अनुसार अभिव्यक्त करता है । धर्म हमारी परंपरा तथा पारिवारिक-सामाजिक संस्कार से जुड़ा हुआ है । धर्म आंतरिक श्रद्धा का विषय है, परन्तु आज यह हमारे अंतर की भावना नहीं बल्कि व्यवसाय की एक 'वस्तु' बन गयी है और इसे भक्ति से 'वस्तु' बनाने के पीछे कुछ विशेष शक्तियों का हाथ है जिसमें मीडिया और सामाजिक धर्म संस्थाओं का प्रमुख स्थान है । साथ ही कुछ राज़नीतिक तथा पूंजीपति भी नेटवर्क की तरह इससे जुड़े हुए हैं ।

मीडिया : मीडिया की अपनी एक विशेष भूमिका है । मीडिया के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति ने वर्तमान समय को सूचना क्रांति के युग के रूप में परिभाषित किया है । व्यवसाय, उद्योग, वाणिज्य का विकास तथा मीडिया के प्रगति में गहरा अंतर्संबंध है । जैसे-जैसे व्यावसायिक जगत का विकास होता है लोगों की अपेक्षाओं के अनुरूप इसके माध्यमों के नवीन स्वरूपों की खोज एवं उनका विस्तार होता है । वर्तमान में व्यावसायिक विकास एवं मीडिया एक-दूसरे के पूरक हैं । आज उन्नति के जिस चरमोत्कर्ष पर यह पहुंचा है, इसका श्रेय हमारे समाज को जाता है । अतः मीडिया से हमारे धार्मिक भावनाओं के जोड़, इसे एक नये रूप में जन-जन तक पहुंचाने का ज़रिया भी मनुष्य ने ही बनाया है । मीडिया मात्र सूचनाओं का आदान-प्रदान नहीं है, व्यापक समझ, धारणा, निर्माण तथा आपसी सहमति का विकार इसकी विशेषताएं हैं ।

संचार माध्यम से हम धार्मिक संगीत, भजन-कीर्तन देख और सुन पाते हैं तथा अनेक आध्यात्मिक पुस्तकें भी अब इंटरनेट में उपलब्ध है, परन्तु इसके कारण जो कलह समाज में उत्पन्न हो रहे हैं उनमें अंधविश्वास और साम्प्रदायिकता प्रमुख है । कुसंस्कार सदियों से हमारे समाज में प्रचलित है और आज इनको बढ़ावा देने में मीडिया का बहुत बड़ा हाथ है । कहने को तो हम आधुनिक काल में है पुरानी परंपराओं का, रूढ़ियों को पीछे छोड़ एक आधुनिक सभ्य समाज में परन्तु अपने विचारों को, अपने विश्वास को, अपने आपको क्या हम सच में आधुनिक कर पाये हैं ? अगर किये होते तो 'मानव मूल्य की रक्षा' तथा धर्म 'हिंसा' और 'व्यापार' बन एक प्रश्न के रूप में आज हमारे सामने नहीं आता ।

कहीं मंदिर जला दिया गया, तो कहीं मस्जिद, कहीं मुसलमानों के बहू-बेटियों को हिन्दुओं ने छेड़ा, तो कहीं हिन्दुओं को मुसलमानों ने, चाहे कोई भी चोरी क्यों न हो हमेशा शक दूसरे संप्रदाय के लोगों पर ही किया जाता है । इस तरह की ख़बरें खेत में लगी आग की तरह मीडिया के द्वारा फैल जाती है, जिससे एक राज्य की हिंसा दूसरे राज्य के शांति को भी भंग कर देती है । लोग इन सब बातों को जाने, जागरूक बने यह सही है, परंतु जानने और समझने में बहुत अन्तर होता है । जो ख़बरें दिखायी जा रही हैं वे किस हद तक सच हैं, इसका विचार प्रायः कम किया जाता है और आम जनता के आन्दोलित मन को शांत करने के बजाय उसे दंगे करने में बढ़ावा देते हैं कुछ राजनीतिक दल ।

साम्प्रदायिक लोग अपने धर्म की रक्षा के लिए अलग-अलग प्रतीक लिए धर्म की रक्षा के बहाने एक-दूसरे का गला काटने में भी नहीं कतराते । जिसका अनेक उदाहरण हम इतिहास के पन्नों में देखते हैं । चाहे कोई किसी भी मूल्क में क्या न हो, पर साम्प्रदायिकता का जो घृणित भाव धर्म के ठेकेदारों ने हमारे मन में उत्पन्न कर रखा है उसका परिणाम आज तक हमें भुगतना पड़ रहा है । 1934 ई॰ से समाजवाद हमारे देश में प्रचलित है परन्तु यह एक सिद्धांत बनकर ही रह गया है प्रचलन में तो आज भी जातिवाद का ही बोलबाला है ।

जहां तक धर्म के प्रचार में मीडिया के द्वारा प्रचलित हिंसा और अंधविश्वास का सवाल है तो इसके बारे में यही

कहना है कि सबसे पहले हमें अपने विचारों में, अपने स्वभाव में, अपने चिंतन और अपने सोच में परिवर्तन लाना होगा जिससे हम सही और ग़लत की पहचान कर सके, किसी ढोंगी-प्रपंची, किसी नेता के हाथों की कटपुतली न बने, जब तक हमारी सोचने-समझने की शक्ति सही तरह विकसित नहीं होगी, मानवीय दृष्टि से औरों को देखने की दृष्टि विकसित नहीं होगी, तब तक हम ऐसे हिंसा के शिकार होते रहेंगे ।

सामाजिक, धार्मिक संस्थाएं : इन संस्थाओं के दो रूप होते हैं, जैसे साधारणत: यही देखा जाता है कि इनमें प्रभु भक्ति में लीन कुछ धर्माचार्य होते हैं जो दिन रात भगवान की सेवा करते हैं । पूजा-आरती, भजन-कीर्तन, धर्मानुष्ठान करना ही उनकी दिनचर्या होती है । दूसरी ओर गीता का उपदेश देने वाले इन धर्माचार्यों में कुछ ऐसे भी पाखंडी आचार्य, गुरु, पंडित के नाम पर पूंजीवाद का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति भी हैं जिनके कारण आज प्राय: मासूम और सहृदय व्यक्ति इनके झांसे में फंसकर धन के साथ अपना मान भी गंवा देते हैं । जीवन के कठिन परिस्थितियों से विचलित लोग इन साधु-संन्यासियों के चक्कर में अपने घर की इज़्ज़त तक अनजाने दांव पर लगा देते हैं और भगवान का नाम बेचकर ऐसे ही कुछ लोग फुटपाथ से फ्लेटों तक पहुंच जाते हैं ।

आज धर्म व्यवसाय और धर्माचार्य व्यावसायिक बने हुए हैं । चाहे समाचार पत्र हो, पत्रिका हो, टी०वी० चैनल हो या कोई संस्था सब धर्म के आड़ में अपने-अपने व्यवसाय के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं । जहां भक्ति और श्रद्धा की बात होती है, वहां दिखावे तथा चढ़ावे का महत्व नहीं रहता । लोग भूखों मर रहे हैं और कई ए०सी० में बैठकर, हज़ारों का टिकट देकर, अपना रेट फ़िक्स कर धर्म का प्रचार कर रहे हैं, अपनी संस्था का प्रतीक लगाकर साबुन, तेल, शैम्पू, क्रिम आदि विभिन्न प्रकार के द्रव का व्यवसाय कर रहे हैं । क्या इसे ही भक्ति कहा जाता है ।

मोह-माया को त्यागने का प्रवचन देने वाले स्वयं दिन-ब-दिन अपना बैंक बैलेंस बढ़ाने में लगे हुए हैं । धर्म के आड़ में न जाने कितने ग़ैर-क़ानूनी काम करते हैं । इन पाखंडियों को जब कोई बेनक़ाब करने को आवाज़ उठाता है, तो उनके कुछ राजनीतिक सहायक इसे साम्प्रदायिकता से जोड़ते हुए धार्मिक हिंसा का रूप देते हैं । कई बार तो ऐसा देखा जाता है कि दिन को साधुता का ढोंग करने वाले रात को नशे में चूर रहते हैं । धर्मास्थान इनके व्यापार का अड्डा बना हुआ है, क्योंकि आस्था पर सहज ही कोई शक नहीं करता और इस व्यवसाय में कभी घाटे का डर भी तो नहीं रहता, कम हो या ज़्यादा आमदनी तो होनी ही है । दिन-दहाड़े सबके सामने ऐसे लोग मासूम लोगों को बेवक़ूफ़ बनाते हैं । ज्ञानवानों को तो सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय, धन-ऐश्वर्य की तुलना नहीं करनी चाहिए, तो क्यों इनका ध्यान चढ़ावे की ओर अधिक रहता है ?

अगर गुरु को उसका गुरु दक्षिणा देना आवश्यक है, परन्तु गुरु में गुरुत्व भी तो होना चाहिए । जहां चित्त ईश्वर का ध्यान एकनिष्ठ भाव से करता है वहीं योग है चाहे किसी भी रूप में क्यों न हो कर्म, ज्ञान, ध्यान, भक्ति । जहां शर्त के आधार पर पूजाष्ठान की जाती है या करवाई जाती है, वहां मन ईश्वर के प्रति एकाग्र नहीं होता और जहां ईश्वर के प्रति समर्पण न हो, तो वह पूजा ही व्यर्थ है ।

आज की नयी पीढ़ी तथा आधुनिकता के औज़ारों के कारण कितना ही इन ढोंगी-प्रपंचियों का पर्दाफ़ाश क्यों न हो जाए, अंधानुकरण करने वालों को समझाना मुश्किल है । अगर आज धर्म के नाम पर वाणिज्य करने वाले व्यावसायिक समाज में उच्च पद के अधिकारी बने हुए हैं तो इसके ज़िम्मेदार उनसे ज़्यादा हम हैं, क्योंकि हमने ही उन्हें व्यवसाय करने का बाज़ार दे रखा है । जिसका प्रमुख कारण है हमारा 'अंधविश्वास' । अपने अंतर-भक्ति के दीपक को कोई बुझाने को नहीं कह रहा । उदारता, सहृदयता, परोपकार, सद्भाव भक्ति के ही विशिष्ठ लक्षण हैं । गेरुया वस्त्र धारण ही ईश्वर की आराधना नहीं । अगर कोई संसार में व्यस्त रहकर भी मन से प्रभु चरणों में अर्पित है, तो वही सच्चा भक्त है । स्वर्ग का टिकट दिलाने वाले इन पाखंडियों से बचे, भगवान दिखावे और चढ़ावे के भूखे नहीं हैं । कल्याण हेतु सबसे पहले हमें मनुष्यत्व प्राप्त करना होगा, जिसे हमने अपने कदाचार के कारण खो दिया है और अंधविश्वास-अंधानुकरण के स्रोत में बहते जा रहे हैं । अभी भी देर नहीं हुई है, अभी भी 'सत्य' के प्रकाश से प्रकाशित किया जा सकता है । हम एक जागरूक नागरिक बन त्याग, समानता, सदाचार, परोपकार, सद्भाव, सत्य के प्रकाश से अपने अंतरमन के अंधकार को दूर कर प्रभु के प्रति स्वयं को समर्पित कर स्वच्छ समाज की कल्पना को साकार कर सकते हैं ।

अनुचित बयानबाज़ियों से आहत मुसलमान

● डॉ॰ मुहम्मद अहमद

मोदी सरकार के आने के बाद चाहे कुछ ख़ास बदलाव न आया हो, मगर यह सच है कि समाज में अनर्गल-अनुचित बातों और उलटबांसियों का प्रकोप बढ़ रहा है, जिसके कारण जनता को ग़ैर-ज़रूरी ज़ेहनी परेशानियों और उलझनों का सामना करना पड़ रहा है। इनमें कुछ लोग बड़े निष्णात और माहिर हो गये लगते हैं। इनके ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई का न होना वाक़ई चिंताजनक है। इनमें भाजपा नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी का कोई सानी नहीं है। उनके नित नये आपत्तिकर बयान नित नयी समस्या बनते रहते हैं। अब उन्होंने फिर एक अशांतिकारक, भड़काने वाला, सरासर ग़लत बयान यह दिया है कि मस्जिद धार्मिक स्थल नहीं, अपितु एक सामान्य बिल्डिंग होती है, जिसे कभी भी तोड़ा जा सकता है। स्वामी ने अपने बयान को आगे बढ़ाते हुए सऊदी अरब का एक उदाहरण पेश किया, जहां सड़कें बनाने के लिए मस्जिदों को ज़मींदोज़ कर दिया गया था। वे पिछले हफ़्ते असम में एक यूनीवर्सिटी के कार्यक्रम में बोल रहे थे।

उन्होंने यह भी कहा कि, "अगर कोई मेरे विचार से असहमत है तो मैं इस मुद्दे पर उसके साथ बहस करने को तैयार हूं। मुझे यह जानकारी सऊदी अरब के लोगों से मिली।' स्वामी ने यह बात भी कही कि भारतीय मुसलमान पहले हिन्दू थे। ज़ाहिर है, स्वामी का यह बयान बहुत विवादकारी है। इस पर विवाद अभी थमा भी नहीं था कि साध्वी निरंजन ज्योति ने मुस्लिम इबादत पद्धति को हिन्दू संस्कृति का ही एक हिस्सा बताकर एक नया बखेड़ा खड़ा कर दिया है।

यह वही साध्वी हैं, जिन्होंने बार-बार मुस्लिम विरोधी बयान दिये हैं, लेकिन क़ानून ख़ामोश तमाशाई बना रहा है। सभी को हिन्दुत्व की छतरी के नीचे लाने के गुप्त एजेंडे के तहत साध्वी ने यह अवांछित बयान भी दिया कि 'भारत की संस्कृति ऐसी है, जो सभी का समावेश करती है। हमारे जैनियों की पूजा पद्धति अलग है, गुरुद्वारे की पूजा पद्धति अलग है। संतों में भी कोई रामानुज को मानता है तो कोई वल्लभाचार्य को। उसी तरह से हम मुस्लिमों की पूजा पद्धति को भी नहीं नकारते। इसमें भी हम भगवान के दर्शन करते हैं।' स्पष्ट है, स्वामी और साध्वी दोनों के ये बयान निंदनीय और हक़ीक़त से कोसों दूर हैं। इसलिए लोगों के गुस्से और विरोध का औचित्य सभी की समझ में आ सकता है। स्वामी के बयान का असम में ज़बरदस्त विरोध हुआ है और उनके ख़िलाफ़ मामला भी दर्ज किया गया है। असम के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने विगत 15 मार्च को स्वामी के उक्त बयान के बाद राज्य में उनके प्रवेश पर रोक लगाने पर विचार करने की बात कही है।

गोगोई ने जोरहाट में एक प्रोग्राम से अलग कहा, 'उनकी टिप्पणियां पूरी तरह से एक समुदाय का अपमान करने वाली हैं। हम कार्रवाई करेंगे। अगर उन्होंने ऐसी बातें करना जारी रखा तो हम असम में उनके प्रवेश पर रोक लगा देंगे।' मुख्यमंत्री ने स्वामी के लगातार विवादित टिप्पणियां करने की बात कहते हुए इस पर आश्चर्य जताया कि भाजपा उन पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं कर रही है। असम पुलिस ने कृषक मुक्ति संग्राम समिति (के॰एम॰एस॰एस॰) की छात्र शाखा छात्र मुक्ति संग्राम समिति की एक शिकायत के आधार पर गुवाहाटी के लतासील पुलिस थाने में आई॰पी॰सी॰ की प्रभावी धाराओं के तहत स्वामी के ख़िलाफ़ एक एफ॰आई॰आर॰ दर्ज की। के॰एम॰एस॰एस॰ ने राज्य में स्वामी के प्रवेश पर तत्काल रोक लगाने की मांग की 'ताकि असम में कोई सांप्रदायिक तनाव न हो।'

दलीय भावना से ऊपर उठते हुए कई संगठनों और दलों ने स्वामी के बयान की निंदा की है। मुस्लिम आलिमों और विद्वानों ने मस्जिद के धार्मिक इमारत नहीं होने और उसे किसी भी समय ढहाने को उचित ठहराने के भाजपा नेता स्वामी के बयान की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार की नाकामियों से ध्यान हटाने के लिये दिये गये इस बयान को ज़्यादा तवज्जो देने की ज़रूरत नहीं है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के महासचिव

मौलाना निज़ामुद्दीन ने स्वामी के बयान से असहमति जताते हुए कहा कि "हम इस बयान से क़तई सहमत नहीं हैं । बाक़ी मज़हबों की इबादतगाहों की तरह मस्जिदें भी धार्मिक स्थल हैं ।

हमारे मुल्क में 800 बरस इस्लामी हुकूमत रही, लेकिन किसी भी बादशाह ने कोई मस्जिद नहीं ढहाई । अगर मस्जिद धार्मिक स्थल न होती या उसे गिराने की कोई गुंजाइश होती तो मस्जिद गिराने के कई उदाहरण इतिहास में दर्ज होते ।" उन्होंने कहा कि सऊदी अरब में शासक किसी ज़रूरी निर्माण कार्य के लिये मस्जिद ढहाने की मजबूरी की स्थिति में पहले दूसरी जगह पर मस्जिद बनवाता है । फिर मस्जिद को ढहाता है । मौलाना ने कहा कि सऊदी अरब का अपना तरीक़ा होता है । स्वामी को अगर बराबरी ही करनी है तो वह सऊदी अरब के नियमों को यहां लागू कराएं । सारी दुनिया को मालूम है कि वहां चोरी करने पर हाथ काटा जाता है और क़त्ल या भ्रष्टाचार करने पर सिर क़लम किया जाता है ।

अस्ल बात यह है कि सरकार की नाकामियों पर से ध्यान हटाने के लिये स्वामी द्वारा दिये गये इस बयान को तवज्जो देने की ज़रूरत ही नहीं है । शिया नेता मौलाना यासूब अब्बास ने भी स्वामी के बयान पर कड़ा एतिराज़ ज़ाहिर करते हुए कहा कि मस्जिद कोई साधारण इमारत नहीं है बल्कि अल्लाह का घर है, जिसे किसी भी हाल में ढहाया नहीं जा सकता है । इस्लामी शोध संस्थान शिबली एकेडमी आज़मगढ़ के उपप्रमुख मौलाना उमैर-अल-सिद्दीक़ ने कहा "हमारा मानना है कि जो लोग सऊदी अरब, पाकिस्तान, सीरिया और सूडान का नाम लेना भी गवारा नहीं करते, वे अपनी बात के समर्थन में उनका हवाला दे रहे हैं । उन्होंने कहा, "हमें हंसी आती है कि लोग ऐसे फ़िज़ूल के बयानों को लेकर टेलीविज़न पर बहस करने चले आते हैं । यह बड़ी सच्चाई है कि जहां मस्जिद बन जाती है वह क़यामत तक मस्जिद ही रहती है । यह इस्लामी उसूल है ।"

मौलाना ने कहा कि अगर सऊदी अरब सरकार कोई ग़लत काम करती है तो हम उसके पदचिन्हों पर नहीं चल सकते । वहां तो गुनाह की सज़ा के तौर हाथ और गला काट दिया जाता है, लेकिन हमारे मुल्क में उस क़ानून को नहीं माना जाता । अत: मस्जिद तोड़ने के लिए तो हवाला देना ही ग़लत है । ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (ए०ए०एस०यू०), ऑल असम माइनॉरिटी स्टूडेंट्स यूनियन (ए०ए०एम०एस० यू०) और ऑल बोडोलैंड माइनॉरिटी स्टूडेंट्स यूनियन (ए०बी०एम० एस०यू०) समेत कई दूसरे छात्र संगठनों ने कड़ाई से स्वामी के बयान की निंदा की और गुवाहाटी, कोकराझाड़ में स्वामी के साथ असम बी०जे०पी० के अध्यक्ष सिद्धार्थ भट्टाचार्य के पुतले जलाए । विरोध के बाद असम भाजपा अध्यक्ष भट्टाचार्य को कहने के लिए बाध्य होना पड़ा कि 'यह उनकी निजी राय है और पार्टी इसका समर्थन नहीं करती ।' इतना ही काफ़ी नहीं, ऐसे लोगों के ख़िलाफ़ कड़ी कार्रवाई की जाए ।

डर

(1)

टूट गया
एक शीशा और,
बिखर गया कांच
धरती की चादर पर ।
कौन समेटे ?
सबको
अपने-अपने
हाथों का डर है ।

शायद

(1)

पहाड़ी पर
चढ़ती बस के
अधजले
धुएं जैसी
हैं–हमारी इच्छाएं
इसीलिए शायद
जीवन की गाड़ी
कुछ भारी चलती है ।

विष्णु सक्सेना
बी 2/29ए धर्मपुर कॉलोनी, पिंजौर,
हरियाणा-134102

आनुवंशिक रोग है थैलेसीमिया

● डॉ॰ अनुराग कुमार श्रीवास्तव

थैलेसीमिया एक ऐसा आनुवंशिक रक्त विकार है जिसमें रोगी के शरीर में लाल रक्त कण तथा हीमोग्लोबिन की मात्रा सामान्य अवस्था से भी कम हो जाती है । वस्तुत: मानव शरीर में आक्सीजन का परिवहन तथा संचरण करने के लिए हीमोग्लोबिन नामक प्रोटीन की आवश्यकता पड़ती है और यदि यह न बने या सामान्य आवश्यकता से भी कम बने तो इस परिस्थिति में बच्चे के थैलेसीमिया रोग से ग्रसित होने की आशंका अधिक रहती है । जिसका चिकित्सकीय प्रयोगशाला में रक्त परीक्षण के पश्चात ही पता चल सकता है । शिशु में इसकी पहचान तीन माह की अवस्था के बाद ही होती है । बीमार बच्चे के शरीर में रक्ताल्पता के कारण उसे बार-बार ख़ून चढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है । रक्ताल्पता के कारण उसके शरीर में लौह तत्व अधिक मात्रा में उत्पन्न होने लगता है जो हृदय, यकृत तथा फेफड़ों में प्रविष्ट होकर उन्हें क्षतिग्रस्त और दुष्प्रभावित कर देता है । जो अंतत: प्राणघातक साबित होता है । म्यूटेशन के प्रभाव के आधार पर थैलेसीमिया को दो प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है । पहला मेजर तथा दूसरा माइनर । मेजर थैलेसीमिया में रोगी को बार-बार ख़ून चढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है, जबकि माइनर एक प्रकार से थैलेसीमिया जीन के वाहक का कार्य करता है । इसलिए विवाह के दौरान रक्त परीक्षण के माध्यम से यह पता चल सकता है कि जीवन साथी में थैलेसीमिया जीन का वाहक है अथवा नहीं ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में प्रति वर्ष आठ से दस हज़ार थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों का जन्म होता है । आंकड़ों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या का लगभग साढ़े तीन प्रतिशत भाग थैलेसीमिया ग्रस्त है । इंग्लैंड में केवल 350, पाकिस्तान में एक लाख तथा भारत में लगभग 10 लाख बच्चे इस रोग से पीड़ित हैं । यदि माता-पिता दोनों में माइनर थैलेसीमिया है तो बच्चों को यह बीमारी होने की 25 फ़ीसद आशंका रहती है ।

इस रोग के चेहरे का शुष्क रहना, चिड़चिड़ापन, भूख न लगना, वज़न न बढ़ना, सामान्य विकास में विलंब प्रमुख लक्षण हैं । सुक्ष्मदर्शी यंत्र (माइक्रोस्कोप) की सहायता से रक्त परीक्षण के समय लाल रक्त कण की संख्या में कमी तथा उसके बदलाव की जांच से इस बीमारी को पकड़ा जा सकता है । कम्पलीट ब्लड् काउंट से एनीमिया का पता चलता है । इसी प्रकार हीमोग्लोबीन इलेक्ट्रोफ़ोरेसिस से असामान्य हीमोग्लोबीन की स्थिति की जानकारी होती है । म्यूटेशन एनालिसिस टेस्ट के ज़रिये अल्फ़ा थैलीमिया के जांच के संबंध में जानकारी की जा सकती है । थैलेसीमिया पीड़ित व्यक्ति के इलाज में बाहरी ख़ून चढ़ाने तथा औषधियों की आवश्यकता पड़ती है, जिसमें लापरवाही बरतने पर 12 से 15 वर्ष की आयु के मध्य बच्चों की मृत्यु हो जाती है । इस रोग में बोनमैरो ट्रांसप्लांट के साथ ही स्टेमलेस के ज़रिये भी इलाज लाभप्रद होता है । इस रोग के प्रति जनजागरूकता भी आवश्यक है ।



अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

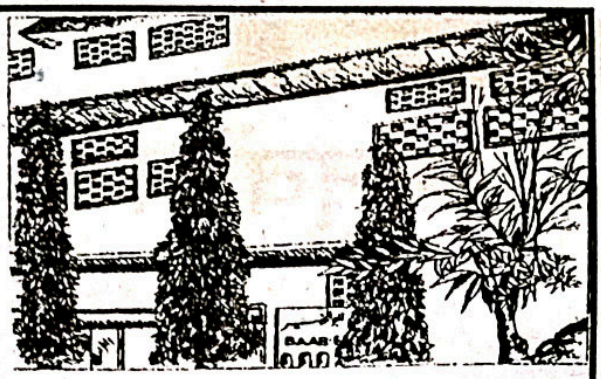

एक दृष्टि में

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

• 29 वर्षीय सेवाएं • 19 विभाग • शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक • पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science • 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया • प्रौढ़ शिक्षा • वोकेशनल सेन्टर • कटिंग और सिलाई: 8 बैच 88 छात्राएं • ज़री वर्क्स : 5 बैच 53 छात्राएं • 1993 ई॰ से 2014 ई॰ तक 75 अनाथ बच्चियों और 51 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया • वार्षिक ख़र्च : 30 लाख रुपये से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है • किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 16,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : • ज़कात • सदक़े • अतिया • पैदावार की ज़कात • दीनी किताबें • ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी • स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक • मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना • यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । • इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKINGA/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां (Ph. : 09934480190)

(1)

मक्कार

■ मनजीत शर्मा 'मीरा'

(चंडीगढ़)

"तुझसे झुककर झाड़ू नहीं लगती...? खड़े-खड़े आगे-आगे ही लगा देती है । पोंछा भी खड़े-खडे लगा लिया कर । सोफ़े, मेज और पलंग के नीचे हमेशा कचरा छोड़ देती है । महारानी, बर्तन भी इतने गंदे धोती है कि जो भी गिलास-कटोरी उठाओ उसी में विम लगा मिलता है । छुट्टियां भी इन्हें चाहिएं, पैसे भी पूरे चाहिएं...।"

पचास वर्षीया कामवाली पर पत्नी आज फिर झल्लाई तो कामवाली का भी मुंह खुल गया–"दस घरों में काम करती हूं, बीवी जी । घुटनों में दर्द रहता है । बैठकर झाड़ू लगाती हूं तो बार-बार उठना मुश्किल हो जाता है । और बर्तन तो मैं ध्यान से ही धोकर रखती हूं । रह गया होगा जल्दी-जल्दी में...आगे से ध्यान रखूंगी ।"

"नहीं, अगर तेरे से काम होता नहीं है तो करती क्यों है इतने घरों में काम ? उतने ही घर पकड़ जहां सबका काम ढंग से निपटा सके...।" पत्नी बड़बड़ाती हुई रसोई में चली गयी ।

काम वाली ने माथे का पसीना पोंछते हुए अपनी सांसों को दुरुस्त किया और पोछा लगाने लगी । पर पत्नी को आज चैन नहीं था । तमककर रसोई से काफ़ी का मग लेकर आ गयी जिसके तले में विम लगा रह गया था–"देख ये... कितना साबुन लगा है नीचे । अभी तो और बर्तन निकालूंगी तो उन पर भी तेरा हुनर दिख जाएगा...।" पत्नी का गुस्सा उस अधेड़ काम वाली पर आज पूरे शबाब पर था ।

"कोई बात नहीं बीवी जी, आपने नहीं कराना काम तो रहने दें । इतना भी बुरा काम नहीं करती मैं...।" और अपना हिसाब-किताब लेकर काम वाली तो चलती बनी ।

अब घर में कामवाली नहीं है । पत्नी को दफ़्तर जाना होता है तो वह सुबह सफ़ाई नहीं करती । शाम को थकी हुई लौटती है तो ऐसे ही मोटा-मोटा कचरा सामने से बहार देती है । पोंछा तो लगाती ही नहीं । ऑफ़िस जाने की जल्दी में उससे भी बर्तनों पर विम लगा रह जाता है और मैं चाहकर भी उसे दिखा नहीं पाता । मैं इस बात को अच्छी तरह समझता हूं कि एक नौकरीपेशा औरत के लिए सब कुछ सुचारू रूप से चलाना कितना मुश्किल कार्य है ।

"इन प्राइवेट कंपनियों को भी सरकार की तरह मेटरनिटी लीव बढ़ा देनी चाहिए । छह माह का बच्चा कितना छोटा होता है । अब छुट्टियां करूंगी तो विदाउट पे ही होंगी । फिर घर कैसे चलेगा ? बॉस भी नकचढ़ा है । मेरी नोटिंग-ड्राफ्टिंग में हमेशा कांट-छांट करता रहता है । जितना भी ठीक लिखो उसे मेरा लिखा कोई लेटर पसन्द ही नहीं आता । अब जब उसने काटपीट करनी ही है तो मैं क्यों अपना दिमाग़ खपाऊं । अपनी सीट अप-टू-डेट रखो तो दूसरों का काम सौंप देता हैं । कंप्यूटर पर बैठे-बैठे वैसे ही गर्दन अकड़ जाती है । जितना होता है, जैसे होता है, करती हूं । दूसरी तरफ़ ये कंपनी के क्लाइंट । शिकायतों पे शिकायतें करके 'ईमेल' भेजते रहते हैं । मैं भी फिर बिना अटेंड किये 'डिलीट' कर देती हूं । और जो अटेंड करती भी हूं उसमें भी 'टरकोलॉजी' का सिद्धांत अपनाती हूं । न ऑफ़िस जाने का मन करता है और न काम करने का । बीस हज़ार रुपये वेतन के मिलते हैं बस यही मजबूरी है । वरना कोई और कंपनी इतने काम के दस हज़ार से ज़्यादा नहीं देगी ।" अपने ऑफ़िस के प्रति रोष से भरी हुई पत्नी बुड़बुड़ाती जा रही थी ।

मुझे याद है कि जब हमारी पुरानी कामवाली के बच्चा हुआ था तो हमने उसे काम से हटा दिया था । तीन माह बाद जब वह दोबारा आयी थी तो उसे इसलिए काम पर नहीं रखा था कि बच्चा छोटा है और वह छुट्टियां ज़्यादा करेगी । कामवाली के बीमार पड़ने पर भी पत्नी उस पर हमेशा किसी और को घर भेजने का दबाव बनाए रखती थी ।

"आज शाम को एक कामवाली आएगी । बात कर लेना उससे...। गुप्ता जी के यहां काम करती है । कम से कम घर के काम में तो तुम्हें मदद मिल जाएगी । जैसा भी

करेगी, ठीक है...।'' मैंने पत्नी को समझाया ।

''मुझे पसन्द नहीं आता इनका काम...।'' वह फिर तैश में आ गयी ।

कभी किसी औरत को दूसरी औरत का काम पसन्द आया है ? मैंने मन ही मन सोचा पर बोला नहीं ।

''दस-दस घरों में मजबूरीवश काम करती हैं । शरीर साथ नहीं देता तो मक्कारी करती हैं । और फिर इन्हें तो अपने परिवार से भी सहयोग नहीं मिलता ।'' मैंने शांत रहते हुए पत्नी को फिर समझाया ।

''तुम नहीं जानते, सारी की सारी मक्कारी होती हैं ।'' कहकर पत्नी बच्चे को गोद में उठाकर बहलाने लगी ।

और मैं अंतर्मन के शब्दकोष में 'मक्कार' शब्द के सही मायने तलाशने में जुट गया ।

(2)

पोते की ज़रूरत

जब नताशा के पहली लड़की हुई तो सास-ससुर ने अपने हाथों से पूरे मुहल्ले में मिठाइयां बांटी । सभी खुश थे । नताशा भी खुश थी क्योंकि उसके परिवार ने बेटा-बेटी में फ़र्क़ नहीं किया और उनका प्यार नताशा के लिए वैसा ही रहा जैसा पहले था ।

एक वर्ष बाद नताशा फिर मां बनी । इस बार फिर उसे लड़की हुई । सारा परिवार उदास हो गया । अब उसके परिवार वाले नताशा से प्यार करना तो दूर की बात, उससे ठीक से बात भी नहीं करते थे । उसकी सास कह रही थी, ''पहला बच्चा लड़की हुई तो हमने स्वीकार किया था, लेकिन दूसरा बच्चा तो लड़का ही होना चाहिए था । एक पोती तो हमारी पहले ही है, अब हमें पोते की ज़रूरत है, पोतियों की नहीं ।''

अमित कुमार लाडी

डोडा स्ट्रीट, फ़रीदकोट-151203, पंजाब

(3)

ऊंचाई

पिताजी के अचानक आ धमकने से पत्नी तमतमा उठी, ''लगता है बूढ़े को पैसों की ज़रूरत आ पड़ी है, वर्ना यहां कौन आने वाला था । अपने पेट का गड्ढ़ा भरता नहीं, घर वालों का कुंआ कहां से भरोगे ?'' मैं नज़रें बचाकर दूसरी ओर देखने लगा ।

पिताजी नल पर हाथ-मुंह धोकर सफ़र की थकान दूर कर रहे थे । इस बार मेरा हाथ कुछ ज़्यादा ही तंग हो गया । बड़े बेटे का जूता मुंह बा चुका है । वह स्कूल जाने के वक़्त रोज़ भुनभुनाता है । पत्नी के इलाज के लिए पूरी दवाइयां नहीं ख़रीदी जा सकीं । बाबूजी को भी अभी आना था । घर में बोझिल चुप्पी पसरी हुई थी । खाना खा चुकने पर पिताजी ने मुझे पास बैठने का इशारा किया । मैं शंकित था कि कोई आर्थिक समस्या लेकर आये होंगे । पिताजी कुर्सी पर उकड़ू बैठ गये । एकदम बेफ़िक्र, सुनो! कहकर उन्होंने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा । मैं सांस रोककर उनके मुंह की ओर देखने लगा । रोम-रोम कान बनकर अगला वाक्य सुनने के लिए चौकन्ना था । वे बोले ''खेती के काम में घड़ी भर की फुर्सत नहीं मिलती है । इस वक़्त काम का ज़ोर है । रात की गाड़ी से ही वापस जाऊंगा । तीन महीने से तुम्हारी कोई चिट्ठी नहीं मिली । जब तुम परेशान होते हो तभी ऐसा करते हो ।''

उन्होंने जेब से सौ-सौ के दस नोट निकालकर मेरी तरफ़ बढ़ा दिया-'रख लो । तुम्हारे काम आ जाएंगे । इस बार धान की फ़सल अच्छी हो गयी है । घर में कोई दिक़्क़त नहीं है । तुम बहुत कमज़ोर लग रहे हो । ढंग से खाया-पिया करो । बहू का ध्यान भी रखो । मैं कुछ नहीं बोल पाया । शब्द जैसे मेरे हलक में फंस कर रह गये हों । पिताजी ने नोट मेरी हथेली पर रख दिये । वर्षों पहले पिताजी मुझे स्कूल भेजने के लिए इसी तरह हथेली पर इकन्नी टिका दिया करते थे ।

रामस्वरूप झैवर

9-10 शास्त्रीनगर-विस्तार, भीलवाड़ा

For Information On
City Shops, RoaosQ, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

अब्दुर्रशीद अहमदी

❖ इक़बाल अंसारी

''बड़े साहब, मार-पीट मत करो...कहीं एक आध हाथ ज़ोर का पड़ गया तो मैं हर जाऊंगा । मेरी सेहत तो देख ही रहे हो, आपको फालतू में हत्या लगेगी...चलो उसकी तो कोई बात नहीं...आप लोगों को तो लगती ही रहती है...पर मेरी हत्या को स्वाभाविक मौत सिद्ध करने का जोखिम तो उठाना ही पड़ेगा । है कि नहीं ?''

दुबले-पतले शरीर, पीले चेहरे पर कई महीने की गन्दगी और बिखरी दाढ़ी वाले दमामीड़ित से व्यक्ति ने लंबे-चौड़े और मज़बूत हाथ-पैड़ों वाले पुलिस इंसपेक्टर रणछोड़ पटेल से कहा।

रणछोड़ पटेल के हाथ में उठा हुआ डंडा हवा में ही रुक गया...फि धीरे-धीरे नीचे आ गया । उसके चेहरे पर कठोरता भी थी और बड़ी-बड़ी काली आंखों में गालियां और धमकियां देता हुआ विशेष पुलिसिया आतंक भी । उसके मोटे-मोटे होंठ भिंचे हुए थे ।

पुलिस वालों के मन में कभी-कभी समझदारी की बात भी आ जाती है, उस समय रणछोड़ पटेल के मन में भी आ गयी । ''सचमुच अगर इस मच्छर की औलाद को एक तगड़ा हाथ भी लग गया तो इसका क्रिया कर्म हो जाएगा, फिर लाश ठिकाने लगाते फिरो...।''

उसने दिल ही दिल में खुद को बताया । अपने सामने खड़े व्यक्ति पर एक गहरी नज़र डाली, जिसके शरीर पर एक गंदा-सा फटा-पुराना कुर्ता था और उतना ही गन्दा और फटा-पुराना छोटी मुहरी का पजामा । उम्र कोई 45 वर्ष रही होगी, वज़न भी 45-46 किलो से ज़्यादा नहीं रहा होगा और क़द कोई साढ़े पांच फुट का होगा ।

''क्या कहा तूने ?'' इंसपेक्टर ने उसकी मरी-मरी आंखों में घूंड़ते हुए कहा । उसका स्वर बहुत कठोर था । ''मैंने कहा साहब मारपीट काहे को करते हो । अपनी पुलिस बस मार-पीट करती चली जाती है और जब कुछ उलटा-सीध ा हो जाता है तो लीपा-पोती करनी पड़ती है...लाश ठिकाने लगानी पड़ती है । चलिए वह भी हो जाता है, मगर जोखिम तो उठाना ही पड़ता है पुलिस को...है कि नहीं ? आप काहे को लफड़े में पड़ते हो, मैं कोई इन्कार थोड़े ही कर रहा हूं. ..मैं तो खुद ही कह रहा हूं कि मैंने शादी लाल हलवाई को कुर्सी उठाकर मारी और उसके सामने रखी मिठाइयों में से दस जलेबियां और तीन लड्डू खा गया । आप तो बड़े साहब मुझे अदालत में पेश कर दो । अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि यही बयान हुज़ूर जज साहब के सामने भी दे दूंगा, झूठ नहीं बोलूंगा और न बयान बदलूंगा, ईमान से ।'' उस व्यक्ति ने बड़ी ईमानदारी से कहा ।

''क्या नाम है तेरा ?'' इंसपेक्टर रणछोड़ पटेल ने पूछा, उसका स्वर अब भी कठोर था, मगर ऐसा लगता था कि मार-पीट का इरादा ढीला पड़ गया हो, वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया ।

''अब्दुर्रशीद अहमदी'' ''तूने हलवाई शादी लाल को कुर्सी क्यों मारी ?'' उसके स्वर में अनायास ही नर्मी आ गयी थी ।

''कुछ न कुछ तो मारना ही था बड़े साहब'' अब्दुर्रशीद अहमदी ने ढीले-ढीले स्वर में कहा, ''कुर्सी पड़ी थी, वही उठाकर मार दी ।''

''क्या दुश्मनी थी तेरी शादी लाल से ?'' इंसपेक्टर ने उसकी मैली-कुचैली आंखों में देखते हुए पूछा । ''कोई दुश्मनी नहीं थी'', अब्दुर्रशीद अहमदी इस तरह बोला जैसे उससे कोई बेतुका सवाल किया गया हो ।'' ''मेरी उससे क्या दुश्मनी, मैं तो उसे जानता तक नहीं ।''

''फिर तूने उसे क्यों मारा ?'' इंसपेक्टर की आवाज़ में आश्चर्य भी था और जिज्ञासा भी ।

''साहब किसी न किसी को तो मारना ही था है कि नहीं ? मतलब कुछ न कुछ तो ऐसा करना ही था कि थाने लाया जाऊं, फिर अदालत में पेश किया जाऊं, फिर सज़ा

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

قادری قبض روجن ®

گیسٹک کے درد میں؟



بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

زعفرانی تیل ®

گھٹیا کے درد میں؟



کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشٹک چورن ®



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی ®

شوگر کی کامیاب دوا



شوگر کو جڑ سے اکھاڑ پھینکتا ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

زعفرانی مالٹ

ہر عضو کی کمزوری کے لئے



ضعف باہ کو دور کرنے کے ساتھ ساتھ دماغی کمزوری کو بھی دور کرتا ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک صبح و شام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

کیسر فورٹ

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے



مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سونے وقت دودھ کے ہمراہ

Qadri Dawakhana ™

B 18 Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol 27
(Off S 152, S A Laroshpur Road, Opp Ranji Road) Kolkata - 700 019
Ph No 2469-3173-2499-1537 (R) 9830199615 / 9674013163
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana@yahoo.co.in

STOCKIST

Qadimi Dawakhana
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

M/s. Shifa Clinic
A 280 Main Masjid Road
P.O. Chaurahgaon Sahibabad
Ghaziabad Ph 0120-2670280

सुना दी जाए और जेल भेद दिया जाऊं ।'' अब्दुर्रशीद अहमदी समझाते हुए बोला । ''तो तूने केवल जेल जाने के लिए यह सब कयिा ?'' इंसपेक्टर की आंखें आश्चर्य से फैल गयीं ।

''और क्या बड़े साहब'' अब्दुर्रशीद अहमदी जवाब दिया । ''जेल जाने के लिए कुछ न कुछ अपराध तो करना ही पड़ता है, है कि नहीं ? अब मेरे वश में इससे अधिक कुछ करना तो था नहीं...इतना ही कर सकंता था, सो कर दिया ।''

इंसपेक्टर चुपचाप उसे देखता रहा । कमरे में मौजूद दोनों कांस्टेबल भी उसे चुपचाप देखते रहे, जो उसे शादी लाल हलवाई की दुकान से पकड़ कर लाये थे ।

फिर इंसपेक्टर ने नर्म आवाज़ में पूछा, ''तू जेल जाना क्यों चाहत है ?''

अब्दुर्रशीद ने एक लंबी सांस ली और बोला, ''जेल में रोटी मिलती है...काम तो करना पड़ता है, मगर रोटी मिलती है...पहनने को कपड़े भी मिलते हैं, एक छत भी मिलती है...है कि नहीं ?''

इंसपेक्टर फिर कुछ देर उसे देखता रहा, फिर पूछा, ''तू रहता कहां है ?''

''कभी बस अड्डे पर, कभी रेलवे स्टेशन पर, कभी किसी पार्क में, कभी किसी फुटपाथ पर...जहां रात हो जाए और जहां से पुलिस दोचार गालियां देकर भगा न दे अहमदी ने बड़े भोलेपन से बताया ।

''घर ?'' इंसपेक्टर ने पूछा–''कभी था'', अब्दुर्रशीद का स्वर फिर सपाट था । दंगे में बाबूपुरा के सारे घर जला दिये गये थे, उनमें मेरा घर भी था, अब उस पूरे इलाक़े पर दुर्गादादा का क़ब्ज़ा है ।''

''कोई रिश्तेदार ?'' इंसपेक्टर ने पूछा ।

''मां-बाप थे, पत्नी भी, दो बच्चे थे । हमले में सब मार दिये गये । मैं उस समय न घर पर था, न गांव में, होता भी तो क्या कर लेता, सिवाय इसके कि मार दिया जाता, राजकोट गया हुआ था, इसलिए बच गया ।

इंसपेक्टर ने लंबी सांस ली और बोला, ''जा भाग जा...जाकर कुछ काम-वाम कर ।''

''नहीं मिलता बड़े साहब ।''

अब्दुर्रशीद अहमदी ने सर को निराशा से हिलाया, ''शक्ल देखकर लोग वैसे ही भगा देते हैं, नाम सुनकर भगाने से पहले गालियां भी देते हैं । जेल भिजवा दो न साहब, इतनी मेहनत से तो शादी लाल हलवाई को कुर्सी मारी है...इस अपराध में नहीं भिजवाते तो और कोई चार्ज लगा दो...अरे कुछ नहीं तो आतंकवादी बनाकर ही अदालत में पेश कर दो, मैं तो मुसलमान भी हूं । चार्जशीट में लिख देना कि आई॰एस॰आई॰ या अलक़ायदा से संपर्क है, मैं अदालत में स्वीकार कर लूंगा...बल्कि ऐसा ही करो बड़े साहब, यही ठीक रहेगा और सबसे आसान भी ।

आपका नाम हो जाएगा और मुझे लंबी सज़ा मिल जाएगी । बची हुई ज़िन्दगी जेल में कट जाएगी । रोटी कपड़ा और छत की चिंता से भी बचा रहूंगा और इस महानगर में मिलने वाली नफ़रत और अपमान से भी, जिन्हें मेरा नाम अब्दुर्रशीद अहमदी हवा देता रहता है ।

वह प्रतिमान बनाएगा

दिन-पर-दिन यह मौसम और सतायेगा
कल जाने कैसा गुल और खिलायेगा

मन-मिज़ाज मौसम का है बेहद गड़बड़
बेचैनी की तासीर और बढ़ायेगा

पेड़ विहीन धरती पर झुलसाने का
सूरज अपना तेजस और दिखायेगा

पेड़-पौधा ही एक मात्र साधन है जो
प्राणवायु देकर सबकी जान बचायेगा

भीड़ बहुत बढ़ गयी शहरों की सड़कों पर
वाहन भी शोर अधिक और मचायेगा

वाहनों में जलता ईंधन दिन-पर-दिन
धूल-धुआं का बादल और बनायेगा

अब तो प्रदूषण भी ज़हर फैलाकर
बेहोशी का असर और दिखायेगा

पौधारोपण के अभियान को 'मेहता'
चलते देना वह प्रतिमान बनायेगा ।

डॉ॰ मेहता नागेन्द्र सिंह
(कंकड़बाग़, पटना)

यायावार शब्दशिल्पी

मार्क ट्वेन

दुनिया में बहुत कम ऐसे लेखक होंगे जिनके जीवन में इतने अलग-अलग अनुभव होंगे जितने मार्क ट्वेन के थे। मार्क ट्वेन की यायावरी ज़िन्दगी हमारे राहुल सांकृत्यायन जैसी थी। वह एक ज़माने में पानी के जहाज़ में कोयला झोंकने वाले मज़दूर बने तो कभी जहाज़ के कप्तान भी।

मार्क ट्वेन अख़बार नवीस और प्रभावशाली वक्ता भी थे। उनका वास्तविक नाम था सैमुएल लांगहॉर्न क्लीमेंस। वे अपने वक़्त के जादुई वक्ता थे। जब चार साल के थे, उनका परिवार मिसीसिपी के पश्चिमी तट पर हैनीबल चला आया था। यहां दुस्साहसी नाविकों, व्यसनियों, जुआरियों, शोहदों, मवालियों और नदी, पहाड़, जंगल की सोहबत में उनका बचपन बीता। 3 फ़रवरी 1863 को वह मार्क ट्वेन हो गये, जब उन्होंने अपने यात्रा वृत्तांत के नीचे यह छद्म नाम लिखा। ट्वेन में पाठकों को हंसाने-गुदगुदाने की अद्भुत क्षमता थी। उनका शब्द चयन, वर्तनी और वाक्य विन्यास औरों से अलग था, बेजोड़ बेढब और हास्यरस से भरा। अपने ख़तों और किताबों से उन्होंने अपार शोहरत व दौलत कमायी। अमेरिका-इंग्लैंड समेत सारी दुनिया में उन्होंने अपने भाषणों से धूम मचा दी। ऐसा भी वक़्त आया, जब ट्वेन दिवालिया हो गये, लेकिन उन्होंने पुनः धन अर्जित किया और पाई-पाई चुका दी। युवा पुत्री और फिर पत्नी की मृत्यु ने उन्हें तन्हा, दुखी व अवसादग्रस्त बना दिया।

मार्क ट्वेन की सर्वश्रेष्ठ कृति थी–'द एडवेंचर्स ऑफ़ टाम सायेर'। इस कृति ने मार्क ट्वेन को लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा दिया। इसमें सन 1830 के दशक के माहौल का नास्टेल्जिक चित्रण है। लच्छेदार चटपटी भाषा में वर्णित घटनाक्रम टाम सायेर के इर्द-गिर्द घूमता है, जो खिलंदड़, शरारती, लापरवाह, लेकिन नेकनीयत बालक है।

महत्वपूर्ण कथन

- ज़िन्दगी सबसे बड़ी पाठशाला है जहां डिग्री भले न मिले शऊर ज़रूर मिलता है।
- बच्चे साहस की प्रतिमूर्ति होते हैं।
- हर कोई दिल से साहित्यकार होता है भले हर कोई साहित्य न रचे।

जीवाणु होंगे पनडुब्बियों के ड्राइवर

अब जीवाणुओं से मिलने वाली ऊर्जा का उपयोग मानवरहित पनडुब्बियों को चलाने के लिए भी किया जा सकेगा। अमेरिका में कुछ समय पहले हुए एक शोध के बाद इस बात की संभावना काफ़ी गयी है। यह शोध यूनीवर्सिटी ऑफ़ मैसाच्यूएट्स के सूक्ष्म जीव विज्ञानियों ने किया है। सुनने में भले ही यह बात बड़ी विचित्र और आश्चर्यजनक लगे पर शोधकर्ताओं के अनुसार समुद्रतल की मिट्टी में मौजूद कार्बनिक पदार्थों को कुछ जीवाणु विद्युत ऊर्जा में बदलने में सक्षम होते हैं।

शोधकर्ताओं का कहना है कि समुद्र में पायी जाने वाली मिट्टी में रहने वाले जीवाणु इसमें उपस्थित कार्बनिक पदार्थ खाकर इलेक्ट्रॉन उत्सर्जित करते हैं और इन इलेक्ट्रॉन के चालन के कारण ही विद्युत धारा प्रवाहित होती है। मैसाच्यूएट्स यूनीवर्सिटी के शोधकर्ताओं का कहना है कि 'जियोबैक्टरेस' नामक जीवाणु मिट्टी में मौजूद पदार्थों को ऑक्सीडाइज करके ऊर्जा प्राप्त करते हैं और ऐसा करके वे काफ़ी मात्रा में इलेक्ट्रॉन उत्सर्जित करते हैं तथा इसे ही विद्युत धारा के रूप में मापा जा सकता है।

शोधकर्ताओं ने इस विद्युत धारा को मापने के लिए बोस्टन हार्बर की मिट्टी और ताज़े पानी का उपयोग किया और इसे बैट्री का रूप देने के लिए इसमें ग्रेफाइट से बने इलेक्ट्रोड डाले और उसके बाद वे इसकी मदद से बिजली का बल्ब तथा एक साधारण कंप्यूटर चलाने में सफल हुए। शोधकर्ताओं के अनुसार जिस इलेक्ट्रोड का उपयोग 'एनोड' की तरह किया गया था, उसके पास कई जीवाणु पाये गये थे।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित।
फोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ : दादपुर, ज़िला : हज़ारीबाग़ (झारखंड)

नामांकण सूचना–एल॰ के॰ जी॰ से कक्षा नवम् तक





इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की ।

उपलब्ध सहुलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद ।

नामांकण फार्म मिलने की अंतिम तिथि–15 मार्च 2015

एस॰ एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम॰ए॰, बी॰एड॰ (अलीग॰)	फ़ाज़िल नदवा, लखनऊ	एम॰एस॰सी॰, बी॰एड
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें–

मोबाइल : 09431530878 / 7739748279

वेबसाइट : munammission.org , ई-मेल : hmpt.mission@gmail.com

Posted on 20-21 May 2015
June 2015
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.05.2015
Total Pages-52 (With Covers)

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

Dr. Mrs. Naheed F Khan

MBBS, DGO, MS (Obs & Gyn)
Mb. : 9830031647
E-mail : drnfkhan@yahoo.co.in
drnfkhan22@gmail.com

RESIDENCE

52B, Shakespeare Sarani
Sukh Sadan, Flat 7-D
Kolkata - 700 017
Ph. : 2830333

C H A M B E R S

B. N. CLINIC
84/5, Ripon Street
Kolkata - 700016
Ph. : 22296057, 22296096
Tue, Fri, Sat : 4 pm - 8 pm
Thu : 11 am - 1 pm

BHAGIRATHI NEOTIA WOMAN & CHILD CARE CENTRE
2, Rawdon Street, Kolkata - 700017
Ph. : 4040510, 40405100
Mon : 8 am - 10 am
Wed : 7 pm - 9 pm

FORTIS MEDICAL CENTRE
2/7, Sarat Bose Road
Kolkata - 700020
Ph. : 24754320, 24754096
Tue : 11 am - 1 pm
Thu : 8 am - 10 am

DILKUSHA NURSING HOME
94 A, Dilkusha Street
Kolkata - 700017
Ph. : 22803639, 22874318
Wed : 11 am - 1 pm